क़यामत और आख़िरत

हकीकत किताबेवी

क़यामत

और

आख़िरत

इमाम ग़ज़ाली के ज़रिए

तीसरा ऐडिशन

हकीकत किताबेवी

दारूश्शफ़ेका जद. **53** ए.पी.के ः **35 34083**
फोनः **90.212.523 4556 - 532 5843** फैक्सः **90.212.523 3693**

फातिह इस्तानबलु/ तुर्की
http:/www.hakikatkitabevi.com
e-mail: info@hakikatkitabevi.com
जनवरी- **2015**

फेहरिस्त

नोटः इस किताब में दिए गए मसलों की वज़ाहत सआदते अबदिया किताब में तफसीर से मौजूद है।जोकि असल तुर्की ज़ुवान में है उसका अंग्रेज़ी तर्जुमा Endless bliss के अलग अलग वोलियुम में दिया गया है।

हुसैन हिल्मी इशिक रहमतुल्लाहि अलैह

हुसैन हिल्मी इशिक, रहमतुल्लाहि अलैहि, हकीकत किताबेवी की इशाअत के नाशिर हैं, ये अय्युब सुल्तान, इस्तानबुल में **1326** (ए.डी. **1911**) में पैदा हुए।इनकी **140** इशाअत करदा किताबों में से, **60** अरबी में, **25** फारसी में, **14** तुर्की में और बाकी किताबें फ्रेन्च, जर्मन, अंग्रेज़ी, रूसी और दूसरी

ज़ुबानों में हैं। हुसैन हिल्मी इशिक, रहमतुल्लाहि अलैह (सय्यद अब्दुल हाकिम अरावासी रहमतुल्लाहि अलैह के ज़रिए सिखाए गए, इस्लाम के एक अच्छे आलिम और तसव्वुफ़ के फ़ज़ाईल के बेहतर और मुरीदों को पक्के तरीके से राह दिखाने के काबिल, महिमा और अक्लमंदी के हाकिम) इस्लाम के महान आलिम ख़ुशियों की राह दिखाने वाले, **25** अक्तूबर, **2001** (**8** शाबान **1422**) और **26** अक्तूबर **2001** (**9** शाबान **1422**) के बीच रात में वफ़ात पा गए। इन्हें अय्युब सुल्तान में दफ़नाया गया, जहाँ ये पैदा हुए थे।

तआरूफ़

अल्लाह तआला अपनी रहमत ज़मीन पर रहने वाले सभी लोगों पे करता है और उनको फाएदेमंद चीज़ें तख़लिक कर भेजता है। उसने ही पूरी इंसानियत को ये सिखाया है के किस तरह वो दुनिया में और आख़िरत में अपनी ज़िंदगी सुकून और अमन से गुज़ार सकते हैं। आख़िरत में वो जिसे चाहेगा माफ़ करेगा चाहे वो लोग दोज़ख में जाने वाले क्यों न हों वो शानदार तरीके से उन्हें माफ़ कर देगा और जन्नत में डाल देगा। वही, अकेला हर चीज़ को बनाने वाला है, उसी ने सब इंसानों को बनाया हर लम्हा अपना वजूद बरकरार रखा, और सबकी डर और खौफ़ से हिफ़ाज़त करता है। अल्लाह के पाक नाम के साथ, हम इस किताब को लिख रहे हैं।

हम्द (तारीफ़ और मेहरबानी) हो अल्लाह तआला पर! उसका बेशुमार शुक्रिया जो रहमतें और करम उसने हम पर निछावर कीं! अगर कोई शख़्स किसी दूसरे शख़्स को किसी भी जगह पर, किसी भी वक्त, किसी भी तरीके से, किसी भी वजह से **हम्द** देता है, तो सारी हम्द और **मेहरबानिया** अल्लाह तआला को पहुँचती हैं। क्योंकि, वो अकेला, बनाने वाला है, सबको सिखाता है और इंतेज़ाम चलाता है, और सारे किस्म की अच्छाइयाँ बनाता है। वो, वाहिद सारी ताकत और लियाकत का मालिक है। अगर वो याद न कराए, तो कोई भी इस काबिल नहीं के वो कोई भी अच्छा या बुरा कुछ भी कर सके या इच्छा रख सके। एक गुलाम के कुछ हासिल करने के बाद, कोई भी एक अच्छाई का ज़र्रा

तक नहीं कर सकता या किसी दूसरे शख़्स को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता, जब तक के वो न चाहे, और उसे ताकत और मौका दे ऐसा करने का।

उसके सारे नबियों 'अलैहिम-उस-सलवात-उ-व-तसलीमात, खासतौर से मुहम्मद मुसतफ़ा 'अलैहि व अलैहिम-उस-सलवात-उ-व-तसलीमात जो सबसे ऊँचे हैं, सब पर सलाम और बरकत हो! उस अज़ीम नबी 'सरकारे दो आलम 'सल्लल्लाहु तआला अलैहि व-सलाम' के पाक अहल-ए-बैत, और आपके हर एक सहाबा रज़ी अल्लाहु तआला अनहुम अजमईन पर सलात व सालम हो, जिन्हें आपका खुबसूरत चेहरा देखने का शर्फ़ हासिल हुआ, रूहों के लिए एक ईलाज की तरह, और जिन्होने आपके फ़ाएदेमंद अलफ़ाज़ सुने, और जो इसलिए सब लोगों से अज़ीम हैं!

एक मुसलमान होने के लिए, ये ज़रूरी है के कलमा पढ़े जो इस तरह पढ़ा जाता है, "**ला इला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह**", और जिसे **कलिमा-ए तौहीद** कहते हैं, इसके मआनी को मुख़तसर जानना और इस पर ईमान रखना। इसके मआनी जानने का मतलब है छः चीज़ों को जानना। उन छः चीज़ों को **ईमान के अहम** रूकन (ईमान की बुनियादें) कहा जाता है।

उन छः अकीदों में से पाँचवा आखिरत में ज़िन्दगी पर ईमान है। आला इस्लामी आलिम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैह, जो **450** हिजरी साल में पैदा हुए और **505** [1111 ए.डी.] में वफ़ात पाए, उन्होने एक किताब लिखी थी जिसका नाम **दुर्र-त-उल-फाखिरा फी-कशफ़-ए-उलूम-इल-आखिरा** है और आखिरत के बारे में जानकारी देने के लिए अलग से मनसूब किया। उन्होने उस किताब का हवाला **कशफ़-उज़ जुनून** में भी दिया? ओमर (उमर) बैग़, अरबी ज़बान के Military Junion High School (रूशादिया) कसतामोनि, (तुर्की) में एक उस्ताद, जिन्होने उस कीमती किताब को अरबी से तुर्की में तर्जुमा किया और इसका नाम **कुरआन ए करीमदे कयामत व आखिरत हल्लारे** कुरआन अल करीम में कयामत और आखिरत के बारे में हकाईक); रखा। तुर्की तर्जुमा **13** नवंबर **1911**, में कसतामोनि में छपा, जो ज़ुल-कदा **5**, **1329** हिजरी के साथ मुताबकत थी। ये अब हमारे किताबघर (यानी हकीकत

किताबेवी इस्तानबुल, तुर्की) के नसीब में आ गई, के इस कीमती किताब को एक बार फिर छपवाएँ। बाद में जो वज़ाहतें दूसरी कीमती किताबों से ली गई हैं उन्हें दाएरे में लिखा गया है। अल्लाह तआला का बेहद शुक्रिया के उसने इस्लाम में हमारे भाइयों की खिदमत करने का मौका हमें बख़्शा! अल्लाह तआला हम पर अहले-सुन्नत के ज़रिए बताए गए सही तालीमात की रहमत करे और हमें सिखाई गई हकीकत पर ईमान रखें, इस तरह हमारे प्यारे नबी मुहम्मद अलैह-सलाम के ज़रिए बताए गए अहकामात और मुमानियतों पर चलते हुए हम अच्छे लोग बन सकते हैं! एक अच्छा इंसान/शख़्स सबके लिए अच्छा होता है। वो किसी की जाएदाद, ज़िन्दगी पाकदामनी, या इज़्ज़त पर हमला नहीं करता। वो रियासत के खिलाफ़ बग़ावत नहीं करता या कानून की खिलाफ़ वरज़ी नहीं करता। हमारे नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने फरमायाः "**इस्लाम तलवारों के साए में पनपता है।**" इसका मतलब हैः "ये रियासत और उसके कानून के इंतेज़ामिया और हिफ़ाज़त में है के लोग एक खुशहाल ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं और अपने इबादत के काम अमन के साथ अदा कर रहे हैं।" जितनी ज़्यादा ताकतवर रियास्त होगी उतनी ज़्यादा ये सुकून और अमन मुहय्या करेगा। इस मामले के लिए, मुसलमानों को चाहिए के रियास्त का साथ दें, वक्त पर टैक्स अदा करें, और दूसरों को भी ऐसा करने की तलकीन नरम ज़बान और मुसकराते हुए चेहरे के साथ कहें। अल्लाह हमें झूठ, चालबाज़ियों और दुश्मनों के इलज़ामों से बचाए और अपने खुद के मज़हब और रियास्त से धोखा करने से बचाए! आमीन।

आज दुनियाभर के मुसलमान तीन (बड़े) ग्रुप में बंट गए हैंः पहले ग्रुप में सच्चे मुसलमान हैं, असहाब-ए-किराम (यानी सहाबा) के मानने वाले। उनको **अहले सुन्नत**, या **सुन्नी मुसलमान**, या **फिरका-ए नाजिया** कहते हैं, ये ग्रुप दोज़ख से महफ़ूज़ है। दूसरा ग्रुप असहाब-ए किराम के दुश्मनों का है इसको **शिईस** (शिया), या **फिरका-ए-ज़हाल** कहते हैं। तीसरा ग्रुप सुन्नी मुसलमानों और शियाओं दोनो की मुखालफ़त में है जिसे **वहाबी** या **नजदी** कहा जाता है, अरबी शहर नजद से आए हैं, जो इन बिदअती की जन्म स्थान है। इस ग्रुप को **फिरका-ए-मलऊन** (लानती ग्रुप) भी कहा जाता है और जिसे मुसलमान असनाम परस्त भी कहा जाता है। जैसे की हमारी किताबों **कयामत और आखिरत** (यानी

मौजुदा किताब) और **सआदत-ए अबदिया**, (यानी **Endless Bliss** के छः हिस्सों का तुर्की तर्जुमा) में लिखा है कोई भी शख़्स जो एक मुसलमान को काफ़िर कहता है वो हमारे नबी के ज़रिए पहले ही लानत भेजा गया है, मुसलमानों मे दुखद तीन गुटो की हालत यहूदियों और अंग्रेज़ों की साजिशों की वजह से है।

लोग जो अपने नफस की तकलीद करते हैं और दिलों में बुराई रखते हैं वो चाहे किसी भी ग्रुप के हों, दोज़ख में जाएँगे। नफ़स के तज़किए के लिए, यानी नफ़स में जो बुराई घुसी हुई है उससे साफ़ करने के लिए, जैसे के कुफ़्र (बेयकीनी) और गुनाहों से प्यार तो हर ईमान वाले को चाहिए के हर वक्त, "**ला इल्लाह इल्लल्लाह**," कहे और दिल के तसफ़िए के लिए। यानी दिल को कुफ़्र और गुनाहों की गंदगी से बचाने के लिए जो नफस से आती है, शैतान से, बुराई की संगत से, और नुकसानदह और पामाल किताबों से, तो उन्हें लगातार, "**असतग़फिरूल्लाह**" कहते रहना चाहिए। अगर एक शख़्स अहकाम-ए-इसलामिया, (यानी अल्लाह तआला के अहकामात और मुमानियतें, यानी इस्लाम की ज़रूरयात और कानून) उसको यकीन हो जाता है के उसकी दुआएँ कुबूल की जाएँगी। रोज़ाना की पाँच वक्त की नमाज़ें अदा न करना, उन औरतों को देखना जो अपने आपको पूरी तरह ढकी न हों, और जो चीज़ें हराम है उनको खाना पीना, ये सब अहकाम-ए इस्लामिया को न मानने की निशानियाँ हैं। ऐसे लोगों की दुआएँ कुबूल नहीं की जातीं।

मीलादी	हिजरी शम्सी	हिजरी कमरी
2001	**1380**	**1422**

(अंग्रेज़ी तर्जुमाः	**हिजरी शम्सी**	**हिजरी कमरी)**
2010	**1387**	**1431**

एक खास नोटः ईसाई मिश्नरी ईसाइयत को फैलाने की कोशिश कर रहे हैं, यहूदी तलमूद को फैलाने की कोशिश कर रहे हैं, और हकीकत किताबेवी (किताबघर) इस्तानबुल, तुर्की, इस्लाम को आम करने में लगा हुआ है, जबकि मिश्नरी मज़हबों को पामाल करने की कोशिश में लगे हैं। एक शख़्स सबब, अक्ल, और एक पाक ज़मीर के साथ देख लेता है और समझ जाता है के इन चारों रास्तों में से कौनसा अकलमंदी वाला है जिसे ज़िन्दगी का सच्चा तरीका समझा जाए। वो इसको फैलाने में मदद करेगा और सारे लोगों को दुनिया में और आखिरत में खुशियाँ हासिल कराने में हिस्सेदार बनेगा। इंसानियत के लिए इससे ज़्यादा कीमती और या इससे ज़्यादा फाएदेमंद खिदमत और कोई नहीं हो सकती। आसमानी किताबें तोरह और बाएबल/इंजील जो आज ईसाइयों और यहूदियों के पास है वो इंसानी मखलूक ने लिखी है, ये हकीकत है जिसे खुद उसने अपने मज़हबी आदमियों ने कुबूल किया है। कुरआन अल-करीम के लिए; ये उतनी ही असली और बग़ैर तबदीली के है जैसे के जब ये अल्लाह तआला के ज़रिए उतारा गया था। सारे ईसाई पादरियों और यहूदी पीरों को चाहिए के बहुत गौर और बग़ैर घमंड के हकीकत किताबेवी के ज़रिए छापी गई किताबों को पढ़े, और जो वो कह रही है उन्हें अच्छी तरह समझने की कोशिश करें।

कयामत और आख़िरत

हमद (तारीफ़ और मेहरबानी) हो अल्लाह तआला पर, जिसने ये **ऐलान** किया के उसकी ज़ात (शख़्सियत) अबदी है। उसने बताया के उसके अलावा सारी मखलूक ग़ैर दाएमी है। वो काफ़िरों और गुनहगारों को कब्र में अज़ाब से सज़ा देगा। उसने अपने नबियों के ज़रिए अपने अहकामात और मुमानियतों वाज़ह करवाई ताकि उसके बंदे दुनिया और आखिरत में खुशियाँ हासिल कर सकें। वो अपने बंदों को आखिरत में अज़ाब के हवाले करेगा या ईमान से नवाज़ेगा ये उस बरताव पर मुनहसिर करता है जो उसने इस दुनिया में थोड़े दिन बिताने के दौरान किया। उसने अपने उन बंदों के लिए इसे आसान

किया जिन्हें उसने चुना और प्यार किया जिन्होने आखिरत पर जाने वाला रास्ता चुना और इस तरह उसकी रहमत से नवाज़े जाएँगे।

अल्लाह तआला हमारी दुआएँ और सलात ओ सलाम अपने सबसे प्यारे नबी, मुहम्मद अलैहि-सलाम, और आपकी आल (कुंबा, नसल) और असहाब (साथियों) जिनके नाम उसने मुसलमानों के बीच में अज़ीम इज़्ज़त से नवाज़े हैं उन पर निछावर करे।

तुम्हें पता है के अल्लाह तआला, वाहिद ताकत है जो सबको ज़िन्दगी देता है और सबकी जान बाहर लेता है, उसने फरमाया, जिसका मतलब सूरह अल-इमरान की **185**वीं आयत-ए-करीमा और सूरह अल-अंनबिया की **35**वीं आयत-ए करीमा और सूरह अल-अंकबूत की **57**वीं आयत-ए-करीमा में ये है, जिसे इस तरह पढ़ा जाएगाः "**हर नफस को मौत का मज़ा चखना होगाः...**" इसलिए उसने आलम (सारी मखलूक) के हिस्से पर तीन मौतों की निशानदही कीं है।कोई भी जो दुनिया के आलम में लाया जाएगा वो बेशक मरेगा।जो आलम ए जबरूत और फरिश्तों में आएगा वो भी मरेगा।उनमें से, जो आलम-ए दुनिया में लाए जाएंगे वो आदम (इंसानी मखलूक) के बेटे है और जानवर जो ज़मीन, पानी और हवा में रहते है सब बेशक मरेंगे।

दूसरा आलम, यानी वो आलम [जो पोशिदा है (इंसानी नजर से) और] जिसे मलाकूती कहते, इस आलम में फरिश्तों और जिन्नों की रियास्तें शामिल है।

तीसरा आलम, यानी, वो जिसे जबरूत कहते हैं, वो मुर्करब फरिश्तों पर मुशतमिल है।दर हकीकत, कुरआन अल-करीम की सूरह हज की **75**वीं आयत-ए करीमा का मतलब हैः "**अल्लाह तआला ने नबी फरिश्तों और आदमियों में से चुने...**"

उनमें सबसे ऊँचे (मुर्करब फरिश्ते जिन्हें जबरूत कहते हैं (फरिश्ते) करूबियान, रूहानियत; हमाला-ए-अर्श; और सुरादिकात-ए-जलाल हैं।

सूरह अल-अंबिया की **19**वीं और **20**वीं आयत-ए-करीमाओं का मतलब हैः "**...यहाँ तक के वो (फरिश्ते) जो उसकी हाज़िरी में रहते हैं वो उसकी खिदमत करके भी ज़्यादा घमण्ड नही करते और न ही वो (कभी) (उसकी खिदमत) से थकते हैंः**" "**वो रात और दिन उसकी तसबीह पढ़ते हैं, और कभी मौकूफ़ नहीं करते।**" ऊपर बताई गई आयत-ए-करिमाओं में उन मुर्करब फरिश्तों से मुराद इन आयात-ए करिमाओं के ज़रिए अल्लाह तआला ने उनकी तारीफ़ की है।इतने ज़्यादा वो फरिश्ते ताज़ीम वाले हैं के उनका घर जन्नत के बाग़ात हैं।उनका ज़िक्र कुरआन-अल करीम में है और उनकी सिफ़ात वाज़ेह की गई हैं।वो जनाब-ए हक (अल्लाह तआला) के इतने करीब हैं, और जन्नत उनका घर है; फिर भी वो सब की तरह मरेंगे।उनकी अल्लाह तआला से नज़दीकी भी उन्हें मौत से नहीं रोक सकती।

मैं तुम्हें पहले दुनियावी मौत के बारे में बता दूँ।ध्यान से सुनो जो में तुम्हें बताने जा रहा हूँः अगर तुम अल्लाह तआला पर और नबी पर, कयामत पर, और आखिरत पर यकीन रखते हो, तो मैं तुम्हरे लिए वाज़ेह कर दूँ के किस तरह इंसानी मखलूक एक हालत से दूसरी हालत में बदलती है, और तुम्हें उन हालतों और तरज़ के बारे में आगाह करदूँ जो इस तरीक-ए-कार में वो बरदाश्त करते हैं।इसलिए, ये जानकारी सबूत और गवाह चाहती है, और अल्लाह तआला और कुरआन अल-करीम उस बात की गवाही रखते हैं जो मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ।कुरआन अल-करीम और सही हदीस-ए शरीफ़ मेरे बयानात की सच्चाई की परख हैं।[जब आदमी मर जाता है, उसकी **दुनियावी ज़िंदगी** खत्म हो जाती है।उसकी **आखिरत की ज़िंदगी** शुरू हो जाती है।आखिरत की ज़िंदगी तीन मकामों/दर्जो पर मुश्तमिल हैं।**कब्र में ज़िंदगी** योमुलहश्र तक जारी रहेगी।उसके बाद कयामत की ज़िंदगी (कयामत और जज़ा)।उसके बाद **जन्नत में और/या दोज़ख में ज़िंदगी** आती है।ये तीसरी ज़िंदगी दाएमी है।]

दुनिया में, अच्छी और फाएदेमंद चीज़ें बुराई और नुकसानदह चीज़ों के साथ मिली हुई हैं।हमेशा अच्छी और फाएदेमंद चीज़ें खुशियाँ, आराम और सुकून हासिल करने के लिए की जाती हैं।क्योंकि अल्लाह तआला बहुत ज़्यादा

रहमदिल है, उसने अच्छी चीज़ों को बुरी चीज़ों से फर्क करने के लिए एक ताकत तखलीक की है। इस ताकत को **अकल** (समझ, दिमाग़, सबब) कहते हैं। ये 'अकल, जब पाक और सेहतमंद होती है, तो अपना फर्ज़ बहुत अच्छी तरह अदा करती है और कभी गलत नहीं होती। नफस की इच्छा की तकलीद करने पर और गुनाह करने पर अकल और कलब (दिल) बीमार हो जाता है, इस तरह वो अच्छाई और बुराई के बीच नहीं देख पाते। अल्लाह तआला, अपनी रहमत के साथ, इस काम को खुद करता है, अपने नबियों को अच्छी चीज़ें सीखाकर और (अपने बंदो) उन्हें उन सब को करने का हुकूम देकर। नुकसानदायक चीज़ें भी सीखाता है, उनको करने की मुमानियत करता है। इन अहकामात और मुमानियतात को जोड़कर **दीन** (मज़हब) कहा जाता है। मुहम्मद अलैहि सलाम के ज़रिए सिखाया गया मज़हब **इस्लाम** कहलाता है। आज ज़मीन पर सिर्फ़ एक ही न बदला जाने वाला और पाक मज़हब इस्लाम है। आराम हासिल करने के लिए ज़रूरी है के अपने आपको इस्लाम में ढाला जाए, यानि कि एक मुसलमान बना जाए। एक मुसलमान बनने के लिए कोई रनादारी करने की ज़रूरत नहीं है जैसे के एक इमाम या एक मुफ़ती के पास जाना। करने की जो ज़रूरत है वो ये के सिर्फ़ पहले दिल से ईमान (यकीन) लाया जाए और फिर अहकामात और मुमानियत को सीखा जाए यानी पहले वाले पर अमल बाद वाले को नज़र अंदाज़ किया जाए।

मुनकर नकीर/सवालात करने वाले
फरिश्ते तेरी कब्र में आएंगे;

पूछेंगे "क्या तूने अपनी नमाज़ सही ढंग से
अदा की

कहेंगे "तो तूने ये सोच लिया बाद मरने के कोई परेशानी ना होगी?
यहाँ पर सख़्त अज़ाब तेरा मुंतज़िर है, "।

पहला सबक

जब अल्लाह तआला ने आदम अलैहि सलाम की तखलीक की', और जब उसने उनकी कमर पर मसह किया अपनी बेइंतेहा ताकत से, उसने उनसे दो मुट्ठी भर ले लिए, एक सीधे हाथ की तरफ़ से और एक उलटे हाथ की तरफ़ से। उसने हर आदमी का ज़र्रा एक दूसरे से अलग किया। आदम अलैहि सलाम ने उनकी तरफ़ देखा, और देखा के वो तिनको/ज़र्रो की तरह थे। सूरह वाकिया में एक आयत-ए-करीमा का मतलब हैः "**ये, जो सीधे हाथ की तरफ है, जन्नत के लोगों के लिए अमल करेंगे, इसलिए ये लोग जन्नत के लोग हैं। इनके अमल ना ही मुझे फायदा देंगे ना ही मुझे नुकसान देंगे। और वो, जो उलटे हाथ की तरफ हैं, वो दोज़ख के लोग हैं क्योंकि ये दोज़ख के लोगों के लिए काम पर अमल करेंगे। ना ही उनके अमल मेरे लिए फाएदेमंद हें ना ही नुकसान दह हैं।**"

आदम अलैहि-सलाम ने अल्लाह तआला से पूछाः "**या रब्बी** (ए मेरे रब, अल्लाह)! **दोज़ख के लोगों के ज़रिए कौन से काम अदा किए जाएंगे?**" अल्लाह तआला ने वाज़ेह कियाः "**मेरे साथ किसी एक साथी** (**या साथियों**) **को मंसूब करना और जो मैने नबी भेजे हैं उनसे इंकार करना और मेरी किताबों** (जो मैने अपने पैग़म्बरों पर नाज़िल कीं) **में मेरे अहकामात और मुमानिआत की नाफरमानी करके मेरे खिलाफ़ बग़ावत करना।**"

इस पर आदम अलैहि सलाम ने अल्लाह तआला से दुआ की और मिन्नत कीः "या रब! इन लोगों की गवाही इनके खुद के हवाले करदे। ये उम्मीद की जाती है के ये दोज़ख के लोगों के लिए काम नहीं करेंगे।" और अल्लाह तआला ने उनके अपने नफ़स को उनके लिए गवाह बना दिया और वाज़ेह कियाः "**क्या मैं तुम्हारा रब** (अल्लाह) **नहीं हूँ?**" (हाँ)। तुम हमारे रब हो। हम (इसके) गवाह हैं।" अल्लाह तआला ने फरिश्तों और आदम अलैहि सलाम की गवाहियाँ भी बनाई, और वो उसके रब होने की कसम खाते हैं। इस पाक हलफनामे के बाद उसने उन्हें उनकी पुरानी जगहों पर वापिस भेज दिया

(क्योंकि, ये सिर्फ़ रूहानी ज़िंदगी थी जो वो जी रहे थे। वो जिस्मानी ज़िंदगी नहीं थी। अल्लाह तआला ने उन्हें आदम अलैहि सलाम की कमर में डाला। उनकी रूहें लेने के बाद, उसने उन्हें अर्श के खज़ानों में से एक में रख दिया।

जब एक बाप का तुख्म माँ के अण्डे को ज़रखेज़ करता है और बच्चे को उसकी जिस्मानी शक्ल में पैदा करता है, तो अभी तक बच्चा बेजान होता है। मरे हुए जिस्म को सड़ने से एक फरिश्ते की महक के ज़रिए बचाया जाता है जो उसके अंदर डाली गई थी। जब अल्लाह तआला हुकूम देता है अर्श के खज़ानों में रखी जान कोख के अंदर मरे हुए बच्चे में डाल दो। उसके बाद बच्चा हरकत करना शुरू करता है। बहुत सारे बच्चे है जो अपनी माँ की कोख में हरकत करते हैं। कभी उसकी माँ उसे सुनती है और कभी नहीं भी। मीसाक यानी तय वकत के बाद जब मौत आती है अल्लाह तआला रूहों से पूछता हैः "**क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ,**" यानी अर्श के खजानों में से रूहों को भेजने वाला, पहली मौत होती है, और माँ की कोख में मौजूदा ज़िंदगी दूसरी ज़िंदगी होती है।

दूसरा सबक

उसके बाद अल्लाह तआला आदमी को उसकी उमर तक ज़िंदा रहने के लिए बनाता है। वो दुनिया में अपने मुकर्रर वक्त तक ज़िंदा रहता है और तब तक उसका रिज़क खत्म नहीं हो जाता जब तक और उसके काम जो पहले से पक्के थे वो खत्म नहीं हो जाते तब उसकी दुनियावी मौत करीब आती है, चार फरिश्ते उसके पास आते हैं। वो उसके जिस्म से उसकी रूह खींचते हैं, एक उसके सीधे पैर से खींचता है, दूसरा उसके उलटे पैर से, तीसरा उसके सीधे हाथ से, और चौथा उसके उलटे हाथ से खींचता है। ज़्यादातर हालतों में, वो अपनी रूह को गरगराहट वाली हालत में बदलने से पहले **मलकूत का आलम** (दूसरा आलम) देखना शुरू कर देता है। वो फरिश्तों और उनके कामों की अदंरूनी शकल को उनकी बिल्कुल उसी हालत में देखता है जैसे के वो अपने

आलम में होते हैं। अगर उसकी ज़बान बात करने के काबिल होती है, तो वो उनकी मौजूदगी के बारे में बताता है। दूसरी बहुत सी हालतों में, अगरचे, वो सोचता है के जो वाक्यात वो देख रहा है वो सब शैतान की चालबाज़ियाँ हैं, वो बेहकाता रहता है जब तक के वो बिल्कुल किसी बात के लायक न रहे। जैसे के वो इस हालत में होता है, तो फरिश्ते फिर उसकी ऊँगलियों और पंजो सिरों को दबाते हुए, उसकी रूह को खींचते हैं। इस मरहले पर उसकी साँस ऐसे गरगरा करती है जैसे के पानी की मश्क से पानी बाहर निकाला जा रहा हो। फाजिर की रूह इतनी सख़्त तरीके से निकाली जाती है जैसे के काँटे किसी गीली चीज़ पर फँस गए हो और उन्हें ज़बरदस्ती खींचा जा रहा हो, जो कि एक हकीकत है जिसे आलमियत के सबसे आला, हमारे पैग़म्बर 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने फरमाया। इस हालत में मरने वाले को लगता है जैसे के उसका पेट काँटों से भर गया हो। उसको ऐसा महसूस होता है के जैसे के उसकी रूह एक सूई के नाके से निकाली जा रही हो और जैसे के ज़मीन और आसमान दोनो एक दूसरे से खिलत मिलत हो रहे हों, उनके बीच में खुद वो फंसा हो।

हज़रत काब रज़ी अल्लाहु अनह से पूछा गया के मौत किस तरह महसूस की जाती है। उन्होने कहाः "मुझे ये ऐसी लगती हैः काँटों की एक शाख तुम्हारे अंदर रख दी गई हो। कोई मज़बूती से इसे ताकत से बाहर निकाल रहा हो। जो ये फाड़ सकती है वो फाड़ देती है, बाकी को वहाँ ग़म करने के लिए छोड़ जाती है।" सब नबियों के आका 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम' ने फरमायाः "**मौत की तकलीफों में एक वाहिद सख़्ती उस तकलीफ से ज़्यादा शदीद है जो तीन सौ तलवार के वारों से महसूस की जाती है।**"

मौत के वक्त आदमी का जिस्म पसीने से भर जाता है। उसकी आँखे एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ फिर जाती हैं। उसकी नाक दोनो तरफ़ से पीछे हट जाती है। उसकी छाती फूलती है, उसकी साँस फैलती है, और वो पीला पड़ जाता है। जैसे के हमारी पाक माँ आएशा-ए-सिद्दीका रज़ी अल्लाहु अन्ह ने अल्लाह के नबी को मौत के वक्त अपनी गोद में लिए हुई थीं, उन्होने ये

निशानियाँ (मौत की) देखीं और, आँसूओं में, वो एक नज़म कह रही थीं, जिसका हिन्दी मे मतलब हैः

“मैं अपनी नफस आप पर निछावर करदूँ, ओह, आप, अल्लाह के नबी; कोई गलत बरताव कभी आपको उदास नहीं कर पाया या नुकसान पहुँचा पाया। अभी तक कोई जिन आपको ज़र्ब नहीं दे पाया। न ही आपको कभी किसी चीज़ का डर लगा। अब आपको क्या हो रहा है, के मैं आपका बेहद खुबसूरत चेहरा पसीने के मोतियों से भरा देख रही हूँ। जबके कोई आम मरने वाला शख़्स पीला पड़ता है, आपके मुबारक चहरे का नूर चारों तरफ़ रौशन हो रहा है।”

जब किसी शख़्स की रूह उसके दिल तक पहुँचती है, तो, वो गूँगा हो जाता है। जब रूह उसकी छाती तक आ जाती है तो कोई भी बात नहीं कर पाता। उसकी दो वजूहात हैं। उनमें से एक ये हैः कुछ हेबतनाक रोनुमा होता है और सांसों के दबाव में छाती तंग हो जाती है।

क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता के एक शख़्स के सीने पर किया गया वार उससे गश आ जाता है। वो थोड़ी देर बाद ही बोलने के लायक हो जाता है। बहुत मामलात में वो बोलने के लायक नहीं रहता है। जब तुम एक शख़्स के जिस्म के किसी हिस्से पर वार करते हो तो वो रोता है। अगर तुम उसकी छाती पर वार करोगे, ताहम, तो वो फौरन गिर जाएगा जैसे के वो मर गया हो।

दूसरी वजह ये हैः आवाज़ एक हकीकत है जो हवा के ज़रिए पैदा होती है फेफड़ों से बाहर जाते हुए। ये हवा अब चली गई है। अंदर लेना और बाहर करना मुश्किल हो जाता है, जिस्म अपनी गरमी छोड़ देता है और ठंडा हो जाता है। इस मकाम पर मरने वाले के इलाज तबदील होते रहते हैं।

कुछ लोगों के साथ, फरिश्ते गरम फौलाद ज़हरीले पानी के साथ वार करते हैं। मौजूदा तौर पर रूह भाग जाती है और (जिस्म को) छोड़ देती है। फरिश्ते उसे उठाते हैं अपने हाथ में, वो पारे की तरह डगमगाती है। ये

इंसानी शक्ल एक मकड़ी की तरह बड़ी होती है। उसके फरिश्ते इसे ज़ेबानी (दोज़ख के फरिश्ते) को दे देते हैं।

कुछ लोगों के साथ रूह को आहिस्ता खींचा जाता है, जब तक के वो गले तक पहुँच जाए, जहाँ वो रूक जाती है। गला छोड़ने पर भी ये दिल के साथ अपनी वाबस्तगी बनाए रखते हैं। फिर फरिश्ता उसे ज़हरीली गरम सलाख से मारता है। क्योंकि, रूह जब तक उस सलाख से मार नहीं खां लेती तब तक दिल नहीं छोड़ती। उस सलाख से मारने की वजह है के वो सलाख मौत के समुंद्र में डूबी हुई होती है। जब इसे दिल के ऊपर रखा जाता है तो ये ज़हर में बदल जाता है जो दूसरे अज़ा पर भी फैल जाता है। क्योंकि, ज़िंदगी का राज़ सिर्फ़ दिल में छुपा है। उसके राज़ सिर्फ़ दुनियावी ज़िंदगी में असरदार हैं। इस मसअले के लिए, कुछ कलाम के आलिमों (इस्लामी साईन्स) का कहना है के "ज़िंदगी का मतलब रूह और जिस्म की मिलावट है।"

जैसे ही रूह बाहर निकलती है और जिस्म से बंधे हुए धागे का आखिरी हिस्सा टूटने वाला होता है, तो मरने वाला शख़्स कई फितनों में ग़र्क हो जाता है। ये फितने शैतान के ज़रिए फैलाए गए होते हैं, जो अपनी पूरी फौज को हरकत में ले आता है खासतौर से उस मरने वाले के खिलाफ़। उसके वालदेन और बच्चों की शक्ल में और दूसरे मरे हुए लोग जो उसे प्यारे थे उनके रूप में, वो इस नाज़ुक हालत में उन्हें उसे दिखाते हैं, और उससे कहते हैंः

"ए, तुम, फलाँ फलाँ! तुम मर रहे हो। हम तुझे इस पर मारेंगे। तेरे लिए बेहतर हैं के तू यहूदी मज़हब में मरे। वो मज़हब अल्लाह की नज़र में काबिले कुबूल हैं।" अगर वो उन पर यकीन करने से मना करदे और उन्हें न सुने, तो वो उसे छोड़ जाते हैं। दूसरे उस पर आते हैं, कहते हैंः तुम ईसाई के तौर पर मरो! क्योंकि ये मसीहा यानी, ईसा (जिसस) अलैहि-सलाम का मज़हब हैं, जिन्होने मूसा (मोस्सि) अलैहि-सलाम के मज़हब को खत्म किया था।" वो इसी तरह आगे बढ़ते हैं, बारी बारी बहुत से लोगों के ज़रिए अपनाए गए मज़हबों के बारे में उसे तजवीज़ देते हैं। ये वो वक्त हैं जब जनाब-ए-हक के ज़रिए किसी की किस्मत में गलत जाना लिखा है तो वो गलत जाएगा। और

यही हालत है जिसे सूरह आल-ए इमरान की आठवीं आयत-ए-करीमा में लिखा है, जिसका मतलबः **"ए हमारे रब! जब हम मरने लगें तो हमारे दिलों को भटकाना मत के तूने हमें दुनिया में ईमान अता किया..."**

अगर जनाब-ए हक अपने बंदे को रहनुमाई अता करे और ईमान में साबितकदमी पर उस पर इनायत करे, तो रहमत-ए-इलाहिया (पाक रहमत) उसकी निजात के लिए आएगी। कुछ (इस्लामी आलिमो) के मुताबिक जिब्राईल (मुर्करब जिब्राईल) अलैहि सलाम 'रहमत' लफ़्ज़ के मआनी हैं। (आयत-ए-करीमा में इस्तेमाल हुए।

रहमत-ए-इलाहिया शैतान को हटाता है और बातिल चेहरे से थकान मिटाता है। इस पर वो शख्स सुकून महसूस करता है और मुसकुराता है। बहुत सारे मरने वाले लोगों को इस मकाम पर मुसकराते हुए देखा गया है जब रहमत, (यानी हज़रत जिब्राईल) को अल्लाह तआला के ज़रिए भेजा जाता है और उसे खुशी की नवेद सुनाई जाती हैं, ये कहकर, "क्या तुम मुझे जानते हो? मैं जिब्राईल हूँ। और ये (बहरूपये लोग) शैतान, तुम्हारे दुश्मन हैं। तुम मिलत-ए-हनीफ़िया और दीन-ए-मुहम्मदिया, के तौर पर मर रहे हो। एक शख्स के लिए इस फारिश्ते से ज़्यादा कुछ भी आरामदेह और प्यारा नहीं है। सूरह अल-ए इमरान की आठवीं आयत-ए-करीमा का (बाद का हिस्सा) जिसका मतलब है **"...या रब! तेरे हुज़ूर से हमें रहमत अता फरमा, के तू अकेले, बेशुमार अदा करने वाला है,"** इस हकीकत की तरफ़ इशारा करता है।

कुछ लोग नमाज़ में खड़े होने के दौरान मर जाते हैं। कुछ सोने की हालत मे, तो कुछ किसी चीज़ की मशगूलियत मे मर जाते हैं, या कुछ अचानक ही मर जातें हैं, जैसे के वो खेलते हुए मगन होते हैं या संगीत के साज़ों को सुनने में या दूसरे खफ़ीफ़ कामों में, जैसे के वो शराब पी रहे हों। कुछ मरने वाले लोगों को उनके जान पहचान वाले मुरदे दिखाये जाते हैं। ये उस मामले के लिए हे जिसमे मरने वाला शख्स अपने आस पास के लोगों को देखता है। इस मकाम पर वो गरगराता है, इतनी लगातार के इन्सानी कानों से सब सुना

जाए। अगर आदमी इसे सुन ले, तो वो बेशक मौत के खौफ़ की वजह से गायब हो जाए।

मरने वाला शख्स सबसे आखिर में अपने हवाश खोता है यानी सुनना। क्योकि, जब उसकी रूह उसका कलब छोड़ती है तो सिर्फ़ उसकी नज़र जाती है। ताहम, उसकी सुनवाई, तब तक उसके साथ रहती है जब तक के उसकी रूह उससे ना ले ली जाए। इस वजह से हमारे आका फखर-ए-आलम सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः **लोगों को मरते वक्त दो हवाले जिन्हें शहादत-ए कलिमात कहते हैं बताने चाहिए। वो ये के, उन्हें 'ला इलाहा इल्लाह, मुहम्मदन रसूलुल्लाह' कहने के लिए बोलना चाहिए।** दूसरी तरफ़ ,आप, (यानी हमारे मुबारक नबी) एक मरने वाले शख्स के सामने ज़्यादा बात-चीत करने से परहेज़ फरमाते थे। क्योकि, एक शख्स के लिए वो लम्हात सख्त तकलीफ़ के होते हैं।

अगर तुम किसी मय्यत का थूक बाहर निकले हुए देखो, उसके होट लटके हुए, चेहरा काला, और उसकी आँखों के डल्ले पिछे हो गए हो तो तुम समझ जाओ के ये एक शकी (गुनहगार, बुराई-करने वाला) है, जिसने आखिरत में अपनी शकावत (मनहूसयत) को देख लिया हो।

अगर तुम एक मय्यत का मुँह खुले हुए देखो जैसे के वो खुशी मना रहा हो, उसका चेहरा मुसकराता हुआ, और उसकी आँखे ऐसी लगें जैसे के आँख मारता है, तो तुम जान जाओ ये खुशखबरी से नवाज़ा गया है और आखिरत में उसे खुशी हासिल होने वाली है।

फरिश्ते उस रूह को जन्नत के रेशम के कपड़े में उसे लपेटते हैं। उस साद (अच्छे) शख्स की रूह इंसानी शक्ल में शहद की मक्खी जितनी वड़ी होती है। उसने अपने ज़हन और इल्म का कुछ भी नहीं खोया होता। वो दुनिया में अपने सारे काम जानता है। फरिश्ते जन्नत की तरफ़ उसकी रूह के साथ ऊपर उड़ते हैं। कुछ मरे हुए लोग जानते हैं के वो ऊपर जा रहे हैं, जबकि उनमें से कुछ लोग कुछ भी नहीं जान पाते के क्या हो रहा है। इस तरह, वो पुराने नबियों अलैहिम-उस-सलाम की उम्मतों को देखते हुए और नए मरे हुए

लोगों को टिड्डियों के दलों की तरह अपने आस पास घूमते हुए देखते हैं जैसे के वो उड़ते हुए जाते हैं, वो दुनियावी जन्नत में पहली (और सबसे कम) जन्नत की सतह मे जाते हैं।

जिब्राईल अलैहिस-सलाम़ इन सब फरिश्तों के सरबराह दुनियावी जन्नत तक जाते हैं। "तुम कौन हो"। वो पूछते हैं। जब वो कहते हैं के वो जिब्राईल हैं और उनके साथ जो शख्स है वो फलां और फलां हैं और उस शख्स की तारीफ़ करते हैं उसे उन खुबसूरत नामों से पुकारा और उन नामों से जिनसे वो पुकारा जाना पसंद करता था दुनियावी जन्नत के दारोग़ा के तौर पर इंचार्ज ने कहा "ये इतना अच्छा शख्स है अपने यकीऩ अकीदे के लिए जो बहुत खुबसूरत थे। और उसे अपने सही अकीदे पर कोई शुबह नहीं था।"

फिर वो आसमानों की दूसरी परत पर उठाए गए। "तुम कौन हो," सवाल आया। जिब्राईल अलैहि सलाम ने वही जवाब दोहराया जो उन्होने पहले आसमान के फरिश्तों को दिया था। इस पर आसमान की दूसरी परत के फरिश्तों ने उस रूह पर कहा, "ए (अच्छे) शख्स, यहाँ पर खुशआमदीद है। जैसे के वो दुनिया में है। इस तरह अपनी नमाज़ की इबादतें अदा करता था तमाम फर्ज़ की अदाएगी करते हुए।"

चलते हुए, वो तीसरी परत पर पहुँचते हैं। "तुम कौन हो," दोबारा सवाल पूछा गया, जिस पर जिब्राईल अलैहिस-सलाम ने जो पहले कहा था वही कहा। "खुशआमदीद, इस (अच्छे) शख्स का," एक आवाज़ ने कहा, "जो उसकी जाएदाद के हुकूम की हिफ़ाज़त करते थे उसकी ज़कात देकर और जो खेतों में फसल की बुआई करके अश्र देते थे इस्लाम के ज़रिए बताए गए तरीके के मुताबिक गरीब लोगों को, जो वो खुल कर और अपनी इच्छा से करता था।" वो ऊपर चढ़ते रहते हैं। (बराए मेहरबानी तुर्की की **सआदत अबदिया** के पाँचवे हिस्से के पहले सबक को इन शर्राइत के लिए देखिए जैसे के **ज़कात** और **अश्र**।)

वो चौथी परत पर आए, जहाँ एक आवाज़ ने पूछा, "तुम कौन हो?" मुर्करब फरिश्ते ने पहले की तरह जवाब दिया। इस पर उस आवाज़ ने कहा, "

खैरमकदम है, उस शख्स का, जो, जब दुनिया में था, तो रमज़ान (मुबारक महीनों) में रोज़े रखता था, जो काम रोज़े को तोड़ते हैं उनसे परे रहता था, और (ना-महरम) औरतों को देखना और बातें करना नज़रअंदाज़ करता था, और (जो तरीका हराम हैं और) खाना खाना जो हराम है से बचता था।

2 बराए-मेहरबानी रोज़े के मुताल्लिक **सआदत अबदिया** के पाँचवे हिस्से के **29** वें सबक, और छठे हिस्से के शुरू के नवें सबक को देखिए।

3 बराए मेहरबानी ना-महरम औरतों के मुताल्लिक **सआदत अबदिया** के चौथे हिस्से के आठवें सबक को देखिए।)

वो ऊपर जाते रहे और आसमान की पाँचवी परत पर पहुँच गए, जहाँ उनसे पूछा गया, तुम कौन हो?" जब मुर्करब फरिश्ते ने पहले की तरह जवाब दिया, तो आवाज़ ने कहा, "खुशआमदीद, इस अच्छे शख्स को, जिसने अपने हज के फर्ज़ की आदाएगी बग़ैर किसी रिया (डींग, दिखावट) के अदा की जब ये इस पर फर्ज़ हो गया था। और सिर्फ़ अल्लाह तआला की फ़ज़ल के लिए किया बराए महरबानी हज के मुताल्लिक **सआदत अबदिया** के पाँचवें हिस्से के सॉंतवे सबक को देखिए।

वो आगे बढ़े और छठे आसमान पर पहुँच गए। "तुम कौन हो।" सवाल आया, पहले की तरह जवाब दिया गया। "खुशआमदीद, करते हैं इस (अच्छे/नेक) शख्स को, जो सहर (या सेहर, जिसका मतलब जल्दी सुबह है) के वक्त बहुत ज़्यादा इस्ग़फ़ार करता था और जो पौशिदा तौर पर खैरात करता था, और जो यतीमों की मदद करता था, आवाज़ ने जवाब दिया।

वो वहाँ से भी चले गए और ऊपर चले जब तक के वो उस मकाम पर नहीं पहुँच गए जिसे **सुरादिकात-ए-जलाल** कहते हैं और जहाँ जलाल (या जेलाल) का परदा है। वही जवाब इस सवाल का दिया गया, "तुम कौन हो?" इस पर आवाज़ ने कहा, "खैरमकदम में, उस पाक पैदा हुए बंदे और खुबसूरत रूह का, जिसने अमर-ए-मारूफ़, (यानी अल्लाह तआला के अहकामात बताए) [अपने कुंबे और उन लोगों को जो उसकी इताअत करते थे,] अदा किया,

जिसने अल्लाह तआला के मज़हब को उसके बंदों को सिखाया, और जिसने मिसकीनों की मदद की, (यानी गरीब मुसलमानों की जिनके अपने रोज़ाने के गज़ारे से ज़्यादा माल नहीं था।]" फिर उन्होंने फरिश्तों की एक मजलिस बुलाई उन सबने उसे जन्नत की खुशखबरी सुनाई और उससे हाथ मिलाया (उसी तरीके से जिस तरह मुसलमान एक दूसरे के साथ हाथ मिलाते हैं जिसे मुसाफा कहते हैं) बराए मेहरबानी मुसाफा के मुताल्लिक मौजूदा किताब का आखिरी सबक देखें।)

फिर उसके बाद वो और (ऊपर) आगे गए जब तक के वो **सिदरत-उल-मुनतहा** ([**2**] बराए-महरबानी **सआदत अबदिया** के तीसरे हिस्से के सातवें सबक को देखें।) पहुँच गए, जहाँ वही सवाल और जवाब हुआ, और आवाज़ ने कहा, "खैरमकदम, खैरमकदम और मरहबा (सलाम, मुबारकबाद) उस (नेक) शख्स को जिसने (सिर्फ़) अल्लाह तआला के फ़ज़ल के लिए सारे पाक और अच्छे काम किए।

उसके बाद वो आग की परत से गुज़रते हैं, और नूर, जुलमत, पानी, और बर्फ़ की परतों से गुज़रते हैं। फिर वो ठंड के समुंद्र के पास जाते हैं और उससे गुज़र जाते हैं। इन हर दो परतों के बीच में हज़ार सालों का रास्ता हैं।

उसके बाद अर्श-उर-रहमान को ढके हुए पर्दे खुलते हैं। वहाँ पर उनमें से अस्सी हज़ार हैं। हर परदा अस्सी हज़ार शराफास (गलियारे) पर मुशतमिल है। जिसमें हर एक में हज़ार चाँद शामिल हैं, हर एक अल्लाह तआला की तहलील और तस्बीह (या तसबीह) करता है। अगर उन चाँदो में से एक ज़मीन पर नमूदार हो जाए तो, उसका नूर (चमक, रोशनी, दमक) पूरे आलम को जला दे, और लोग उसकी इबादत करनी शुरू कर दें, (उनकी इबादत) अल्लाह तआला की इबादत के अलावा। उस वक्त एक परदे के पीछे से आवाज़ सुनाई दी। उसने कहा, "ये किसकी रूह हैं जो तुम यहाँ लेकर आए हो?" "ये फलां और फलां हैं, फलां और फलां का बेटा है," जिब्राईल अलैहिस-सलाम जवाब देंगे।

अल्लाह तआला ने वाज़ेह कियाः "इसे नज़दीक लाओ। मेरे एक बंदे तुम कितने खुबसूरत हो।" जैसे के वो अल्लाह तआला की हुज़ूर-ए-मनाविया-ए-इलाहिया (पाक रूहानी मौजूदगी) में इंतज़ार कर रहा था, हक **ए** तआला ने लोम-ए-इताब (मलामत के ज़रिए) के कुछ तरीके के ज़रिए उसे शर्मिदा किया, ताकि उसको लगे जैसे के वो नेस्तो नाबूद हो गया। फिर जनाब-ए हक उसे माफ़ कर देगा।

दरहकीकत, मंदरजाज़ेल वाक्या हज़रत काज़ी याहय्या बिन एकसम के बारे में हैः उनके मरने के बाद वो ख्वाब में नज़र आए और उनसे पूछा गया हकके तआला ने तुम्हारे साथ क्या सुलूक किया। याहय्या बिन एकसम ने कहा, "अल्लाह तआला ने मुझे अपनी रूहानी मौजूदगी में खड़ा किया और कहाः 'ए शैख-ए-सू, [जिसका मतलब थाः 'ए शैख-बुरे बूढ़े आदमी,]! क्या तुमने फलां और फलां इरतकाब नहीं किए?' जब मैने देखा के अल्लाह तआला वो सब चीज़ें जानता है जो मैने कीं, तो मैं पूरा काँप गया, इसलिए मैने कहाः ए मेरे रब, अल्लाह! मुझे दुनिया में ये नहीं बताया गया था के मुझ से इस तरीके से पूछताछ करेगा। उन्होने तुझ से क्या कहा, आपने पूछा, मैने कहा, मुअम्मेर ने इमाम जुहरी के हुकूम पर बताया, जिन्होने उसे उर्वा के हुकूम पर बताया, जिन्होने उसे आएशा-ए-सिदिदका रज़ी अल्लाहु अनह के हुकूम पर बताया, जिन्होने उसे हज़रत नबी सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हुकूम पर बताया, जिन्होने उन्हें हज़रत जिब्राइल (मुर्करब जिब्राइल) के हुकूम पर बताया, जिन्होने आपको ज़ात-ए-तआला (अल्लाह तआला) के हुकूम पर बताया, के अल्लाह तआला, जो रऊफ़ और रहीम है, ने वादा किया हैः **मैं, अज़ीम उस-शान, उन बाल और दाढ़ी को अज़ाब देते हुए शर्म महसूस करूँगा जो इस्लाम में रंगी हों**। इसपर अल्लाह तआला ने वाज़ेह कियाः 'तुम और मुआम्मर और इमाम जुहरी और उरवा और आएशा और मुहम्मद अलैहिस-सलाम और जिब्राइल सादिक (ईमान वाले) हो। इसलिए मैं तुम्हें माफ करता हूँ।"

[क़ाज़ी बिन याहय्या एकसम रहमतुल्लाहि अलैहि बग़दाद के क़ाज़ी थे, जब उन्होने **242** [**856** ए .डी.] में रहलत फरमाई। वो शाफ़ई मसलक फिकह के एक आलिम थे। उनकी किताब **तनबीह** नाम की बहुत मश्हूर है।

मआम्मर बिन मुसन्ना अबू उबैद नहवी के नाम से ज़्यादा जाने जाते हैं। वो हुरूफ़ तहज़जी की मालिक थे। वो **110** में बसरा में पैदा हुए थे, और **210** [**825** ए.डी.] में चल बसे। वो एक खवारिजी थे। उन्होने कई किताबें लिखीं। वो इस्लामी साईस में जिसे हदीस कहते हैं आलिम थे और साथ ही साथ एक काबिल तारीखदाँ थे।

मुहम्मद बिन मुस्लिम जुहरी ताबईन**21** में से एक थे। वो अपना वक्त किताबें पढ़ने में, अपने आपको अपनी ही किताबों के फ्रेम के बीच में जिन्हें उन्होने ईंटों की परतों की एक दिवार की तरह तरतीब दिया हुआ था उसमें अपना वक्त गज़ारते थे। एक दिन उनकी बीवी ने उनसे कहा, "ये किताबें मेरी तीन सौतनो से ज़्यादा सख्त हैं।" वो **124** [**741** ए.डी.] में चल बसे 'रहिमाहुल्लाहु तआला'।

उरवा बिन ज़बेर जुबेर बिन अवाम के दूसरे बेटे थे। उनकी माँ इसमा बिनते अबू बकर थीं। वो फुकहा-ए-सबा बराए महरबानी **सआदत अबदिया** के तीसरे हिस्से के पहले सबक के आखिरी के तीन सफ़हें जाँचिए।) (सात आलिम जो जाने जाते हैं) में से एक थे। उन्होने आएशा रज़ी-अल्लाहु तआला के सुबूत पर कई हदीस-ए-आरीफ़ का हवाला दिया। वो **22** (हिजरी) में पैदा हुए, और **93** में मदीना में वो चल बसे रहिमाहुल्लाहु तआला। फिर, अबद-उल-अज़ीज़ इर्बान नुबाता सपने में आए और उनसे पूछा गया हज़रत अल्लाह तआला ने तुम्हारे साथ किस तरह बरताव किया। उन्होने जवाब दियाः अल्लाह तआला ने मुझ से कहा, "क्या तुम वो शख्स नहीं हो जो कम बोलते थे ताकि तुम्हें लोग तुम्हारी फसाहत के लिए तारीफ़ करें?" मैने दुआ की, "या रब्बी! मैं तेरी आला ज़ात को दूर तक और नाकमिल सिफ़ात से आज़ात पुकारता हूँ, और दुनिया के अंदर मैं तेरी ज़ात-ए-रबूबियात को कामिल सिफ़ात के साथ, प्यार के साथ, इबादत, और तारीफ़ के साथ ज़िक्र करता था।" उसने हुकूम

दिया, “फिर, मुझे उसी तरह ज़िक्र करो जैसे तुम दुनिया में करते थे।” इसलिए मैने उसकी तारीफ़ की, वो जो कुछ नहीं से मखलूक पैदा करता है, उनसे उनकी रूहें लेकर वो एक बार फिर उन्हें मार देता हैं।वो, जो उन्हें आनाज देता है (बातचीत करने की काबलियत), उनकी आवाज़ को फिर नेस्तो नाबूद कर देता है।जैसे वो खत्म करता है वो उन्हें दोबारा पैदा कर देता है।उसी तरह, जैसे के वो आदमी के अज़ा को एक दूसरे से अलग कर देता है आदमी की मौत के बाद।वो उन्हें योमुलहश्र में दोबारा जमा करेगा।इसलिए अल्लाह तआला ने वाज़ेह किया, तुम सच बोल रहे हो! तुम अब जा सकते हो, क्योंकि मैने तुम्हें माफ़ कर दिया।” [इबनि नुवाता एक शायर थे दीवान (शायरी का मजमूआ एक शायर के ज़रिए लिखा गया) की साथ।वो **405** [**1014** ए.डी.] में बग़दाद में चल बसे।]

मंसूर बिन अम्मार रहमतुल्लाहि अलैहि एक दूसरे नवाज़े गए शख्स थे जो (अपने मरने के बाद) एक सपने में देखे गए और पूछा गया के अल्लाह तआला ने उनके साथ कैसा सलूक किया।उनका हवाला मंदरजाज़ेल थाः जनाब-ए हक ने मुझे अपनी रूहानी मौजूदगी में खड़ा किया और मुझ से सवाल किया, “ए, मंसूर, तुम मेरे पास क्या लेकर आए हो?” “या रब्बी! मैंने कहा, मैं हज लेकर आया हूँ जो मैने छत्तीस बार अदा किया।” मैने उनमें से एक भी कुबूल नहीं किया।तुम यहाँ किसके साथ हो,” उसने पूछा।मैने कहा, “या रब्बी! मैं यहाँ खत्म-ए-शरीफ़ के साथ आया हूँ खत्म(-ए-शरीफ़) का मतलब हैं पूरा कुरआन-अल करीम पढ़ना।) जो मैने तीन सौ साठ बार अदा किया।” मैं उनमें से एक भी कुबूल नहीं करता।ए, मंसूर, तुम यहाँ किसके साथ आए हो,” उसने दोबारा पूछा।मैने कहा, “या रब्बी! मैं यहाँ तुम्हारी रहमत के साथ आया हूँ।इस पर अल्लाह तआला ने वाज़ेह किया, “अब तुम मेरे लिए यहाँ हो।तुम जा सकते हो, क्योकि मैने तुम्हें माफ़ कर दिया।”

ज़्यादातर हिकायात हमें मौत की डरावनी हकीकत के बारे में जानकारी में देती हैं।अल्लाह तआला की मदद से, मैने मश्वरे के लिए खुली लोगों के ज़रिए पैरवी की जाने वाली चीज़ों के बारे में बता दिया हैं।कुछ जब कुर्सी पर पहुँचे उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी।इस मकाम से वो वापस आ

गए। कुछ परदो से वापस आ गए। ये आरिफ-ए-बिल्लाह, यानी औलिया-ए-किराम हैं जिन्होने अल्लाह तआला की मौजूदगी हासिल की। वो जो चौथी या विलायत ऊँचे दर्जे में नहीं आते वो लोग अल्लाह तआला की मौजूदगी नहीं पा सकते।

ओह, मैं आए दिन बदतर के लिए बदला, या रसूलुल्लाह!
मेरा तरज़े अमल सही होने दे, मेरी मदद करे, या रसूलुल्लाह!

मेरे नफस की इस कीले की दीवार ने, मुझे शैतान को मानने वाला बना दिया।
मैं किस तरह इन गुनाहों से पनाह माँगू या रसूलुल्लाह!

क्या नफस और शैतान के बावजूद हिफ़ाज़त मुमकिन हैं।
जब तक के आपकी रहनुमाई हमारे बचाव के लिए ना आ जाए, या रसूलुल्लाह!

एक बार तुम्हारा फैज़ और एहसान एक शख्स के दिल में आ जाए,
इसकी दोनो दुनिया के रास्तो मे निजात हैं, या रसूलुल्लाह!

मैने सारे अएकामात और मुमानियात की फरमाबरदारी की, और हराम को 'हलाल' नहीं कहा। हर गुनाह को करने का पछतावा हुआ, या रसूलुल्लाह!

ए, आप, इंसानो और जिनो के पैगम्बर पूरी आलमियत से अफ़ज़ल; मेरे इखलास, मफ़ाद के लिए, मेरे बचाव के लिए, या रसूलुल्लाह!

तीसरा सबक

एक फाजिर की रूह, यानी काफ़िर की बड़ी सख्ती से निकाली जाएगी और उसका चेहरा हंज़ल की तरह हो जाएगा। फरिश्ते उससे कहेंगे, "ए, तू, खबीस (गंदी, खराब) रूह! अपने खबीस जिस्म से बाहर आ।" और वो गधे की तरह दम तोड़ देता है। जब रूह बाहर आ जाएगी, इज़राइल अलैहिस-सलाम

उसे जेबानियों (यानी वो फरिश्ते जिनका काम दोज़ख के लोगों को अज़ाब देना है,) को दे देंगे। जिनके चेहरे निहायत बदसूरत होंगे, जो काले कपड़े पहने होंगे, जिनसे गंदी बदबू आ रही होगी, और जो एक चटाई की तरह एक कपड़े का टुकड़ा लिए होंगे। वो उसे रूह के इतराफ़ लपेट देंगे। उस वक्त ये एक इंसानी शक्ल में बदल जाएगा इतना बड़ी जितनी के मकड़ी। ये इसलिए क्योंकि आखिरत में काफ़िर का जिस्म एक ईमान वाले से ज़्यादा बड़ा होगा। हदीस-ए-शरीफ़ में बयान हैः " **दोज़ख में एक काफ़िर का हर एक दाँत ओहद पहाड़ की तरह बड़ा होगा।** "

जिब्राईल अलैहिस-सलाम इस खबीस रूह को ऊपर ले जाते हैं और दोनो एक साथ उठते हैं जब तक के वो दुनियावी जन्नत में ना पहुँच जाएँ। "तुम कौन हो "एक आवाज़ पूछती है इसका जवाब दिया जाता हैं, "मैं जिब्राइल हूँ।" "तुम्हारे साथ कौन शख्स है?" जिब्राईल अलैहि-सलाम कहेंगे के ये फलां फलां शख्स है फलां फलां का बेटा उसे बुरा कहते हुए और गंदे नामों से बुलाते हुए और जब वो दुनिया में था जिन नामों को वो नापसंद करता था उन गलीज़ नामों से उसे पुकारा। उसके लिए आसमान और जन्नत के दरवाज़े नहीं खुले, और एक आवाज़ ने कहा ऐसे लोग जन्नत में दाखिल नहीं होंगे अगर एक ऊँट एक सूई के नाके (छेद) से ना निकल जाए।

जैसे ही जिब्राईल अलैहिस सलाम ने ये सुना वो उस बुरी रूह को छोड़कर चले गए। हवा उसे दूर दराज़ के इलाकों में ले जाती है। सूरह हज की इकत्तीसवी आयत-ए-करीमा में इस हालत को वाज़ेह किया गया है, जिसका मतलब ः **"...अगर कोई अल्लाह तआला का साथी मंसूब करता है, वो ऐसा है जैसे वो आसमान से गिर गया हो और परिंदो के ज़रिए छीन लिया गया हो, या हवा उसे झपटा** (अपने शिकार पर एक परिंदे की तरह) **मार गई हो और उसे एक दराज़ जगह में फैंक गई हो, जहाँ वो नेस्तो नाबूद हो गया।"** जब वो

शख्स ज़मीन पर गिरता है, एक ज़बानी उसे उठाता है और सिजजीन में ले जाता है। सिजजीन एक बड़ी चट्टान है ज़मीन के नीचे या दोज़ख के नीचे। काफ़िरों और फासिक लोगों की रूहें सिजजीन में ले जाई जाती हैं।

ईसाइयों और यहूदियों की रूहें (जब उन्हें कुर्सी से बरतरफ़ किया जाता हैं,) ([1] **कुर्सी** और **अर्श** जैसे लफ़्ज़ों के लिए बराए मेहरबानी **सआदत अबदिया** के छठे हिस्से का **21** वाँ बाब देखिए।) उनकी कब्रों में वापस भेज दी जाती हैं। अगर वो लोग वो हैं जो अपने असली मज़ाहिब में हैं (यानी यहूदी और ईसाई की बग़ैर तबदील हुई हालातों वाले) तो वो अपनी मय्यत को नहलाते हुए और दफनाते हुए देखते हैं। मुशरिक (बुत परस्त), यानी लोग जो आसमानी मज़ाहिब में यकीन नहीं रखते, वो ऐसे किसी वाक्या को नहीं देखते। इसलिए, उन्हें दुनियावी जन्नत से रज़ील तरीके से फैंका जाता है।

एक मुनाफ़िक, दूसरे ग्रुप की तरह, यानी मुशरिकों की तरह अल्लाह तआला का अज़ाब सेहता है, नफ़रत किया जाता है और इंकार किया जाता है, इसलिए, उसे भी उसकी कब्र में वापस भेज दिया जाता है।

ईमान वाले जो अल्लाह तआला के बंदों के तौर पर अपने फराईज़ अदा करने में नाकाम रहते हैं काफ़ी गौर से तबदील होते हैं। उनमें से कुछ अदा कीं नमाज़ के ज़रिए वापस कर दिए जाते हैं मिसाल के तौर पर, अगर एक शख्स जल्दी नमाज़ अदा करता है जैसे के एक मुर्गा अपने अनाज के दानों पर चोंच मारता है, वो अपनी ही नमाज़ में से चोरी करता है। उसकी नमाज़ को एक पुराने कपड़े की तरह जमा किया जाता है और उसके दाँतों में फंसा दिया जाता है। फिर उसकी नमाज़ खड़ी होगी और कहेगी, " जिस तरह तुमने मुझे बरबाद किया इसी तरह अल्लाह तआला तुम्हें बरबाद करे। "

उनमें से कुछ को उनकी ज़कात वापस करा देती है। मिसाल के तौर पर, कुछ लोग ज़कात इसलिए देते हैं के दूसरे लोग उसे देखें और उसकी खैरात देने में सख़ाफत की बातें करें, और दूसरे सिर्फ़ औरतों का प्यार जीतने के लिए ज़कात देते हैं। हमने ऐसी कई मिसालें देंखी और ग़ौर की हैं। अल्लाह तआला सारे लोगों को सेहत बख्शे जो हलाल चीज़ों से हासिल की गई हों।

कुछ लोगों को उनके रोज़े वापस भेज देते हैं। क्योंकि, वो सिर्फ ना खाकर रोज़े रखते हैं, गुनाह को बंद किए बग़ैर जैसे के मालान्यनी, (यानी फज़ूल,) बाते करना और चुगली करना, और दूसरी बहुत सी बातें करना नहीं छोड़ते। इस तरह का रोज़ा फहश (गैर अखलाकी) और हसरान (खुंदक) है। जैसे के एक शख्स इस तरीके से रोज़ा रखता है, तो रमज़ान का मुबारक महीना खत्म हो जाता है। वो साफ़ तरह से रोज़े रखता है लेकिन दरहकीकत ऐसा नहीं हैं। कुछ लोगों को उनके अदा किए गए हज के ज़रिए वापस कर दिया जाता है। क्योंकि, वो सिर्फ़ इसलिए अदा करते हैं ताकि लोग कहें, "के फलां फलां शख्स ने हज अदा किया," या फिर वो ऐसा माल खर्च करके हज अदा करते हैं जोकि हराम था।

कुछ लोग गुनाह के ज़रिए वापस कर दिए जाते हैं जो उन्होने अपने माँ बाप की नाफरमाबरदारी अदा करके किया। उनकी ये हालतें सिर्फ़ उन लोगों के ज़रिए बताई गई जिनको दुनिया के राज़ बताए गए और आलिमों के ज़रिए जिन्होने अल्लाह तआला की रज़ा के लिए इल्म हासिल किया।

अभी तक जो हकाईक हमने बताए हैं, उसके अलावा हमारे नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम' की हदीस-ए शरीफ़ भी हैं और सहाबा और ताबईन के हवाले भी हैं जो हम तक पहुँचे हैं। जैसे के मआज़ बिन जबल रज़ी अल्लाहु अनह की हाकमियत के हवाले में बताया गया हैं, और दूसरी हिकायत भी जो इबादत के अमाल को उनकी मसूंख पर और

दूसरे मामलात के बारे में हैं। मैने इस मामले के बारे में मुख्तसर तौर पर नमूना पेश करने की कोशिश की है अगर मैं इन हकाईक को खुलासे में नहीं करता तो मैं कई किताबें भर देता। जो लोग अहल अस-सुन्नत, यानी जो सही एतिकाद (अकीदा) ईमान रखते हैं, समझ जाएगे और अपके बच्चों को भी जानकारी होगी यानी जो हम कह रहे हैं वो सच्चे हकाईक का हवाला हैं।

जब रूह अपनी लाश में जाने लगती है, तो वो देखती है के उसे नहलाया जा रहा है, और लाश के सिरहाने इंतेज़ार करती है जब तक के गुसल पूरा ना हो जाए। अगर अल्लाह तआला उस शख्स के लिए अच्छाई चाहता है, तो वो शख्स मरे हुए शख्स की रूह को दुनिया में उसके अपने ही इंसानी रूप में देख लेता है। एक अच्छा शख्स अपने (मरे हुए) बेटे को गुसल दे रहा होता है तो वो अपने बेटे को लाश के सिरहाने खड़े हुए देख लेता है। खौफ़ तारी हो जाता है, वो लाश के दफनाए जाने तक उसका बेटा नज़र आता रहता है। जब मय्यत/लश को कफ़न में लपेट दिया जाता है, तो बेटे के भेस में रूह वापस चली जाती है, कफ़न में गायब हो जाती है। और भी वाक्यात हैं जहाँ लाश को ताबूत में रखने के बाद भी रूह को देखा गया। दरहकीकत, हिकायात के मुताबिक जो सालेह (पाक, सच्चे) मुसलमानों के ज़रिए आई, जब के मुरदा अपने ताबूत में होता है, एक आवाज़ ये बोलते हुए सुनाई देती है, "फलां फलां कहाँ हैं? रूह कहाँ हैं?" कफ़न के सीने की साईड दो बार या तीन बार हिलती हैं।

रबी बिन हथेम रहीमहुल्लाहु एक मुबारक शख्स ने (अपने मरने के बाद) एक शख्स के ज़रिए गुसल देते वक्त ये बयान दिया। अबू बकर अस सिद्धीक रज़ी-अल्लाहु अनह के ज़माने में, एक मय्यत को ताबूत में बोलते हुए सुना गया, वो अबू बकर और उमर रज़ी-अल्लाहु अनहुमा की नेकियों के बारे में हवाले दे रहा था।

लोग जो मरे हुए लोगों की ये हालतें देखते हैं वो वली होते हैं जो फरिश्तों की दुनिया देखते हैं। अल्लाह तआला खास लोगो को अपनी मरज़ी से चुनता हे और उनकी आँखों और कानों से सारे परदे हटा देता हे, ताकि ये लोग ऐसी (राज़) हालतें देखें और जानें।

जब लाश को दफ़नाया जा रहा होता हे, तो रूह लाश के पास आकर इंतज़ार करती हैं, सीने के नज़दीक और ताहम लाश के बाहर। इसी दौरान में रूह गिरयाओज़ारी करती हैं। "वो कहती हैं, "मुझे जल्दी से मेरे रब (अल्लाह तआला) की रहमत (रहमदिली) में ले चलो।" अगर तुम्हें पता चल जाए रहमतों के बारे में जो मेरे लिए तैयार की गई हैं, तो तुम जल्दी करो और मुझे मेरे मकाम पर ले जाओ।"

अगर रूह ऐसे शख्स की हो जिसे अपनी शकावत (यानी, बुरी खबरें के वो एक बुरा शख्स है और इसलिए वो दोज़ख में जाएगा) के बारे में जानकारी मिल चुकी हो तो वो मिन्नत करेगा और कहेगा, के उसे उसके अज़ाब के मकाम पर जितनी देर मुमकिन हो पहुँचाया जाए, "बराए मेहरबानी, मुझे दम लेने दो और मेरी मय्यत को आहिस्ता लेकर चलो अगर तुम जान जाओ, तो तुम यकीनन मेरी मय्यत अपने काधों पर उठा कर ना ले जाओ इस मामले में, जब रसूलुल्लह सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक जनाज़ा देखा, तो आप खड़े हो गए और चालीस कदम उससे पीछे चले।

एक हदीस-ए शरीफ़ से रिवायत हैः एक दिन, हमारे मुबारक नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम' के पास से एक जनाज़ा गुज़रा। आप ताज़ीम के साथ खड़े हो गए। असहाब-ए किराम अलैहिम-उर-रिज़वान ने कहा, "या रसूलुल्लाह (ए, आप, अल्लाह के नबी); ये जनाज़ा एक यहूदी का था।" इसपर हमारे मुबारक नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम' ने फरमायाः **"क्या ये एक नफ़्स नहीं है** (यानी एक

इंसानी मखलूक)?” इसका सबब है के हमारे आका अल्लाह के नवी ऐसा क्यों करते थे क्योंकि मुबारक और आला बंदे के साथ फरिश्तों की दुनिया इसी तरह करती है, कशफ़ की तरह,(एक तरीका जिसे कहते हैं) इस वजह से, हमारे आका जब कभी जनाज़ा देखते थे तो खुश हो जाया करते थे।

[जैसे के **हलाबी** मे लिखा है, एक शख्स जो अपने पास से एक जनाज़ा गुज़रते हुए देखे तो ना सिर्फ़ उसे अपने पैरों पर खड़े हो जाना चाहिए और खड़े होकर मय्यत के साथ जा रहे लोगों मे शामिल हो जाना चाहिए और जनाज़े के पीछे चलना चाहिए। अगरचे ये बताया गया है के ‘सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम’ जब कभी जनाज़ा ले जाते हुए देखते थे तो खड़े हो जाते थे और जब जनाज़ा चला जाता था (लोगों का समूह जनाज़ा लेकर जा रहा होता था) तो दोबारा बैठ जाते थे और अपने मुबारक साथियों को भी ऐसा करने का हुकूम देते थे, ये अहकाम (उन अहकामात में से एक थी) जो नसख के मातेहत थी। दूसरे लफ़ज़ों में, थोड़े अरसे बाद आपने अपने इस हुकूम को तबदील कर दिया। **मराक-इल-फलाह** और **दुर उल-मुखतार** नाम की किताबों में लिखा है के एक शख्स को इस बात की इजाज़त नहीं हैं के वो जब एक जनाज़े को (ले जाते हुए) देखे तो ताज़ीम का इज़हार करने के लिए खड़ा हो जाए।] जब मय्यत को दफ़ना दिया जाता हे तो कब्र उसमें रहने वाले से पूछती हैः जब तुम मेरे ऊपर थे तो तुम खुश थे अब तुम मेरे अंदर हो और नाखुश हो। तुम मेरे ऊपर (मज़ेदार) खाने खाया करते थे। अब मेरे अंदर तुम्हें कीड़े खाएंगे कब्र इसी तरह की कढ़वी बाते करती रहती है जब तक के वो पूरी मिट्टी से भर ना जाए और मय्यत पूरी मिट्टी से ढक ना जाए।

इबनि मसूद रज़ी अल्लाहु अनह की हाकमियत के माबेन एक हिकायत के मुताबिक, उन्होने (अल्लाह के नवी) से पूछाः “या ‘सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम’! वो क्या पहली चीज़ होती हैं जो एक मरा हुआ शख्स जब कब्र में लिटाया जाता है उससे मिलती है?” आपने

फरमायाः **"या इबनि मसुद। तुम से पहले मुझ से ये सवाल किसी ने नहीं पूछा तुम अकेले हो जिसने मुझ से ये पूछा। जब एक शख्स कब्र में होता है, एक फरिश्ता उसके पास आता है। उस फरिश्ते का नाम रूमान हे वो कब्रो में जाता और कहता हैः या अबद-अल्लाह** (ए, तुम, अल्लाह के पैदाएशी गुलाम)। **अपने अमाल लिखो,** (यानी वो सारी चीज़ें जो तुमने दुनिया में की।) **वो शख्स कहेगाः मेरे पास यहाँ पर ना काग़ज़ है ना ही कलम। मैं क्या लिखूँ? फरिश्ता कहेगाः तुम्हारा ये जवाब काबिले कुबूल नहीं है। तुम्हारा कफन तुम्हारा काग़ज़ है। तुम्हारा थूक तुम्हारा स्याही है। उंगलियाँ तुम्हारे कलम है। फरिश्ता उस मरे हुए शख्स के कफन से एक टुकड़ा फाड़ेगा और उसे देगा। अल्लाह तआला का वो बंदा, जो दुनिया में जाहिल था, वो वहाँ पर अपने अपने (सारे) (काम जो उसे) सवाल दिलाएंगे और (सारे) अपने गुनाह लिख देगा जैसे के उसने (सारे अपने अच्छे काम) अदा किए हों और (सारे गुनाह) जुर्म एक दिन में किए हों। उसके बाद फरिश्ता कफन के टुकड़े को (जिसमें नामा अमाल हैं) लपेटेगा और मरे हुए शख्स की गरदन पर लटका देगा।"** उसके बाद हमारे आका अल्लाह के नबी ने आयत-ए करीमा का हवाला दिया, जिसका मतलब हैः **"हर आदमी के अमाल को दिखाते हुए सफ़हे हमने उसके खुद के गले पर बाँध दिए..."**

उसके बाद, दो खौफनाक फरिश्ते नाज़िल होते हैं। वो इंसानी शक्ल में होते हैं। उनके चेहरे काले सियाह होते हैं, और वो ज़मीन को अपने दाँतों से काटते हैं। ये ऐसा लगता हैं जैसे उनके सर के बाल ज़मीन पर लटके हुए हों। उनकी आवाज़ गरजदार और आँखें बिजली की तरह हैं। उनकी साँसे ऐसी हैं जैसे तेज़ी से हवा चल रही हो। उन में से हर एक लोहे का हंटर उठाया हुआ हैं जिसे पूरी आलमियत और सारे जिन्न भी अगर उठाने की कोशिश करें तो उसे उठाने में नाकाम हो जाएंगे। ये पहाड़ से ज़्यादा बड़ा और भारी हैं। इसकी एक मार, माज़अल्लाह, एक शख्स को ढेर करदे। जैसे ही रूह इन्हें देखती हैं

भाग लेती हैं। ये मय्यत के सीने में उसके नथनों से घुसते हैं। सीने के ऊपर का हिस्सा ज़िंदा हो जाता है, बिल्कुल वैसे ही जैसे वो मरने के वक्त था। मरा हुआ आदमी हरकत करने में नाकाम रहता है। इसके बावजूद उसे जो बताया गया था वो सब देखता है के क्या हो रहा है। वो सख्ती से उससे सवाल करते है। वो उसे अज़ाब और ज़दकौब करते हैं। ज़मीन उसके लिए पानी की तरह हो जाती हैं। जब भी वो हरकत करता है, ज़मीन काँटेदार हो जाती है और शग़ाफ़ पड़ जाते है।

दोनो फरिश्ते इस तरह सवाल करते हैं। "तुम्हारा रब कौन हैं?" "तुम्हारा मज़हब क्या है?" "तुम्हारा नबी कौन है? "तुम्हारा किबला किस तरफ़ है?" अगर अल्लाह तआला एक शख्स को कामयाब बनाएगा और उसके दिल में सही लफ़्ज़ डालेगा, वो शक्स कहेगा, "मेरा रब वो हे जिसने तुम्हें अपना नायब बनाकर मेरे पास भेजा। मेरा रब अल्लाह है, मेरे नबी मुहम्मद अलैहिसलाम हैं, और मेरा मज़हब इस्लाम है।" ये जवाब सिर्फ़ नेक साऊत आलिमों के ज़रिए दिए जा सकते हैं जो दुनिया में अपने इल्म पर अमल करते थे।

फिर दोनो फरिश्ते कहेंगे, "ये सच्च बता रहा है। इसने अपने आपको साबित कर दिया। इसने हमारे हाथों से अपने आपको बचा लिया।" उसके बाद वो उसकी कब्र को एक मकबरे में बदल देते हैं उसके ऊपर वो एक बड़ी बुर्जी के साथ। वो दो दरवाज़े उसके उलटे हाथ की तरफ खोलते हैं। फिर वो उसकी कब्र की अंदरूनी दीवारों को खुशबू उस शख्स तक पहुँचती हैं। जो अच्छे अमाल उसने दुनिया में अदा किए वो उसके प्यारे दोस्त की शक्ल में आएंगे, उसे मज़े कराएंगे और अच्छी खबरें देंगे। उसकी कब्र नूर से भर जाएगी। हर वक्त ज़िंदादिल और खुश अपनी कब्र में कयामत का इंतज़ार करेगा। कयामत से ज़्यादा कोई और चीज़ उसे प्यारी महसूस नहीं होती।

कम इल्म वाले ईमान वाले और थोड़े अच्छे अमाल वाले और जो फरिश्तों की दुनिया से नावाकिफ़ हों उनका ऊपर बताए शख्स से मरतबा कम होता है। इस ज़मरे में ईमान वाला, (उस खौफनाक इम्तेहान के बाद जो वो उसकी मौजूदगी में देता है) नूमान के बाद, उसके अच्छे अमाल के ज़रिए ज़ियारत पाता है खुबसूरत चेहरे और अच्छी खुशबू के साथ वो शख्स एक प्यारा लिबास पहने होता है। "क्या तुम मुझे नहीं जानते," आने वाला पूछता है। मरा हुआ शख्स कहता है, "तुम कौन हो जिसे अल्लाह तआला ने ऐसे वक्त में, जबकि मैं बिल्कुल अकेला और बेसहारा हूँ ऐसे वक्त में तुम्हें रहमत बनाकर भेजा?" रहमदिल आने वाले ने कहा, "मैं तुम्हारे नेक काम हूँ (इंसानी शक्ल में)। डरो नहीं, और उदास महसूस मत करो। कुछ अरसे बाद मुंकर और नकीर फरिश्ते तुम से सवाल करने यहाँ आएंगे। तुम उनसे डरना मत।"

उसके बाद, जैसे के आने वाले ने मरे हुए शख्स को सिखाया था के सवालात करने वाले फरिश्तों से क्या कहना हैं, मुंकर और नकीर नाम के फरिश्ते आ गए। उन्होने उससे पूछताछ शुरू की, उसी तरीके से जिस तरह हम बता रहे हैं। पहले उन्होने उसे बिठा दिया। उन्होने उससे पूछा, "मन रब्बुका," जिसका मतलब है, "तुम्हारा रब कौन है? "जैसा के हमने पिछले कैस में वाज़ेह किया ठीक उसी तरह उसने उन्हें जवाब दिए। "मेरा रब अल्लाह है। मेरे नबी मुहम्मद अलैहि सलाम' हैं। कुरआन अल करीम मेरा ईमाम है। मेरा किबला काबा-ए शरीफ़ है। मेरे बाप इब्राहिम अलैहिस सलाम हैं, यानी उनकी कौमियत वही है जो मेरी है।" वो कभी भी चुप नहीं रहे। इस पर फरिश्तों ने कहा, "तुमने सच बताया।" उन्होने उससे उसी तरह बरताव करा जैसे पिछले फरिश्तो ने क्यिा था। ताहम उन्होने उनके उलटे हाथ की तरफ से एक दरवाज़ा खोला दोज़ख से। उसने दोज़ख के साँप, बिछू, ज़ज़ीरे, भाप वाला पानी, ज़कूम, (दोज़ख के मलामती लोगों का खाना), और मुखतसर ये के, जो भी

दोज़ख में था, वो सब उसने देखा। इस पर वो शख्स बुरी तरह से फूट फूट कर रोता है।

"तुम डरो नहीं," उन्होने उसे शांत किया। "उस जगह की खौफनाकी तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएगी। ये दोज़ख में तुमहारी जगह है। अल्लाह तआला ने इसे तुम्हारी जन्नत की जगह से बदला है। जाओ सो जाओ। तुम सईद (यानी जन्नत का एक शख्स) हो। उसके बाद दोज़ख का दरवाज़ा उस पर बंद हो गया। वो इस हालत में थोड़े वक्त, महीने और सालों तक रहा।

बहुत सारे लोग जब मरने लगते हैं तो ज़बान बंद हो जाती है। अगर उसके एतिकाद दुनियावी (अकीदा, ईमान) गलती पर थे [अगर, मिसाल के तौर पर, वो अहल अस-सुन्नत के आलिमों की तालीमात की रज़ामंदी पर ईमान नहीं रखता था, और, अगर वो बिदअती (या बिदअत को मानने वाला था) (असनाम परस्तो) को मानने वाला था, तो वो जवाब देने में नाकाम रहेगा, "मेरा रब अल्लाह है।" इसके बजाए, वो दूसरी चीज़ें कहनी शुरू कर देगा। फरिश्ते उसे एक हंटर मारेंगे, और उसकी कब्र आग से भर जाएगी। फिर आग चली जाएगी, कुछ दिनों के लिए अपनी बुझी हुई हालत में रहेगी। उसके बाद उसकी कब्र में आग फिर आकर उस पर हमला करेगी। ये मुताबादिल कारवाई कयामत तक चलती रहेगी।

बहुत से दूसरे लोग ये नहीं कह पाते, "मेरा मज़हब इस्लाम हैं।" या तो वो शक की हालत में मरा हो या फितना उसके दिल में घुस गया हो जब वो मर रहा हो। [या फिर वो मुंहज़बानी या लिखे हुए जालों में फँस गए हों जिन्हें गैर-सुन्नी लोगों ने मुसलमानों को गुमराह करने के लिए मकसद से चलाया हो।] वो उसे एक कोढ़ा मारेंगे। उसकी कब्र, पिछले वाले मामले की तरह आग से भर जाएगी।

कुछ लोग ये कहने में नाकाम रहते हैं, "अल कुरआनी इमामी," जिसका मतलब, कुरआन अल करीम मेरा इमाम हैं," क्योंकि वो कुरआन अल करीम को पढ़ते हैं लेकिन उससे सलाह नहीं लेते, ना ही कुरआन अल-करीम के अहकामात पर अमल करते हैं, और उसकी मुमानियात को नज़रअंदाज़ करते हैं। उनके साथ भी जैसे पहले वाले थे की तरह बरताव किया जाएगा।

कुछ लोगों के काम खौफनाक दिखाई देते हैं, और उन्हें खिचते हैं। जितना के उनके गुनाह होते हैं उतना ही उन्हें अज़ाब भूगतना पड़ेगा। एक रिवायत के मुताबिक, "**कुछ लोगों के अमाल हुनूतो में बदल जाते हैं।**" सूअर के बच्चे को 'हुनूत' कहते हैं।

कुछ लोग ये नहीं कह पाते, "**मेरे नबी मुहम्मद अलैहिस सलाम हैं।**" क्योंकि, वो लोग जब दुनिया में थे, तो सुन्नत-ए-नबविया (यानी इस्लाम के अहकामात और मुमानियात) के बारे में भूल चुके थे। वो अपने ज़माने में ज़िंदा के तरज़ में बह गए थे। उन्होने अपने बच्चों को कुरआन अल-करीम पढ़ना नहीं सिखाया था अल्लाह तआला के अहकामात और मुमानियात के बारे में नहीं सिखाया था।

कुछ लोगों ने ये नहीं कहा, "मेरा किबला काबा-ए-शरीफ़ है।" ये वो लोग हैं जो नमाज़ अदा करते वक्त किबले की तरफ़ खड़े होने में लापरवाह होते थे, या वो वुज़ू करने में फेसाद (या फसाद) को मिलाते थे, या जब वो नमाज़ अदा करते थे तो उनके दिल दूसरी चीज़ों की तरफ लगे रहते थे या उनके दिमाग़ में दुनियावी मफ़ाद का कब्ज़ा होता था, या जो नमाज़ के रुकू और सज्दे सही ढंग से नहीं करते थे या नमाज़ अदा करते वक्त तादील-ए-अरकान का ध्यान नहीं रखते थे। बराए मेहरबानी नमाज़ की इतलाआत के लिए **सआदत अबदिया** के चौथे हिस्से को जाँचिए।)

हमारे नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' की हदीस-ए-शरीफ़ के हवाले को पढ़ना काफ़ी होगाः "**अल्लाह तआला ऐसे शख्स की नमाज़ कुबूल नहीं करता जिसने नमाज़ की एक इबादत भी छोड़ी हो और इसलिए उस पर नमाज़ का कर्ज़ हो, या जो ऐसे कपड़े** (जिलबाव) **पहनता हो जो हराम हो।** "

[इसलिए, सुन्नत या नफ़िल इबादतें (नमाज़ की) एक शख्स के ज़रिए अदा की गई जिसने (सिर्फ़ एक ही) अपनी नमाज़ की फर्ज़ इबादतें कज़ा के लिए छोड़ीं वो कुबूल नहीं की जाएंगी।] बराए मेहरबानी छोड़ी हुई और भूली हुई नमाज़ की इबादतों के लिए **सआदत अबदिया** के चौथे हिस्से के तेईसवें बाब को देखिए।कुछ लोग ये नहीं कहते, "वा इब्राहिमों एबी", जिसका मतलब है, "इब्राहिम अलैहिस सलाम मेरे बाप हैं।" इस ग्रुप में एक शख्स मे, हो सकता है, एक दिन, मिसाल के तौर पर, किसी को ये कहते हुए सुना हो, "इब्राहीम अलैहिस-सलाम एक यहूदी (या इसाई) हैं," जिसने उसके दिमाग़ में शकूक डाल दिए हों, [या उसने कहा हो के एक काफ़िर जिसका नाम आज़र है वो इब्राहीम अलैहिस-सलाम का बाप हैं।] उस के साथ भी ऊपर बाताए गए लोगों की तरह बरताव किया जाएगा।हम इन सब हकाईक का तफ़सील के साथ अपनी किताब **अहया-उल-उलूम** में **ज़िक्र** करेंगे।

[ऊपर बताई गई हदीस-ए शरीफ़ इस हकीकत का बयान करती है के अगर एक शख्स अपनी एक (ज़रूरी) नमाज़ की इबादत (जिसे फर्ज़ कहते हैं) बग़ैर किसी उज़र के (यानी. एक सही सबब जिसे इस्लाम ने बताया हो) छोड़ता हैं, जब तक के वो फौरन उसकी कज़ा अदा नहीं कर लेता, (जिसका मतलब है एक खास इस्लामी अहकाम को अदा करना जिसे एक शख्स उसके मुर्करर वक्त में अदा नहीं कर पाया या छोड़ दिया,) उसके बाद अदा की गई उसकी कोई भी नमाज़ की इबादतें कुबूल नहीं की जाएंगी।अगर उसके बाद

अदा की गई नमाज़ की इबादतें सही तरीके से अदा की गई और इख़लास के साथ और उसके उसूलों को मददेनज़र रखते हुए, वो सही हो सकती हैं, यानी, वो अपनी नमाज़ की अदाएगी के फ़र्ज़ को निभा रहा है और अपने आपको गुनाहों (उनको बिल्कुल अदा न करना) से बिल्कुल परे रखता है। ये कहना के उन नमाज़ की इबादतों में से कोई भी कुबूल नहीं की जाएगी इसका कहने का मतलब हैं के उसे कोई सवाब (ईनाम और रहमतें) हासिल नहीं होगा जिसका अल्लाह तआला ने वादा किया है, और ये के वो उनसे कोई फाएदा हासिल नहीं कर पाएगा। रोज़ाना की पाँच फर्ज़ नमाज़ों की इबादतों से मज़ीद सुन्नत नमाज़ की इबादतें अदा की जाती हैं सवाब हासिल करने के लिए (जो अल्लाह तआला ने वादा की हैं)। चूँकि उस शख्स के ज़रिए अदा की गई सुन्नत नमाज़ की इबादतें कुबूल नहीं की जाएंगी, वो बेकार में उन्हें अदा करेगा वो नमाज़ की सुन्नत इबादतें उसके लिए किसी फाएदे की नहीं हैं। इसलिए, एक शख्स जो एक खास नमाज़ की फर्ज़ इबादत को छोड़ता है उसे उस इबादत की कज़ा फौरन अदा कर लेनी चाहिए। अगर उसकी कई इबादतें हैं जो उसने अदा नहीं कीं, तो जैसे वो रोज़ाना की पाँच वक्त की नमाज़ की सुन्नतें अदा करेगा, उसे उस नमाज़ की इबादत की नीयत (इरादा) कर लेनी चाहिए जो उसने (उसके मर्करर वक्त में) अदा नहीं की थी, इस तरह वो अपने आपको सख्त अज़ाब से बचा सकता है जो उस पर नाज़िल होगा नमाज़ अदा न करने का, चुँकि वो अब कज़ा अदा कर रहा हे सौदे की तरह, उसकी नमाज़ का कर्ज़ जितना जल्दी मुमकिन होता है मिल जाता है और उसे सुन्नते अदा करने का भी सवाब हासिल हो जाता है। जब नमाज़ की फर्ज़ इबादतें किसी (सही सबब की वजह से) उज़र की वजह से छूटती हैं तो तब ये मामला नहीं होता। ये हदीस-ए शरीफ़ (ऊपर बताई गई हैं) उन नमाज़ की इबादतों के लिए हैं जो किसी उज़र की वजह से नहीं बल्कि सुस्ती की वजह से छोड़ी गई थीं। **सआदत अबदिया** के चौथे हिस्से के तेईसवें बाब में इस मज़मून पर काफ़ी तफ़सीली जानकारी है।

चौथा बाब

जब फरिश्ते जिनके नाम मुंकर और नकीर हैं फाजिर से पूछेंगे, यानी काफ़िर से, “मन रब्बोका (तुम्हारा रब कौन है),” वो कहेगा, “मुझे नहीं मालूम।” वो जवाब देंगे, “तुम नहीं जानते, तुम्हे याद नहीं।”

फिर वो उसे लोहे के कोढ़े से मारेंगे, ताकि वो ज़मीन की सातवीं सतह के नीचे पहुँच जाए (नीचे जाने वाली तरतिब में)। उसके बाद ज़मीन हिलेगी, और वो वापस अपनी कब्र में उठेगा। सात बार उसको मारा जाएगा। ये वाक्यात जो ये लोग सहेंगे तबदील होते रहेंगे। उनमें से एक के अमाल, मिसाल के तौर पर, (यानी बुरे काम जो उसने दुनिया में किए,) कुत्ते की वजह में आएगा, जो उसे लगातार काटता रहेगा ताकयामत तक। ये वो लोग हैं जो मरने के बाद उठाए जाने पर और इस्लाम के ज़रिए बताए गए हकाईक पर शकूक करते थे। कब्र के अंदर लोगों को मुखतलिफ़ हालात को बरदाश्त करना होगा। अगरचे, हमने यहाँ पर उनका सिर्फ़ मुख्तसर हवाला दिया है। अज़ाब इस फितरत का होगा के हर फरद को जिससे वो दुनिया में सबसे ज़्यादा खौफ़ज़दा होता होगा उससे अज़ाब दिया जाएगा।

मिसाल के तौर पर, कुछ लोग खूँखार जानवरों के बच्चों से डरते हैं। मुखतलिफ लोगों की मुखतलिफ फितरत होती हैं। हम अल्लाह तआला से निजात की और माफ़ी की भीक मांगते हैं इससे पहले के बहुत देर हो जाए।

मरने वालों से तआल्लुक रखते हुए कई वाक्यात हैं; वो सपने में नज़र आते हैं, पूछा जाता है वो कैसे हैं, और वो जवाब देते हैं। मिसाल के तौर पर, उनमें से एक से, जब पूछा गया के वो कैसा है मंदरजाज़ेल वाक्या बतायाः “एक दिन मैने बग़ैर वुज़ू के नमाज़ अदा की थी। अल्लाह तआला ने एक जवान भेड़िया मुझे परेशान करने के लिए नाफिज़ कर दिया। मुझे उस दरिंदे से

बड़ी परेशानी हुई।" [ये हवाला इस बात पर गौर करने में मदद करेगा के जो लोग नमाज़ अदा नहीं करते और जो छोड़ी हुई और खोई हुई नमाज़ की कज़ा अदा नहीं करते उनके लिए क्या चीज़ इंतज़ार कर रही है।]

एक दूसरा शख्स ने सपने में देखा और उससे पूछा गया अल्लाह तआला ने उसके साथ क्या बरताव किया। उसने कहा, "एक दिन मैने अपने आपको जनाबत की हालत से पाक करने के लिए गुस्ल नहीं किया। अल्लाह तआला ने मुझे आग की कमीज़ पहनाई। वो मुझे इसमें कभी इस तरफ और कभी उस तरफ पलट कर अज़ाब देते है, और ये कयामत तक जारी रहेगा।" मुसलमान वालदेन के हर जोड़े को आपने बच्चों को गुस्ल करना सिखाना चाहिए। बराएमहरबानी 'गुस्ल' के लिए **सआदत अबदिया** के चौथे हिस्से के चौथे बाब को देखिए।)

दूसरे शख्स को सपने में देखा गया और उससे पूछा गया, "अल्लाह तआला का तुम्हारे साथ कैसा बरताव है?" मरे हुए शख्स ने कहा, "वो शख्स जो मुझे नहला रहा था उसने सख़्ती से मुझे एक तरफ से दूसरी तरफ़ पलटा, बैंच की एक लोहे की कील ने मेरे जिस्म को खुरेच दिया। उसने मुझे बुरी तरह ज़ख्मी कर दिया।" जब सुबह उस शख्स से पूछा गया जिसने मय्यत को नहलाया था, तो उसने कहा ये सही है। "ऐसा हुआ था, अगरचे बेखबरी में हुआ था," उसने इज़ाफा किया।

एक दूसरे सपने में देखा गया और उससे पूछा गया, "तुम कैसे हो? क्या तुम उस दिन नहीं मरे थे?" "हाँ मैं मर गया था," उसने जवाब दिया। "मैं खैर की हालत में हूँ, यानी मैं यहाँ अच्छा हूँ। ताहम, जब वो लोग मेरी कब्र में मिट्टी डाल रहे थे, तो एक पत्थर का टुकड़ा मेरे जिस्म पर गिर गया और मेरी दो हड्डिया टूट गईं। जिससे मुझे बहुत तकलीफ़ हुई।" इस पर उन लोगों ने उसकी कब्र खोली और देखा के जैसा उसने कहा था वैसा ही था।

एक शख्स उसके बेटे के सपने में आया और अपने बेटे से बोला, "ए तुम, बुरे लड़के! बाप की कब्र में चीज़ें सही रखो! क्योकि बारिश ने बहुत ज़्यादा परेशान किया है।" इस पर उन लोगों ने उसकी कब्र खोली। वाकई, वो आबबाशी की खंदक बनी हुई थी। सैलाब ने उसको भर दिया था।

एक अरबी (बददू अरब) से रिवायत हैः जब मैने अपने (मरे हुए) बेटे से पूछा अल्लाह तआला ने उससे कैसा बरताव किया, उसने कहा, मैं ठीक हूँ। फिर भी, क्योंकि मैं एक फासिक शख्स की कब्र के नज़दीक दफनाया गया हूँ, मेरा दिल खौफ महसूस करता है उसके ऊपर अज़ाब होने की वजह से।" जैसे इन कहानियों से और दूसरी बहुत सी इसके मुताबिक कहानी से वाज़ेह हैं, के मरने वाले लोग अपनी कब्रों में अज़ाब झेलते हैं। इस बात के लिए, हमारे मुबारक नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम' ने लाश की हड्डिया तोड़ने के लिए मुमानियत फरमाई और, जब एक दिन आपने किसी को कब्र के एक तरफ बैठा देखा तो आपने फरमाया, **"मरे हुओं को उनकी कब्रो में तकलीफ़ मत दो"** और **"जिस तरह ज़िंदा लोग अपने घरों में समझ और दुख और तकलीफ़ महसूस करते हैं, इसी तरह मुरदा लोग अपनी कब्रों में समझ और दुख और तकलीफ़ महसूस करते हैं।"**

जब हमारे मुबारक नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' अपनी मुबारक माँ हज़रत आमना की कब्र पर गए, तो आप रोने लगे और इसी तरह साथ में जो लोग थे उन्होने किया। आपने वाज़ेह कियाः **"मैने अपने रब** (अल्लाह तआला) **से इजाज़त के लिए पूछा ताकि मैं उनकी तरफ़ से बखशिश के लिए उसे पुकार सकूँ। उसने मुझे ऐसा करने की इजाज़त देने से इंकार कर दिया।"** फिर आपने फरमायाः **"जब मैने उसे पुकारा के उनकी कब्र पर आने की इजाज़त के लिए, उसने मुझे इजाज़त दे दी। तो, तुम भी कब्रों पर जाया करो। इस तरह के दौरे मौत को याद करने का सबब है।"** [उसके बाद, रसूलुल्लाह को आपके वालदेन की जानिब से मआफ़ी के लिए अल्लाह तआला

को पुकारने की इजाज़त दी गई थी। वो पहले से ही ईमान वाले थे। वो ज़िंदगी में वापस (आरज़ी तौर पर) लाए गए, ताकि वो इस उम्मत (मुसलमानों) में शामिल हो सकें।

इस हदीस-ए-शरीफ़ से ज़ाहिर होता है के अल्लाह के नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' के मुबारक माँ और बाप ईमान वाले थे। काफिरों की कब्रों का दौरा करना मना है। उनके माँ बाप की कब्रों का दौरा करने की इजाज़त मिलना इस हकीकत का साफ़ इशारा है के वो ईमान वाले थे। आपको अपने वालदेन की माफ़ी के लिए इजाज़त ना मिलना इसकी वजूहात हैंः जनाब-ए हक, ने अपने हबीब (प्यारे) के मफ़ाद और इज़्ज़त के लिए, आपके मुबारक वालदेन के लिए और आला नेमत रखी हुई थी। जब उसकी वसीयत और हुकूम का वक्त आया, वो उन्हें ज़िंदगी की तरफ वापस लाया और इस तरह उन्हें इस हकीकत को दिखाया के उनका बेटा सब नबियों में अव्वल हैं, और इसलिए वो उनमें ईमान रखें, आपकी उम्मत (मुसलमानों) में शामिल होने का और सहाबियों के ऊँचे दरजे में शुमार होने का फखर हासिल करें।

मिरात-उल-काएनात नाम की किताब में सफह दो सौ सताईस/**227** पर मंदरजाज़ेल तरीके से बयान हैं और जिसे निशानजिज़ादा मुहम्मद बिन अहमद एफ़ंदी रहमतुउल्लाहि अलैहि, (डी. **1031** [**1622** ए.डी.] ने लिखा था।

इस्लामी आलिम अपने इस बयान पर एक मत नहीं रखते के क्या रसूलुल्लाह 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' के मुबारक वालदेन ने (आपकी नब्बुवत पर) ईमान लाए या नहीं। इस मामले पर **मसालिक-उल-हनफ़ा** नाम की किताब में पाँच मुख्तलिफ हिकायात हैं और इसे

अवद-उर-रहमान विन अवू वकर सुयूती (ही.**911** [**1505** ए.डी.]) ने लिखा है, और अपनी दूसरी वहुत सी कीमती किताबों में भी लिखा हैः

1- दोनो इस्लाम से पहले वुतपरस्ती के ज़माने में चल वसे थे, रसूलुल्लाह की इस्लाम की दावत देने से पहले; यानी, विसात (वेसात) से पहले। शाफि-ई मसलक के सारे आलिमों और हनफ़ी मसलक के ज़्यादातर आलिमों के मुताविक, अगर एक शख्स नवी के मज़हव के वारे में नहीं सुनता, तो उस पर ये वाजिव नहीं है के वो उस मज़हव पर ईमान (यकीन) रखे। क्योंकि, ये वाजिव नहीं है के एक नवी के मज़हव के वारे में सुनने से पहले उसे गहराई और वजूहात के ज़रिए जान लिया जाए। उसके सुनने के वाद, ये वाजिव हो जाता है के गहराई से सोचा जाए और अल्लाह तआला की मौजूदगी का नतीजा निकाला जाए और उस पर ईमान रखा जाए। इस्लाम आने से पहले वुत परस्ती के ज़माने, (जिसे दौर-ए-जाहिलिया कहते हैं) तक पिछले नवियों को भूला दिया गया। क्योंकि, कई सदियों तक, काफिर और जाहिल हुकूमरानो ने ताकत छीनी हुई थी, मज़हवों को जड़ से उखाड़ फैंका, मज़हवी आदमियों पर जुल्म करते थे और उन्हें परेशान करते थे, और इसलिए ईमान वालों की तादाद कम हो गई सिर्फ कुछ भागे हुओ तक, मज़हव या अकीदे के नाम पर धूँधले अंदाज़ों के साथ नादिर को पहुँच गई। इसके अलावा, हर सदी में ज़ालिम काविज़ और गंदी सोच वाले और कम ज़र्फ़ इंसानी शैतान थे जिन्होने मज़हव से परे रखने के लिए वही खतरनाक तरीके अपनाए और ईमान वालों पर वहशियों की तरह हमले किए और उन्हें मज़हव से दूर रखा। इश्तराकी और अंग्रेज़ ऐसी गुंडागर्दी के नमूने हैं। अभी तक, अगरचे, उनमें से कोई भी शैतानी ज़ालिम अपने नेस्तो नावूत करने वाले पलान में कामयाव नहीं हो पाए, जिसमें सिर्फ़ ईमान की तवाही नहीं थी, वल्कि दुखदायक खुद की तवाही थी, इसके वाजाए; वो सव अपनी हुकूमतों कढ़वाहट और नाउम्मीदी की टूटी हुई महसूसात के साथ छोड़ गए,

आखिरकार मौत के चुंगल में फँस गए, या तो गालियों और कोसनों से याद किए गए या फिर हमेशा के लिए भूला दिए गए।

अल्लाह तआला ने एक नबी या एक आलिम की तखलीफ की और इस तरह ज़मीन को नए सिरे से रोशन किया।हकाईक ओर वाक्यात ने साहिबे अकल लोगों को सबक सिखाया, और उन्होने मज़हब के दुश्मनों पर यकीन नहीं किया के कहीं उन्हें दुनिया में और आखिरत में शार्मिंदा न किया जाए।

2- यहाँ ऐसे भी आलिम हैं जो कहते हैं, "लोग जो दौर-ए-जालिया में रहते थे उन्हें एक इम्तहान देना पड़ता था, और जो ईमान को रखना पसंद करते थे जन्नत में दाखिल होते थे।" अगरचे, **मकतूबात** (इमामे रब्बानी के ज़रिए) के **259**वें खत में, ये हिकायत कमज़ोर हैं। (बराए मेहरबानी **सआदत अबदिया** के दूसरे हिस्से के दूसरे बाब को देंखे।)

3- अल्लाह तआला अपने मुबारक नबी सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक वालदेन को वापस ज़िंदगी में लाया उन्होने अपने बेटे की (नब्बुवत में) ईमान (यकीन) रखने की कसम खाई और दोबारा रहलत फरमा गए।इमाम-ए-सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि ने इस हदीस-ए-शरीफ़ का हवाला दिया के वो वापस ज़िंदगी में लाए गए, और मज़ीद कहा, "ये हदीस-ए-दाईफ़ हैं।बराएमहरबानी हदीस की किस्मों के लिए **सआदत अबदिया** के दूसरे हिस्से के छठे बाब को देखिए।) ताहम ये एक माकूल हदीस बन गई हैं क्योंकि ज़्यादातर लोगों ने बयान किया है।आलिमों की अमारयत के मुताबिक ये एक माकूल हदीस है।एक दाईफ़ हदीस जो एक खास मुसलमान की बरतरी बताए या इबादत के कामों की कीमत बताए तो उसकी तकदील करनी चाहिए।"

4- फखर-उद-दीन राज़ी (रए के, इरान, ही.**606** [**1209** ए.एच.], हेरात,] ओर दूसरे बहुत से आलिमों ने बयान दियाः सूरह तौबा की अठाईसवीं आयत-ए-करीमा का मतलब हैः **असनाम परस्त नजस है** (मैले, गंदे, नापाक)।" दूसरे लफ़्ज़ों में, सारे काफिर मैले हैं 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने फरमायाः "**हर ज़माने में मैं पाक बापों और पाक माँओ से गुज़रा हूँ।**" दूसरी हदीस-ए शरीफ़ इस तरह पढ़ी जाएगीः "**हर सदी में मैं उस वक्त के नेक साअत लोगों से मुंतकित हुआ हूँ।**" ताहम, इस बात की इजाज़त नहीं है के एक काफिर के लिए 'नेक साअत' का लफज़ इस्तेमाल किया जाए।असल में सूरह शुअरा की **219** वीं आयत-ए-करीमा का मतलब हैः "**वो आपको लोगो से मुनतकिल करता है जौ खुद निशस्तो बरखास्त देखते हैं।**" इस लिए, उनके सारे बाप और माँ ईमान वाले हैं।कुरआन अल-करीम में बयान हैं के आज़र, जो इब्राहीम अलैहिस सलाम के बाप कहे गए, वो एक काफ़िर थे।ताहम, अबदुल्लाह इबनि अब्बास और इमाम मुजाहिद ने कहा के वो इब्राहिम अलैहि सलाम के चाचा थे।अरब में चाचा को 'बाप' बुलाते हैं।हदीस-ए-शरीफ़ में बयान हैः "**दोज़ख में सबसे कम/हल्का अज़ाब वो अज़ाब होगा जो अबू तालिब पर किया जाएगा।** "चूँकि, एक तरफ़ अबू तालिब का अज़ाब सबसे हल्का बताया गया है और, दूसरी तरफ़, रसूलुल्लाह के मुबारक वालदेन को हल्का अज़ाब सहना पड़ेगा क्या वो दोज़ख में थे, ऊपर बताई गई हदीस-ए शरीफ़ ये बताती हैं के वो दोनों ईमान वाले थे।

5- ज़्यादातर आलिमों ने हमें इस नाज़ूक मामले में कुछ भी गलत बोलने से तंबीह की हैं और चुप रहने की सलाह दी है या सिर्फ़ ये कहना चाहिए के इस मामले की सच्चाई अल्लाह तआला जानता है।शैख़-उल-इस्लाम अल्लामा अहमद इबनि कमाल पाशा ने अपने किताबचेह जिसका नाम **अबवएन** (या एबवएन) हैं के आखिरी हिस्से में मंदरजाज़ेल हवाला दिया हैः हदीस-ए-शरीफ़ के मुताबिक जिसे इस तरह पढ़ा जाएगाः "**मरे हुए लोगों के**

बारें में गलत बोलकर ज़िंदा लोगों को तकलीफ़ मत पहुँचाओ।" और सूरह तौबा की बासठवीं आयत-ए-करीमा, जिसका मतलब हैः **"अल्लाह उन लोगों की मज़मत करे जो अल्लाह के नबी को नुकसान पहुँचाए।"**, एक शख्स जो कहे के रसूलुल्लाह के बाप दोज़ख में हैं वो खुद एक मलऊन है।ये उस इकतेबास का खात्मा है जो हमने **मिरात-उल-काएनात** से लिया।

जब हमारे मुबारक नबी अलैहिस-सलाम कब्रिस्तान में होते तो आप फरमातेः **"दुनिया में और आखिरत में उन मुसलमानों और ईमान वालों पर सलामती हो जो यहाँ कब्रों में हैं।हम, इंशा-अल्लाह, तुम में शामिल होंगे।तुम हम से पहले ये दुनिया छोड़ गए।हम तुम्हारी मिसालों की तकलीद करेंगे और वहीं रहेंगे।ऐ रब! हमारी और इन लोगों पर भी मग़फिरत फरमा, और हमें हमारे गुनाहों से माफ़ फरमा दे।"** हमारे आका मुबारक नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' अपनी बीवियों को जब कभी वो कब्रिस्तान जाती थीं तो यही अल्फ़ाज़ (दुआ) कहने का हुकूम देते थे।

सालिह-ए-मज़नी रहिमाहुल्लाह से रिवायत हैः मैंने कुछ आलिमों से पूछा के हमारा कब्रिस्तान में नमाज़ अदा करना क्यों मना है।उन्होने इतलाअ दी के इसके बारे में एक हदीस-ए-शरीफ़ है, और हदीस-ए-शरीफ़ का हवाला दिया जो इस तरह पढ़ी जाएगीः **"कब्रों के बीच नमाज़ अदा नहीं करो।क्योंकि ये न खत्म होने वाली लालसा है।"** इसका मतलब हैंः "आपको इससे अफसोस रहेगा।" [इसमाईल मुज़नी इमाम शाफ़ि-ई के शार्गिद थे।वो मिस्त्र में **264** [**878** ए.डी.] में रहलत फरमा गए।

इस वजह से ऐसी जगहों पर, जहाँ नजासत हो, मिसाल के तौर पर कब्रों के बीच या एक गुस्लखाने में नामज़ अदा करना मकरूह हे एक बाबरकत शख्स के इख्तियार के मुत्अलिक हैः एक दिन मैंने कब्रों के बीच में नमाज़ पढ़नी शुरू की।सूरज पूरा गरम था उस वक्त मैंने अपने बाप से मिलता जुलता कुछ

देखा। वो अपनी ही कब्र पर बैठे थे। मैं डर गया था, इस वजह से नमाज़ के सजदों (झुकने) में मैने गलती करदी। मैने उन्हें कहते हुआ सुना, "क्या जमीन इतनी छोटी हो गई के तुमने यह जगह चुनी?"

'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने एक यतीम को उसके बाप की कब्र के पास रोते हुए देखा। यतीम पर अफसोस करते हुए, मुबारक नबी रोने लगे, और फरमायाः **"यकीनी तौर पर मुरदा उसके रिश्तेदारों के ज़ोरदार रोने की वजह से अज़ाब में मुबतला होता है। इसलिए, दुख और अफसोस महसूस करता है।"**

बहुत से मुरदा लोग हैं, वो जब सपने में आते हैं और उनसे पूछा जाता है के वो कैसे हैं, तो वो कुछ लोगों के रोने, चिल्लाने की वजह से तकलीफ़ और अज़ाब में मुबतला होने की शिकायत करते हैं; ऐसा अकसर सुना गया है। ताहम, जिंदिक [जिनके रहनुमा उनके अपने कम-फहम दिमाग़ हैं,] इस असलियत से इंकार करते हैं।

हमारे आका, अल्लाह के नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने फरमायाः **"अगर तुम किसी मुरदा शख्स की कब्र पर जाओ जिसे तुम इस दुनिया में जानते थे सलाम करे के मोमिन तुम्हें जानता है और तुम्हारे सलाम का जवाब देगा।"**

एक और मौके पर, हमारे मुबारक नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने फरमायाः **"मुरदा** (कब्र में) **कदमों की आवाज़ सुनता है और अपने दुख की इतेलाह देता है ये कहते हुए, 'मैं सुन रहा हूँ, मैं सुन रहा हूँ,"** अपनी एक नज़रबंदी से वापस आने के बाद।

फिकह के ओलिमों की इखतियारत की रिवायत के मुताबिक, एक शख्स बग़ैर वसीयत करे मर गया। उस रात उसने उनके सपने में अपने घर का

दौरा किया, उनसे कहा, "फलाँ फलाँ को इतना अनाज दे देना। वो वाली किताब जिससे मैने ली थी उसके मालिक को वापस दे देना।" दूसरे दिन घर वालों ने एक दूसरे को वो सपना बताया। उन्होने (जिस आदमी का नाम बताया गया था) अनाज दे दिया। ताहम, उन्हें कोशिश करने के बावजूद वो किताब नहीं मिली। वो हैरान थे के किया करें, कुछ देर बाद उन्हें घर के एक कोने में वो मिल गई।

मंदरजाज़ेल एक मुबारक शख्स के मुतअल्लिक हैः हमारे बाप ने हमें पढ़ाने के लिए एक उस्ताद रखा। वो मुबारक शख्स हमारे घर आते थे और हमें सिखाते के किस तरह लिखना है। एक दिन वो चल बसे। छः दिन बाद हम उनकी कब्र पर गए। हम अल्लाह तआला के हुकूम के बारे में सोच रहे थे, जब हमने एक अंजीर की थाली ले जाते हुए देखी। हमने अंजीर खरीदी, उन्हें खाया, और उसके डंठलों को इधर उधर फेंख दिया। उस रात हमारे बाप ने हमारे उस्ताद को सपने में देखा और उनसे पूछा के वो कैसे हैं। उन्होने जवाब दिया, "मैं यहाँ बहुत अच्छा हूँ, और मेरे लिए सब चीज़ें बहुत अच्छी हैं। फिर भी तुम्हारे बच्चों ने मेरी कब्र को गंदी जगह बना दिया और कुछ बुरे अलफाज़ बोले।" जब दूसरी सुबह हमारे बाप ने हमसे पूछा, हमने कहा, "सुबहानल्लाह! जैसे वो हमें दुनिया में नज़्मों ज़बत सिखाते थे, वो अब भी हमें नज़मों ज़ब्त सिखा रहे हैं अगरचे वो दूसरी दुनिया में जा चुके हैं। इसी तरह की और दूसरी कहानियाँ भी बताई गईं। ताहम, मैने अपने आपको इतनी ही सलाह के मवाद तक रखा, ताकि एक मुख़तसिर मशवरा खुद एक नतीजा खेज़ सबक में पैदा हो।

पाँचवा बाब

मुरदे लोग अपनी कब्रों में चार मुख्तलिफ़ हालतों में रहते हैं।उनमें से कुछ अपनी एड़ी पर बैठते हैं।ये उस हालत में उस वक्त तक रहते हैं जब तक के उनकी आखें घुल ना जाएँ, उनके जिस्म सूझ ना जाएँ, और वो मिट्टी में ना मिल जाएँ।फिर उसके बाद उनकी रूहें आलम-ए-मलकूत में दुनियावी जन्नत के बाहर सफ़र करती हैं उनमें से कुछ को अल्लाह तआला नींद दे देता है।वो नहीं जानते के उनके आस पास क्या हो रहा है जब तक के पहला सूर (तूरही) न बजे।वो पहले सूर पर जाग जाएंगे, और फिर दोबारा मर जाएंगे।बराए मेहरबानी **सआदत-ए-अबदिया** के छठे हिस्से के इक्कीसवें बाब को आलम-ए-मलकूत के लिए देखिए।)

कुछ लोग अपनी कब्रों में दो या तीन महीनें रहते हैं।फिर उनकी रूहें जन्नत के परिंदों पर सवार होती हैं, जो उन्हें जन्नत में ले जाती हैं।ये हकाईक हदीसों में लिखी हैं जो सही हैं।इस्लाम के मालिक 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने फरमायाः **"मोमिन की रूह परिंदों के पास होती हैं।ये जन्नत के पेड़ों में से एक पर लटकी रहती हैं।"**

इसी तरह, जब आपसे शहीदों की रूहों के बारे में पूछा गया, आपने फरमायाः **"शहीदों की रूहें, सब्ज़ परिंदो के झूंड में, जन्नत के पेड़ों से लटकी रहेंगी।**

कुछ लोग जब उनकी इच्छ हो अपनी कब्रों से उठ जाते हैं।कुछ लोग सूर फूँकने तक वहाँ रहेंगे।

चौथी हालत अनबिया (नबियों) और औलिया के लिए मखसूस हैं।उनमें से कुछ कयामत तक उड़ेंगे, और उनमें से ज़्यादातर रात में ज़ाहिर होते

हैं।मुझे यकीन हैं के अबू बक्र अस-सिद्दीक और उमर उल-फारूक 'रज़ी-अल्लाहु तआला' उनमें शामिल हैं।

'सरकारे दो आलम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' तीनों आलम (यानी आलम-ए-नासूत, आलम-ए-मलकूत, और आलम-ए-जबरूत।) में आज़ादी से दौरा कर सकते हैं।एक दिन हमारे मुबारक नबी ने अपनी दुआ से अपनी इच्छा का इज़हार मंदरजाज़ेल तौर पर इस हकीकत की तरफ़ इशारा किया: **"मैं अल्लाह तआला से दर्ख़ास्त करता हूँ के मुझे तीन से ज़्यादा** (मुददत) **के लिए ज़मीन के लिए पाबंद ना किया जाए।"** यकीनन तीसरी दस के खात्में पर, यानी, जब हज़रत अली को शहादत हासिल हुई अल्लाह के नबी की रहलत के तीस साल बाद (**40** हिजरी साल में) हमारे मुबारक नबी ने ज़मीन के लोगों को छोड़ा, और आपकी मुबारक रूह जन्नत की तरफ़ उठ गई, ज़मीन को हमेशा के लिए छोड़ गए।

कुछ सालेह (पाक, मुत्तकी, सच्चे) मुसलमानों ने इस हकीकत का सपना देखा।एक मुबारक शख्स ने दुआ की: "या रसूलुल्लाह! क्या मैं आपके लिए अपने वालदेन की कुर्बानी का एज़ाज़ हासिल कर सकता हूँ! क्या आप नहीं देख रहे जो फितने आपकी उम्मत (मुसलमानों) के ज़रिए हो रहे हैं? सबसे आला तखलीफ ने फरमाया: "**अल्लाह उनके फितनों को बढ़ाएगा। उन्होने हज़रत हुसैन को भी शहीद कर दिया।वो मेरे हक का मुशाहदा करने में नाकाम रहे हैं।"** और बहुत कुछ बयान किया गया: ताहम बताने वाले के हिस्से पर हमें शकूक थे इसलिए हमने बाकी कट कर दिया। (हज़रत हुसैन अल्लाह के मुबारक नबी के जवान नवासे थे।) शैतान अपने आपको किसी भी भेस में छुपा सकता है।ताहम वो किसी भी नबी के भेस में ज़ाहिर नहीं हो सकता।इसलिए, जब हम हमारे नबी अलैहिस-सलाम का सपना देखा गया, तो

यकीनन ये सही और सच्चा सपना है। इसलिए, ऐसा सपना हमारे लिए दस्तावेज़ी फिल्म की तरह कीमती हैं।

उनमें से कुछ, (मिसाल के तौर पर इब्राहीम अलैहिस-सलाम,) ने आसमान की सातवीं सतह को चुना, और वहीं रहें। मेराज, की रात हमारे मुबारक नबी अलैहिस-सलाम इब्रहिम अलैहिस-सलाम से मिलने गए थे। आपने उन्हें, मुसलमानों के बच्चों को शहीद नज़र से घूरते हुए, बैएत-ए-मामूर से पीठ झुकाए पाया।

ईसा अलैहिस-सलाम पाँचवे आसमान में हैं। हर आसमान पर रसूल और नबी हैं, जो कभी बाहर नहीं जाते या अपनी जगह को नहीं छोड़ते। वो वहाँ योमुलहश्र तक रहेंगे। चार पैगम्बरों जिन्हें जहाँ वो जाना चाहें जाने की इजाज़त मिली हुई है हज़रत इब्राहिम और हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिस-सलाम और हज़रत मुहम्मद मुसतफ़ा 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम'। ये (चारां पैगम्बर) (ऊपर बताई गई) इन तीनों आलम में किसी भी जगह जा सकते हैं। एक रसूल पैग़ाम लाने वाला होता है अपने खुद के निज़ाम के साथ, क्योंकि अल्लाह तआला उनके लिए एक नया मज़हब नाज़िल करता है। एक नबी, एक पैगम्बर ही की तरह, जो अपने पिछले पैगम्बर के निज़ाम को बहाल करते है।)

कुछ औलिया-ए-किराम योमुलहश्र तक (वक्फ़े) तवक्कुफ़ में रहेंगे। दरअसल, कहा जाता है के बायज़ीद बिसतामी रहिमउल्लाहु तआला अरश-ए-आला के नीचे खाने की मेज़ पर खाते हैं।

ये चार मुखतलिफ़ हालतें हैं जिसमें लोगों को कब्रों में रखा जाता हैं। वो ये के, वो अज़ाब पाते हैं, रहम पाते हैं, बेइज़्ज़त होते हैं, और तारीफ़ किए जाते हैं।

औलिया-ए, किराम रहिमहुल्लाहु तआला में बहुत से लोग थे जो मरते हुए शख्स को गौर से देखते थे। उस शख्स के लिए चौड़ी हदें पतली हो जाती हैं। कई वक्त में वो चौड़ी हो जाती हैं। वो मुबारक लोग देखते हैं और उसकी इत्तेलाह देते हैं। मैने लोगों को ऐसे वाक्यात के बारे में बताते हुए देखा है।

मैंने अपने कुछ दोस्तों को ऐसे अजाएबात से नवाज़े जाते हुए देखा हैं, उनके दिलों की आँखों **के** ढ़के हुए पर्दे उठ जाते हैं और वो ऐसे वाक्यात महसूस करते हैं जो आमतौर पर गैर-महसुस होते हैं। मिसाल के तौर पर, उनमें से एक, ने अपने मरे हुए बेटे को घर में दाखिल होते हुए देखा। ये बातिनी (राज़) फाएदे और रहमदिली खासतौर से करीम (उदार, मेहरबान), नसीब (अच्छी नसल, अच्छे खून) वाले और मुबारक (बरकत वाले) लोग होते हैं। बराए मेहरबानी **सआदत अबदिया** के छठे हिस्से के बीसवें और उढ़तीसवें बाबों को देखिए।)

कुछ लोग कब्रों में जुमे और ईद के दिनों को जानते हैं। जब एक शख्स दुनिया छोड़ता (यानी मर जाता है) वो उसके पास जमा हो जाते हैं। वो उसे जानते हैं। उनमें कुछ अपनी बीवियों के बारे में पूछते हैं, और कुछ दूसरे अपने बापों के बारे में पूछते हैं। उनमें से हर एक अपने मुतअल्लिक सवालात पूछते हैं।

कभी कभी एक नए मरे हुए शख्स जानता है के जिन लोगों को वो दुनिया मे जानता था उनमें से एक शख्स जो उससे पहले मरा था वो गायब है, इसकी वजह है के वो शख्स दुनिया में अपनी ज़िदगी भर का सब कुछ मरते वक्त खो चुका था। कुछ लोग जो ईमान के नुकसान को भुगतते हैं वो यहूदी के तौर पर मरते हैं, जबकि कुछ ईसाइयों की तरह मरते हैं और वहाँ उनमें शामिल हो जाते हैं। जब एक शख्स दुनिया को छोड़ता है और दूसरे मुरदा लोगों से मिलता है, तो मुरदा लोग उससे दुनिया में अपने पड़ोसियों के बारे में पूछते हैं,

जब, मिसाल के तौर पर, वो उससे पूछते हैं, “फलां फलां कहाँ हैं?” वो कहेगा वो शख्स उसके मरने से बहुत पहले मर गया था। इस पर वो कहेंगे, “हमने उसे नहीं देखा। शायद वो दोज़ख हाविया (गहरी दोज़ख) में चला गया हो।”

जब किसी को सपने में देखा गया और पूछा गया के अल्लाह तआला ने उसके साथ कैसा बरताव किया, उसने अपने पाँच दोस्तों का नाम बताए और कहा, “हम सबको बहुत अहसान और नेमते हासिल हुई।” उसे और उसके दोस्तों को खवारिजियों और यज़ीदियों ने कत्ल किया था। जब उसने अपने पड़ोसी के बारे में पूछा, तो उसने कहा, “हमने उसे नहीं देखा। उसके पड़ोसी ने अपने आपको दरिया में गिरा दिया था और डूब गया था। उसने अल्लाह तआला की कसम खाई और कहा, “वल्लाहि, मुझे लगता है वो खुदकुशी के साथ है, वो के जो लोग खुद को कत्ल कर लेते हैं।” बराए मेहरबानी **सआदत अबदिया** के दूसरे हिस्से के चौतिसवें बाब और छत्तीसवें बाब के सातवें सब-चेपटर को, और सड़सठवें बाब के आखिरी हिस्से को भी देखिए

‘सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम’ ने फरमायाः **“अगर एक शख्स एक लोहे के टुकड़े के साथ खुदकुशी करता है, तो वो आखिरी इंसाफ़ के लिए अपने पेट को उस लोहे के टुकड़े से मारता हुआ आएगा। वो हमेशा के लिए दोज़ख में रहेगा। अगर एक शख्स अपने आपको एक पहाड़ से गिराकर कत्ल करता है, तो वो अपने आपको दोज़ख की आग में गिरा लेगा।”**

अगर एक औरत ऐसा करती है और खुदकूशी करती है, तो वो सूर फूँके जाने तक उसका दर्द महसूस करेगी। [इस हदीस-ए-शरीफ़ से उन लोगों से मुराद है जो अपने आपको इस दुनिया में देखभाल और परेशानियों से बचाने के लिए खुदकूशी करते हैं और सुकून और आराम हासिल करना चाहते है। जिसकी वजह, आखिरत में अज़ाब से इंकार की सोच आना है, जो असल में कुफ़्र (बेयकीनी) है। एक शख्स जो अपना दिमाग़ खो देता है और फिर

खुदकूशी कर लेता है, या जो खुदकूशी की कोशिश के बाद फौरन नहीं मरता और इस पर पछताने की वजह से तौबा कर लेता है, तो वो एक काफ़िर नहीं बनता।]

एक सही हिकायत के मुताबिक, आदम अलैहिस-सलाम की मूसा अलैहिस-सलाम से मुलाकात हुइ मूसा अलैहिस-सलाम ने उनसे कहाः "तुम वो शख्स थे जिसे अल्लाह तआला ने अपनी ताकत से तखलीक किया; उसने तुम्हें एक रूह दी; उसने तुम्हें अपनी जन्नत में रखा। तुमने उसकी नाफरमानी क्यों की?" आदम अलैहिस-सलाम ने उनसे कहाः "या मूसा अल्लाह तआला ने तुम्हारे साथ बातचीत की और तुम पर तौरह नाज़िल की। क्या तुमने तौरह में वो लिखा हुआ नहीं देखा जो कहता हैः एक ज़ेला (काबिले माफ़ी गुनाह, एक छोटा गुनाह, गलती) आदम के ज़रिए सरज़द हूआ, जिसने उसे अपने रब का नाफरमाबरदार बना दिया।" "हाँ, मैने पढ़ा है," मुसा अलैहिस-सलाम ने जवाब दिया। आदम अलैहिस-सलाम ने पूछा, ये मेरे गुनाह करने से कितने सालों पहले से मुकर्रर था। "मूसा अलैहिस-सलाम ने कहा, "ये तुम्हारे गुनाह करने से पचास हज़ार सालों पहले से मुकर्रर था।" आदम अलैहिस-सलाम ने बेरहमी से कहाः "फिर, या मुसा, तुम मुझे तंकीद कर रहे हो और उस गुनाह के लिए मुझे इल्ज़ाम दे रहे हो जो मेरे करने से पचास हज़ार सालों पहले से ही मुकर्रर किया जा चुका था, क्या तुम ऐसा नहीं कर रहे?"

उनके दरमियानी ये बातचीत **सआदत अबदिया** के तीसरे हिस्से के चालीसवें बाब में वाज़ेह तौर पर तफ़सील से लिखा हुआ है, जहाँ इस मामले पर लंबा मज़मून है और जो जवाब आदम अलैहिस-सलाम के ज़रिए दिया गया है वो इस तरह दूसरे शब्दों मे बयान हे ः "ये तुम्हारी अच्छी बात नहीं के तौरह पढ़ने के बावजूद तुम मुझ पर इल्ज़ाम लगा रहे हो। अल्लाह तआला अवद में पहले से जानता था के मुझे चुना जाएगा और ऐसा कराया जाएगा और तुम बहुत सारे फायदों के बारे में जानते हो जो इस काम से पैदा होंगे।"

ये एक हदीस-ए-शरीफ़ में बयान हैः मेराज की रात, 'सरकारे दो आलम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' और दूसरे पैग़म्बर अलैहिम-उस-सलवात-उ-व-तसलीमात ने दो रकात नमाज़ अदा की। आपने हारून अलैहिस-सलाम को सलाम किया जिन्होने बदले में सलाम का जवाब दिया और मुबारक नबी और आपकी उम्मत (मुसलमानों) पर रहमत की दुआ की।

आपने इदरीस अलैहिस-सलाम को भी सलाम किया, और उस नबी ने भी हमारे पैगम्बर अलैहिस-सलात-उ-व-सलाम और आपकी उम्मत पर अल्लाह तआला की रहमत (शफ़कत, हमदर्दी) की दुआ की। हारून अलैहिस-सलाम हमारे पैगम्बर 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहिस वसल्लम' (अल्लाह तआला) के ज़रिए पैगम्बर बनाए जाने से पहले रहलत फरमा गए थे। ये (हज़रत हारून) की रूह थी जो ज़ाहिर हुई थी। क्योंकि वो ज़िंदगी एक रूहानी ज़िंदगी (हयात-ए रूहानी) है।

इस दुनिया में ज़िंदगी के बाद, वहाँ पर एक तीसरी ज़िंदगी है। पहली ज़िंदगी, वो है, ज़िंदगी में आना, ये ज़िंदगी है जब अल्लाह तआला ने आलमियत को आदम अलैहिस-सलाम की कमर से जारी किया, और उन्हें एक वादे के ज़रिए जाँचा, उनसे ये पूछते हुए, **"क्या मैं तुमहारा रब नहीं हूँ?"** इस पर वो जवाब देते हैं, "हाँ, या रब्बी, हम कुबूल करते हैं के तू हमारा रब है।" इस दुनिया में ज़िंदगी कोई ऐसी कीमती चीज़ नहीं मानी जाती। क्योंकि, ये ज़िंदगी आरज़ी है, महज़ एक जगह से दूसरी जगह जाना जिसमें तमाम आरज़ी रहने वालों को नेमतों के लिए जाँचा जाता है जिससे वो फाएदा उठाने वाले हैं।

हमारे मुबारक पैगम्बर 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने फरमायाः **"आदमी सो रहे हैं; मौत उन्हें उठा देती है।"**

ये हदीस-ए-शरीफ़ कब्र में ज़िंदगी की तरफ़ इशारा करती है।

कब्र में ज़िंदगी में हकाईक और हालतें वो हकाईक और हालतें हैं के जब मुरदा लोगों की सच्ची असलियत और सिफ़ात हो जाती है। कुछ मरे हुए लोग जहाँ हैं वहीं रहते हैं। उनमें से कुछ सफ़र करते हैं। उनमें से कुछ को मारा जाता है, जबकि दूसरों को सख्ती से अज़ाब दिया जाता है। इस हकीकत को जाँचने का ये मतन सबूत है जो सूरह मोमिन की छयालीसवीं आयत-ए-करीमा है, जिसका मतलब **"सुबह और शाम, फुज्जार आग के सामने लाए जाएँगे; और फरिश्ते** (इंचार्ज) **उस दिन हुकूम दिए जाएँगे के इंसाफ़ कायम किया जाएः "इन फिरओन के लोगों को सख्त अज़ाब के साथ उस जगह में रखो।"**

छठा बाब

जब अल्लाह तआला हुकूम देगा के यौमुलहश्र सूर फूकने के बाद वाक्य होगा, तो पहाड़ बादलों की तरह बहने लग जाएंगे। समुंद्र एक दूसरे के ऊपर, बहने लगेंगे। सूरज की रोशनी गायब होने लगेगी जब तक के सूरज पूरा काला नहीं हो जाएगा। पहाड़ धूल में बदल जाएंगे। दुनिया एक दूसरे से घुलमिल जाएगी। सितारे मोतियों की टूटी हुई डोरी की तरह बिखर जाएंगे। आसमान गुलाब के अत्तर की तरह घूल जाएंगे और चक्की की तरह चारो तरफ़ तेज़ी से चलेंगे। अब वो गेंद की शक्ल में बदल जाएंगे और फिर पूरे तौर पर सपाट हो जाएंगे। अल्लाह तआला हुकूम देगा के आसमान टुकड़ों में टूट जाएँ। ज़मीन की सातों सतहों में और आसमानी सातों सतहों में और कुर्सी में, अब ज़िंदा कोई नहीं बचेगा, कहीं कोई भी नहीं। हर कोई मर जाएगा; रूहानी मखलूक के लिए, उनकी रूहें उनको छोड़ जाएंगी। सारी मखलूक मर जाएंगी। ज़मीन पर कोई पत्थर एक दूसरे के ऊपर नहीं रहेगा। आसमानों में कोई ज़िंदगी बाकी नहीं रहेगी।

अल्लाह तआला खुद को खुदा के दरजे पर वाज़ेह करेगा, आसमान की सातों सतहों को अपने सीधे हाथ की ताकत में ओर ज़मीन की सातों सतहों को अपने उलटी हाथ की ताकत की तरफ़ लेकर ज़ाहिर करेगा और फरमाएगाः **"ए, तू, दुनियावी! कहाँ है वो कमज़ोर जिन्हें तूने बसाया हुआ था और जो खुदाई का दावा करते थे और जिन्हें बेवकूफ़ों के ज़रिए पूजा जाता था और** (कहाँ हैं) **वो लोग जिन्हें तेरी ज़ाहिरी दिलकशी और खुबसूरती ने धोके में रखा और वो आखिरत के बारे में भूल गए?"** उसके बाद वो अपनी मग़लूब और नेसतो नाबूद करने वाली ताकत और हिकमत की तारीफ़ करेगा। फिर वो सवालात करेगा, जैसे के सूरह मोमिन से वाज़ेह हैः **"मल्क** (हाकमियत) **किसकी है?"** कोई भी जवाब नहीं देगा। अल्लाह तआला खुद, कहार कौन है, वाज़ेह करेगा, जिसका मतलब ः **"ये जनाब-ए-अल्लाह की है, जो वाहिद और कहार है।"**

उसके बाद एक इरादा और कुदरत-ए-इलाहिया (पाक इच्छा और ताकत) पिछले वाले मंशूर से आला अयां/ज़ाहिर हुआ। फिर उसने वाज़ेह/मुश्तहिर किया, जिसका मतलब मंदरजाज़ेल तरीके से हैः **"मैं, अज़ीम उस-ज़यान** हूँ। [यानी, यौम-ए-इरतका का मैं हाकिम और आका हूँ।] **वो लोग कहाँ हैं जो मेरा दिया हुआ खाना खाते थे और फिर मेरे साथ साथियो को मंसूब करते थे ओर बुतों की पूजा करते थे और मेरे अलावा दूसरी मखलूक की? वो ज़ालिम हुकूमरान कहाँ हैं जो मेरे दिए हुए खाने की तवानाई मेरी नाफरमानी के कामों में इस्तेमाल करते थे? कहाँ हैं वो लोग जो अपने पर घमंड करते थे और अपनी तारीफ़ करते थे? अब कौन मुल्क है?"** वहाँ कोई नहीं जो जवाब देगा। हक सुबहानहु व तआला जितनी उसकी मरज़ी और हुकूम होगा, उतना लंबा इंतज़ार कराएगा, खामोशी होगी, क्योंकि वहाँ कोई बशर नहीं होगा सोचने के लिए या उस वक्त के अंदर देखने के लिए, अर्श-ए-आला

मकाम-ए-अहादियत तक कोई नहीं। इस वजह से के, अल्लाह तआला ने अपनी जन्नत के बाग़ावत से हूरों और ग़िलमानों की रूहों को भी निकाल लिया।

उसके बाद, अल्लाह तआला सकर से एक दरवाज़ा खोलेगा, दोज़ख के सबसे गहरे गढढों में से एक। वहाँ से आग निकल रही होगी। ये इतनी ताकतवर आग होगी के ये सब चीज़ें जला देगी, चौदह समुंद्रों को सुखा देगी, पूरी ज़मीन को काला कर देगी, और आसमानों को ज़ैतून के तेल की तरह या पिघले हुए तांबे की तरह पीला कर देगी। फिर, जैसे के आग की शिददत आसमानों के नज़दीक होगी, तो अल्लाह तआला इसे ऐसी हौलनाक ताकत से मनाही करेगा के वो पूरे तौर पर बंद हो जाएगी, बग़ैर किसी निशान छोड़े हुए।

उसके बाद, अल्लाह तआला अर्श-ए-आला के खज़ानों में से एक को खोलेगा। इसमें ज़िंदगी का समुंद्र शामिल होगा। वो समुंद्र, अल्लाह तआला के हुकूम से, ज़मीन पर सख़्त बारिश करेगा। बारिश लगातार काफ़ी समय तक होती रहेगी, इस वजह से पानी ज़मीन की पूरी सतह को ढ़क लेगा और चालीस अर्शि न (तकरीबन **27** मी.) तक ऊँचा उठ जाएगा। इस पर इंसानी मखलूक और जानवर, जिनकी लाशें गल चुकी होंगी, वो घास की तरह बाहर उगल जाएंगे। दरअसल, ये हदीस-ए-शरीफ़ में बयान हैः **"आदमी रीढ़ की हडडी से तखलीक किया गया था और उसी रीढ़ की हडडी से दोबारा तखलीक किया जाएगा।"** दूसरी हदीस-ए शरीफ़ इस तरह पढ़ी जाएगीः **"इंसानी जिस्म के सारा आज़ा** (कब्र में) **गल जाएंगे, सिवाए रीढ़ की इस हडडी के, जो गलेगी नहीं। आदमी इससे ही तखलीक किया गया था। और इसके ज़रिए वो वापस लाए जाएंगे।"** [कोकसिक्स रीढ़ की हडडी के आखिरी सिरे की आखिरी हडडी है।] ये एक (तीकोनी और) चर्बी के बगैर हडडी है खशखश के दाने के बराबर।

सारी जानदार मखलूक और उनके आज़ा उनकी कब्रों पर हरी घास की तरह उग जाएंगे। उनमें से हर एक उस हडडी में से पैदा होगा। उन्होंने न घुसने वाला धागों का एक गुच्छा सा बनाया, जैसे जाल में होता है; उनमें से एक का सिर दूसरे के कंधे पर, उनमें से एक के हाथ एक तीसरे की कमर पर, और इसी तरह चौथा भी; वो बहुत ज़्यादा भीड़ में होंगे। अल्लाह तआला ने वाज़ेह किया, जैसा सूरह कफ़ की चौथी आयत-ए-करीमा का मतलब हैंः **"हम पहले से जानते हैं के उनमें से ज़मीन कितने ले चुकी है; हमारे साथ एक इंदराज निगेहबान है** (पूरा रजिस्टर)। **क्योंकि, हम जानते हैं जो कुछ हमने तखलीक किया।"**

जब ये उठाए जाने का मामला पूरा हो जाएगा और सारी मखलूक उनमें से हर एक उस हालत में उठ जाएगी जिसमें वो इस दुनिया से हिजरत कर गई थी, जो कि फना (गैर-मौजूदगी की) की दुनिया है आखिरत की तरफ़, बाकी की दुनिया (अबदी मौजूदगी), बच्चे बच्चों की तरह, बूढ़े लोग अभी भी बूढ़े, शऊर की उमर वाले लोग जैसे वो थे, जवान जवानों की तरह-, अल्लाह तआला अर्श-ए-आला के नीचे दिलकश हवा चलाएगा। हवा पूरी ज़मीन को ढ़क लेगी, इस तरह उसकी सतह नरम कवर में बदल जाएगी अच्छी रेत से बनी हुई।

उसके बाद, अल्लाह इसराफ़िल अलैहि-सलाम को ज़िंदा करेगा। जेरूसलाम में एक मुबारक पत्थर से सूर फूँका जाएगा। सूर एक सिंग की शक्ल में होगा नूर से बना हुआ; इसके चौदह हिस्से होंगे। उसके एक हिस्से पर ज़मीनी जानवरों की तादाद जितने छेद होंगे। उनमें से जानवरों की रूहें बाहर आएंगी। उनके जैसी मिलती जुलती आवाज़ मक्खियों के झूंड से सुनी जाएगी। वो ज़मीन और आसमान के बीच की खला पूरी भर देंगे। फिर हर रूह अपनी लाश में घुस जाएगी। हक सुबहानहु व तआला उनमें अपनी खुद की लाशों को पहचानने की जबलत भर देगा। यहाँ तक के वो लोग जो पहाड़ों में

मरे और जिन्हें वहशी दरिंदों और परिंदों ने खा लिया वो भी अपनी लाशें ढूँढ़ लेंगे। दरअसल, अल्लाह तआला ने सूरह ज़मर की बासठवीं आयत-ए करीमा में वाज़ेह किया जिसका मतलब हैः **"(पहले) सूर की फूँक की आवाज़ से सब खत्म हो जाएंगे, दूसरा सूर (बिगुल) सुनाई देने पर, जब, देखा जाएगा, सारी आलमियत फरमाबरदारी करेगी, खड़ी हो जाएगी और देखने लगेगी।"**

जब आदमी अपनी कब्रों से उठेंगे, उन जगहों से जहाँ उन्हें राख बना दिया गया और गल गए, वो देखेंगे के पहाड़ धूनकी हुई रूई के गलों की तरह है, समुंद्र बग़ैर पानी के है, और ज़मीन बग़ैर अपनी पहाड़ियों और घाटियों के है, हर चीज़ एक कागज़ की शीट की तरह सपाट है। जब लोग, नंगी हालत में, अपनी कब्रों पर बैठे होंगे, वो चारों तरफ़ अपने आप देखेंगे हैरान और सोच वाली हालत में। दरहकीकत, मुबारक नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने एक हदीस-ए-शरीफ़ में फरमाया जोकि : **"लोग** (इंसाफ़ के लिए) **बग़ैर कपड़ों के जमा होंगे, उनमें से हर एक नंगा और बग़ैर खतनो के होगा।"** ताहम, अगर एक शख्स बग़ैर कपड़ों के मरता है और गुरबत में, (यानी घर से दूर, अकेले,) वो जन्नत से लाए गए कपड़ों में लपेटे गए होंगे। शहीदों और उन लोगों के जिस्मों पर जो अपनी ज़िंदगी सुन्नत-ए-सनिया, (यानी अहकाम-ए-इस्लामिया) की मुकम्मल फरमाबरदारी में गुज़ार कर मरे वहाँ पर एक सूई के नाके के बराबर चौढ़ा हिस्सा भी ना हो और कुछ दिखाई देने के लिए ना छोड़ा गया हो। इसलिए, हमारे मुबारक नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने फरमायाः "ए मेरी उम्मत और सहाबा! अपनी मौत कफ़न के साथ खर्च करो! क्योंकि, मेरी उम्मत इंसाफ़ की जगह पर अपने कफ़नों में आएगी। दूसरी उम्मतें, अगरचे, नंगी होंगी।" ये हदीस-ए-शरीफ अबू सुफ़यान रज़ी अल्लाहु अनह के ज़रिए बयान की गई। हमारे नबी 'सल्ललाहु अलैहि वसल्लम' ने एक दूसरी हदीस-ए-शरीफ़ में फरमायाः **"मुर्दे इंसाफ़ की जगह पर अपने कफनों में लाए जाएंगे।"**

मैने एक विस्तरे-मरग पर पड़े हुए शख्स से सुना “मरे फलां फलां कपड़े मेरे पास लाओ,” जबकि वो मरने वाला था। वो उन्हें उनके कपड़े नहीं पहना पाए, इसलिए वो एक छोटी कमीज़ पहने हुए ही मर गए। और वो उनके लिए एक कफ़न ढूँढने में भी नाकाम रहे। कुछ दिनों बाद वो एक सपने में दिखाई दिए। वो उदास थे। जब उनसे पूछा गया के क्या मामला है उनके साथ, उन्होने कहा, “जो कपड़े मैं पहनना चाहता था तुमने मुझे उससे बचाए रखा। तुमने मुझे इंसाफ़ की जगह पर जमा होने के लिए मुझे इस छोटी कमीज़ को पहने हुए छोड़ दिया।”

सातवाँ बाब

ये बाब दो सूर की आवाज़ों के बीच में तवक्कुफ़ (खड़े होने, इंतज़ार, रूकने, ठहरने) **के बारे में जानकारी देता है।**

मौत जो पहली (सूर की) आवाज़ सुनकर होती है वो दूसरी मौत है। क्योंकि, ये मौत बातिनी (रूहानी, अंदरूनी) हवासो को खत्म कर देती है, जबकि मौत ज़ाहिरी (ज़िस्मानी) हवासो, [जैसे के बोलना, सुनना, चखना।] को खत्म कर देती है। इस मौत के बाद, (यानी पहली वाली,) लाशें हरकत के काबिल हो जाती हैं। [नबियों की अपनी कब्रों में नमाज़ अदा करने की हदीस-ए-शरीफ़ का हवाला इस हकीकत पर मोहर लगाता है बिदअती ईमान वाले इससे इंकार करते है।] दूसरी मौत के बाद, ताहम, वो नमाज़ अदा नहीं करते और वो रोज़े भी नहीं रखते। वो इबादत के कामों को सरअंजाम नहीं देते। अगर अल्लाह तआला एक फरिश्ते को किसी एक खास जगह रख दें, तो वो फरिश्ता यकीनन वहीं रहेगा। क्योंकि फरिश्ते भी ये इच्छा रखते है के वो अपनी खुद की (दुनिया) आलम में रहें। नफ़स [यानी.रूह] रूहानी है। अगर वो लाश में रहेगी, तो वो हरकत का सबब बनेगी। आलिम दोनो सूर (बिगुल)

के बीच मौत के वक्त के वक्फें पर इत्तेफाक राए नहीं रखते। आलिमों के अकसरियत के मुताबिक, ये चालीस साल तक रहता है।

एक मुबारक शख्स ने जिनको मैं मानता हूँ इल्म और मारिफात दोनो में मुकम्मल थे, मुझ से कहाः "सिवाए अल्लाह के इसे कोई नहीं जानता। ये इलाही (खुदाई) राज़ों में से एक है। ये आयत-ए-करीमा में वाज़ेह की गई है जिसे पढ़ा जाएगा, **...इल्ला मन शा अल्लाह**, क्या अल्लाह तआला अकेला है।" इस बयान के जवाब में मैंने उनसे पूछा, "मुबारक नबी अलैहिस-सलाम की इस हदीस-ए-शरीफ़ का क्या मतलब है जिसे इस तरह पढ़ेंगेः **"उठाए जाने वाले दिन में मेरी कब्र सबसे पहले खुलेगी। फिर मैं अपने भाई मुसा अलैहिस-सलाम को अर्श-ए आला पे पैर से अटके हुए पाया। मुझें नहीं पता के वो अपनी कब्र से मेरे से पहले उठा लिए गए, या वो उन लोगो में से है जिन्हें अल्लाह तआला ने छोड़ दिया?"**

हमारी समझ के लिए, अगर जो देखा गया वो रूहानी है और मुसा अलैहिस-सलाम की रूह जाहिर हुई जैसे के वो जिस्मानी थी, फिर ये छूटी नहीं होगी इस हदीस-ए-शरीफ़ में बताई गई हकीकत को वाज़ेह करने के लिए, और यही हाल तब है अगर ये अमर-ए-फज़ा के वक्त के दौरान में हुआ, यानी हुज़ूर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम' के छूटे जाने के बाद खौफ़ और दहशत का वक्त। क्योंकि, सारी जानवर तखलीक बहुत खौफ़ और (दहशत और डर) फज़ाअ में थी उस वक्त के दौरान। दूसरे अलफ़ाज़ में, जब पहला सूर फूँका जाएगा तो आदमी को बड़ा डर हिला देगा, इसलिए वो फौरन मर जाएगा। वो इस हालत में जब तक रहेगा तब तक दूसरी आवाज़ सूर की सुनाई ना दे। ये वो वक्त होगा जब कोई मखलूक लाश या जिस्म के नाम पर कुछ नहीं होगा। ये वो वक्त होगा जब ज़मीन हज़रत फखर-ए-आलम के लिए खुद खुल जाएगी।

दरहकीकत, हज़रत उमर रज़ी अल्लाहु अन्ह ने इतलाअ दी (मुसलमानों को जो उनके पास थे) के खौफ़ और दहशत इस दरजे तक महसूस होगी, के जब काब-उल-अहबार वो ताबईन में से एक है। पहले वो यमन के एक यहूदी थे, और उसके बाद इस्लाम को अपना लिया। वो एक आलिम थे जो तौरह में बड़े थे। उन्होने **32** [**652** ए.डी.] में हमस में रहलत फरमाई।) रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहाः "ए, तुम खत्ताब के बेटे! मैं सोचता हूँ अगर तुम सत्तर नबियों के ज़रिए अदा की गई इबादत के कामों को अदा कर लो, तो भी तुम उस वक्त के दौरान सख्ती और ग़म जो सहोगे उससे नहीं बच सकते; सिर्फ़ वो लोग जो इस मुश्किल वक्त में महफ़ूज़ है वो लोग है जिन्हें अल्लाह तआला छोड़ेंगा, और ये वो लोग होंगे जो आसमान की चौथी सतह में रहेंगे।" ये पक्का है के मुसा अलैहिस-सलाम उनमें से एक है। अल्लाह तआला के ज़रिए ये छूट का तौहफ़ा पाक सवाल के मुशतहिर होने से पहले का है, **"आज किसकी मुल्क** (हाकमियत) **है?"** अगर वहाँ कोई एक भी ज़िंदा शख्स होता इस **ऐलान** के दौरान, तो यकीनन वो जवाब ज़रूर देता, **"लेमन-इल-मुलक -उल-यौमा,"** और कहा, "ये बेशक तुम्हारा है, ए मेरे अल्लाह, जो वाहिद और कहार है।"

आठवाँ बाब

हर कोई अपनी कब्रों पर बैठ जाएगा, उनमें से कुछ नंगे, उनमें से कुछ काले कपड़ों में और कुछ सफ़ेद में, और दूसरे नूर फैलाते हुए। अपने सरो को लटकाए, और हारे हुए के क्या किया जाए, वो सब वहाँ हज़ारों साल से बैठे है। उसके बाद मग़रिब से एक आग ज़ाहिर होती है, और आवाज़ लोगों को महश्र (वो जगह जहाँ लोगो को इंसाफ़ के लिए जमा किया जाएगा) के मैदान में ले जाती। सारी मखलूक तब बहुत ज़्यादा खौफ़ से कांप रही है। उनमें से हर एक, इंसान, जिन, जानवर, सब अपने अमाल के ज़रिए पकड़े गए (यानी.पूरी

ज़िंदगी उनके अमाल के काम,) और उन्हे कहा गया के खड़े हो और महश्र के मैदान में पहुँचो।

अगर शख्स के अमाल खुवसूरत होंगे, तो कुछ लोगों के साथ गधे या खच्चर नज़र आएंगे जो उसके मालिक को पीठ पर बिठाएगा और महश्र के मकाम पर ले जाएगा, कुछ लोगों के अमाल भेड़ की शक्ल में ज़ाहिर होते है कभी कभी ये अपने मालिक को ले जाते हैं, और कभी कभी अपने मालिक को ज़मीन पर छोड़ जाते हैं। हर ईमान वाले के पास नूर होता है, उससे पहले और उसकी सीधे हाथ की तरफ़, जो उसके चारो तरफ रोशनी फैलाती है उस अंधेरे वक्त में।

वहाँ उनके उलटी तरफ कोई नूर नहीं होगा। शायद कोई भी अंधेरे में देखने के लायक नहीं होगा। काफिर अंधेरे में हक्का बक्का हो जाएंगे। लोग जो शकूक में पड़ते थे और उनके ईमान में (यकीन, भरोसे, हिचखिचाहट) कतराहट थी, [और बिदअत के] वो कुंद ज़हन हैं। ईमान वाले [सुन्नी] जो अहल-अस-सुन्नत रहमतुल्लाहि अलैहिम अजमईन के आलिमों की तालीमात के मुताबिक सही ईमान रखते हैं, वो उनका मलाल और हिचखिचाहट देखेंगे और अल्लाह तआला की हमद (तारीफ़ और शुक्रिया) करेंगे के उसने उन्हें हिदायत के नूर (रहनुमाई) से नवाज़ा। अल्लाह तआला बुराई करने वालो की हालतों को अज़ाव मिलते हुए मोमिनों पर ज़ाहिर करेगा, और इसमें वहाँ पर बहुत **नेमते** हैं। दरहकीकत, सारी चीज़ें, जैसी भी, जो जन्नत के लोगों और दोज़ख के लोगों ने पूरी ज़िंदगी करी वो ज़ाहिर की जाएंगी। इसलिए अल्लाह तआला ने वाज़ेह किया, जिसका मतलबः **"वो अपनी नज़रें अपने दोस्त की तरफ़ घुमाएगा, और उसे दोज़ख की आग में देखेगा।"** सूरह अराफ़ की सेतालिंसवी आयत-ए-करीमा का मतलब हैः **जब जन्नत के लोग दोज़ख के लोगो को देखेंगे, तो वो कहेंगेः ए हमारे रब! हमें इन ज़ालिम लोगों में मत मिलाना।"**

क्योंकि, वहाँ पर चार चीज़ें हैं जिसकी कीमत सिर्फ़ चार लोग ही जानते हैः जान की कीमत मुर्दा। नेमत की कीमत सिर्फ़ तकलीफ़ सहने वाला। दौलत की कीमत सिर्फ़ गरीब। (चौथी यहाँ नही लिखी हे ताहम इसका मतलब है के जन्नत के लोगों की कीमत सिर्फ़ दोज़ख के लोगों के ज़रिए जानी जाती है।)

कुछ लोगों का नूर उनके दो पैरों पर और उनके पंजों पर ज़ाहिर होता है। कुछ लोगों का नूर जगमगाता रहता है। इन लोगों का नूर उनके ईमान की तरह चमकता है। और उनकी अपनी कब्रों से उठने के बाद उनका बरताव अपने अमाल (यानी दुनिया में उनके कामों) की तरह अच्छा होता है। एक हदीस-ए-शरीफ़ जोकि सही है, जब, एक दिन, हमारे आका मुबारक नबी सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' से पूछा गया, "या रसूलुल्लाह! हम मेदान-ए-इंसाफ़ (हश्र) में कैसे ले जाए जाएंगे?" आपने जवाब दियाः **"मैदान-ए-हश्र में लोगों को एक ऊँट पर दो को, और एक ऊँट पर पाँच को, और एक ऊँट पर दस को ले जाया जाएगा।"**

इस हदीस-ए-शरीफ़ का मतलब, जिसे सिर्फ़ अल्लाह तआला अकेले सही जानता है; "अगर कोई समाज अफ़राद इस्लाम में एक दूसरे की मदद करे और एक दूसरे को यकीन, ईमान, और हराम के बारे में सिखाएँ तो अल्लाह तआला उनपर रहमत (दया, हमदर्दी) करेगा। उनके अमाल में से वो उनकी सवारी करने के लिए ऊँटों को तखलीक करेगा; और इस तरह वो मैदान-ए-हश्र (यौमुल हिसाब) में ले जाए जाएंगे।" ये, ताहम, कमज़ोर अमल का नतीजा है, (यानी दुनिया में थोड़े अच्छे और नेक अमाल करने पर।) उनकी एक ऊँट पर सवारी एक साथ बांटने का मतलब है के हर शख्स के अमल इतने ज़्यादा कमज़ोर हैं के एक ऊँट को बनाया जाए और इसलिए उनमें से कुछ के अमाल एक साथ मिला दिए गए एक ऊँट को बनाने के लिए।

ये लोग एक ऐसे लोगों के ग्रुप के मुताबिक हैं जो एक साथ एक मूहिम बनाते हैं। ताहम, क्योंकि उनमें से किसी के पास जानवर खरीदने का वक्त नहीं होता तो उनके पास अपनी मंज़ील तक पहुँचाने के लिए कोई जानवर नहीं होता। उनमें से दो या तीन अपने पैसे को मिलाते हैं, एक जानवर खरीदते हैं और उस पर सवारी करते हैं। कभी कभी उस ऊंट पर सवारी करने वालों की तादाद दस भी हो सकती है। ये अमल की कमी की नतीजा है, जो माल की तंगी होना। ताहम, वो निजात हासिल करने के लिए बनाए जाते हैं। इसलिए, तुम अमल अदा करो ताकि अल्लाह तआला तुम्हारे वज़न के लिए एक जानवर मुंतखिब कर दे।

ये माना जाता हैं के ये लोग आखिरत के लिए अपनी तिजारत से मुनाफा कमाते हैं और फाएदा उठाते हैं। इसके मुताबिक, सवारी करने वाले वो हैं जो अल्लाह तआला से डरते हैं और अल्लाह तआला का मज़हब (यानी इस्लाम) आम करते हैं। इस मामले के लिए, अल्लाह तआला ने वाज़ेह किया, सूरह मरयम की 85 वी आयत-ए-करीमा में जिसका मतलब हैः **"वो जो अल्लाह तआला से डरते हैं; उस दिन वो सब एक साथ जाएंगे अपने रब के तौहफ़ों के लिए।"**

एक दिन हमारे मुबारक नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने अपने सहावा से ईर्शाद फरमायाः **"बनी इसराईल** (इसराईली, इसराईल का बेटा) **के बीच एक शख्स रहता था। वो बहुत खैरात बाँटता था। दरहकीकत, वो शख्स हश्र में तुम्हारें साथ शामिल होगा।"** सहावा ने पूछाः "या रसूलुल्लाह! वो क्या खैरात थी जो वो शख्स करता था?" अल्लाह के मुबारक नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने फरमायाः **"उसके बाप के ज़रिए बहुत बड़ी वसीयत छोड़ी गई थी। उस माल से उसने सब्ज़ियों का एक बाग़ खरीदा और उसे गरीबों के लिए वक्फ़ के तौर पर कुरबान कर दिया, आरै कहा, 'जब मैं अपने रब की हाज़िरी में जाऊँ तो ये मेरा**

सब्ज़ियों का बाग़ हो।' फिर, उसने बहुत सारा सोना मखसूस कर और उसे गरीब और कमज़ोर लोगों में बाँट दिया, और कहा, 'इसके साथ मैं जनाब-ए-हक से जारिया और गुलामों को खरीद लूँगा। फिर उसने बहुत सारे गुलामों को रिहा किया, और कहा, 'ये अल्लाह तआला की मौजूदगी में मेरे गुलाम होंगे।' एक दिन उसे एक अंधा शख्स मिला। उसने देखा के वो अंधा शख्स चलते हुए बार-बार (फिसल गया और) गिर रहा था। उसने उसे सवारी के लिए एक जानवर खरीद दिया, और कहा, "अल्लाह तआला की मौजूदगी में, ये मेरा सवारी वाला जानवर होगा।"

इस कहानी को सुनाने के बाद, हमारे मुबारक आका, नबी ने कहाः **"मैं अल्लाह तआला के नाम की कसम खाता हूँ, जिसके कब्ज़े में मेरी नफ़स है, मैं अभी से देखता हूँ के एक जानवर काठी और लगाम कसे हुए उसके लिए तैयार है। वो शख्स महश्र के मैदान में, उस जानवर पर सवार होकर आएगा।"**

जैसा के सूरह मुल्क की बाईसवीं आयत-ए-करीमा की तफ़सीर (वज़ाहत में) में बयान है जिसका मतलब है, **"फिर जो एक अंधा है और सिर के बल चलता है, अपने डरे हुए चेहरे के साथ, वो यकसाँ तौर पर एक के मुकाबले है जो हिदायत याफ़ता है और बराबर सीधे रास्ते** (सिरात-ए-मुस्तकीम) **पर चल रहा हो।"** अल्लाह तआला ने इस आयत-ए-करीमा से कयामत वाले दिन कफ़्फ़ार के मुकाबले में मोमिनों के मजमूए की एक मिसाल पेश की है।

दरहकीकत, सूरह मरयम की छयासिवीं आयत-ए-करीमा जिसका मतलब ः **"हम काफ़िरों को उनके डरे हुए चेहरों के साथ, सिर के बल दोज़ख में भेजेंगे।"** का मतलब है अब वो चलेंगे और फिर एक घोर अंदाज़ में काम करेंगे। इसलिए, एक दूसरी आयत-ए-करीमा में अल्लाह तआला फरमाता हैः **"वो चलेंगे"** सूरह नूर की चौविसवी आयत-ए-करीमा का मतलब हैः **"...और**

उनकी ज़बाने और उनके हाथ और उनके पैर जो उन्होने किया उसके बारे में बताएंगे।"इसी तरह से, आयत-ए-करीमा में **अंधे** का मतलब है के काफ़िरों को उस नूर से परे/महरूम रखा जाएगा जो मोमिनों को चमका रहा होगा और उनके सीधी तरफ़ होगा।इसका मतलब ये नहीं के वो अंधेरे में देखने के काबिल नहीं होंगे।इसलिए, जैसा के हम जानते हैं के काफ़िर ऊपर आसमान की तरफ़ देखेंगे, बादलों का फटना, फरिश्तों का नीचे उतरना, पहाड़ों पर चलना, सितारों का टुटना देखेंगे।

जो डर उठाए जाने वाले दिन तजुरबा किया जाएगा वो सूरह तूर की पंद्रवीं आयत-करीमा की तफ़सीर (वज़ाहत) है, जिसका मतलब है ः **"क्या ये कुरआन अल-करीम कुछ जादू है? या तुम इसे नहीं देखते।"** इसलिए, उठाए जाने वाले दिन अंधे पन का क्या मतलब है के अंधेरा जो अंदर डूब गया, और अल्लाह तआला के जमाल-ए-इलाही को देखने से बाज़ रखता है।क्योंकि, मैदान-ए-महश्र (यौमुल जमा) अल्लाह तआला के नूर के ज़रिए जगमगा जाएगा।ताहम, उनकी, (यानी, काफ़िरों की,) आँखे एक परदे के ज़रिए ढ़क दी जाएंगी, जो उन्हें उस नूर (रोशनी, जगमगाहट) में से किसी को भी देखने से बाज़ रखेंगी।

अल्लाह तआला उनके कानों पर भी परदा डाल देगा।ताकि वो कलामअल्लाह (अल्लाह तआला की तकरीर) न सुन पाएँ।इस बीच में फरिश्तों ने सूरह ज़खरफ़ की **49**वीं और **70**वीं आयत-ए-करीमा का एलान किया जिसका मतलबः **"अब कभी डरो नहीं।न ही तुम गमग़ीन हो।तुम और तुम्हारी बीवियाँ खुशी से जन्नत में जाओगो।"** जबकि मोमिन इसे सुनेंगे, काफ़िर नहीं सुन पाएंगे।

काफ़िरों को बोलने से भी परे रखा जाएगा।वो गुंगे लोगों की तरह होंगे।ये हकीकत सूरह मरसलात की **35**वीं और **36**वीं आयत-ए-करीमा से

समझी जा सकती है जिसका मतलबः **“वो ऐसा वक्त होगा के वो फिर बोल नहीं पाएंगे, और उनको बोलने की इजाज़त भी नहीं दी जाएगी।”**

आदमी जो काम दुनिया में करते होंगे उस पर मुनहसिर (हश्र) में जमा किए जाएंगे। कुछ लोग अपना वक्त (दुनिया में) मोसीकी के साज़ों को बजाने या सुनने में बिताते होंगे। [इसका मतलब सारे मोसिकी के आलावा इसमें इबादत के वो काम अदा करना भी शामिल है जैसे के कुरआन अल करीम को पढ़ना या किरअत करना और मोसीकी के साज़ों के साथ ज़िकर करना। वहाँ एक भी मोसीकी का साज़ अल्लाह तआला के फज़ल और मंज़ूरी का हासिल नहीं है।] एक शख्स जो मुसलसल मोसीकी के साज़ों को बजाता था और/या सुनता था दुनिया में वो अपनी कब्र से उठेगा, साज़ को अपने सीधे हाथ से उठाएगा और फैंक देगा, और उस साज़ से कहेगा, (जो वो बजाता था और/या सुनता था,) “तुझ पर लानत हो! तुमने मुझे मसरूफ़ रखा जिसे में अल्लाह तआला के ज़िकर से बाज़ रहा। **सआदत अबदिया** के छठे हिस्से में ज़िकर के बारे में तफसीली मालूमात हैं, खासतौर से चौथे हिस्से के **25**वें बाब में।) साज़ उसके पास वापस आएगा ओर कहेगा, “मैं तुम्हारा दोस्त रहूँगा जब तक के अल्लाह तआला हमारे बीच इंसाफ़ न कर दें। मैं तब तक तुमसे अलग नहीं रहूँगा।” इसी तरह, जो लोग दुनिया में नशीली चीज़ें पीते थे वो उसी तरह नशे में जमा किए जाते हैं। औरतें और लड़कियाँ जो अपने सरों और बाज़ूओं और टाँगों को नंगा लेकर बाहर जाती हैं। वो अपने उन हिस्सों में से खून और पीप निकलते हुए जमा की जाएंगी। एक शहनाई बजाने वाला मैदान-ए-हश्र में शहनाई बजाते हुए जमा किया जाएगा। हर एक शख्स मैदान-ए-महश्र में वही काम करता हुआ आएगा और उसी तरह जिस तरह अल्लाह तआला के ज़रिए वसीयत किया गया था।

एक सही हदीस-ए-शरीफ़ का हवाला हैः **“एक शख्स जो शराब पीता है वो मैदान-ए-महश्र में** (यौमुल इंसाफ़) **अपनी शराब-आग की बोतल के**

साथ लाया जाएगा जो उसके गले से लटक रही होगी ओर उसकी शराब का गिलास उसके हाथ में होगा, और उसके अंदर से ज़मीन की सबसे गंदी बदबू आ रही होगी और ज़मीन के सारे मंदरजात की तरफ़ से वो मुजरिम करार दिया जाता है।"

लोग जिन्होने अपनी ज़िंदगियां अज़ाब/तशदुद के नतीजे में खोंई वो मैदान-ए-महश्र में उसी अज़ाब की हालत में लाए जाएंगे जिसमें वो थे।ये एक हदीस-ए-शरीफ़ में बयान है जोकि सही हैः **"लोग जो मारे गए हों और जिन्हें शहादत मिली हो जबकि वो अल्लाह की राह में कोशिश कर रहे हों और महश्र के मैदान में वो अपने खून के रिस्ते हुए आएंगे और ताहम मस्क की तरह उसमें से खुशबू आएगी।वो उस हालत में तब तक रहेंगे जब तक के हुज़ूर-ए-मौला के लिए जमा न किए जाएँ।"**

उस वक्त फरिश्ते उन्हें ग्रुप और भीड़ में बांट देंगे।उनमें से हर एक महश्र के मैदान में आएगा, दुनिया में जिन लोगों ने उन पर ज़ुल्म कर उन पर चढ़े।इंसानी मखलूक, जिन, शैतान, वहशी जानवर, और परिंदे एक जगह पर जमा होंगे।उस वक्त ज़मीन हमवार होगी और चाँदी की तरह सफ़ेद हो जाएगी।

फरिश्तें ज़मीन की सारी जानदार मखलूक के चारों तरफ़ घेरा बना लेंगे।उनकी तादाद ज़मीन पर रहने वालो से दस गुना ज़्यादा होगी।

इसके बाद अल्लाह तआला आसमान की दूसरी सतह के फरिश्तों को हुकूम देगा के आसमान की पहली सतह के फरिश्तों के और दूसरी मखलूक के इर्द गिर्द एक घेरा बना लें।उनकी तादाद उन सब से बीस गुना ज़्यादा होगी।

इसके बाद आसमान की तीसरी सतह के फरिश्तें नीचे उतरते हैं, और वो दूसरों के मुकम्मल भर में एक हलका/घेरा बनाते हैं और इन नए आने वालों की तादाद दूसरों के मजमूए से तीस गुना ज़्यादा है।

इसके बाद आसमान की चौथी सतह के फरिश्तें पूरे मजमूए को जो पहले से मौजूद उन्हें घेर लेते हैं। उनकी तादाद उस पूरी भीड़ से चालीस गुना ज़्यादा है।

इसके बाद पाँचवे आसमान के फरिश्तें नीचे उतरते हैं और उन्हें घेर लेते हैं। वो बहुत ज़्यादा हैं पिछले वालों से पाचास गुना ज़्यादा।

इसके बाद छठे आसमान के फरिश्तें नीचे उतरते हैं और दूसरों के इर्द गिर्द घेरा बना लेते हैं। उनका नम्बर बाकी सारों से साठ गुना ज़्यादा होता है।

आखिरी में, सातवें आसमान के फरिश्तें नीचे उतरते हैं और सबके इतराफ़ घेरा लगा लेते हैं, और उनका नम्बर उस सारी मखलूक जिस के वो चारों तरफ घेरा बनाते हैं उनके नम्बर से सत्तर गुना ज़्यादा है।

लोग उस वक्त के दौरान बहुत ज़्यादा घबराहट में होगे। सारी भीड़ इतनी ज़्यादा तंग होगी के वो एक दूसरे के पैरों पर चढ़ जाएंगे। सारे लोग अपने ही पसीने में ग़र्क होंगे, पसीने की मिकदार उनके गुनाहों की मिकदार पर मुनहसिर होगी। वो सारे अपनी ही पसीने में डूबे होंगे, जो उनमें से कुछ के कानों तक पहुँचा होगा, कुछ के गलों, कुछ के सीनों, कुछ को काँधों तक, और दूसरों के घुटनों तक; ये ऐसा ही है जैसे के वो भाप का गुस्ल कर रहें हों। और वहाँ जिनका पसीना किसी प्यासे शख्स से ज़्यादा न होगा जिसने थोड़ा पानी पीया हो।

असहाब-ए-रेए कहलाए जाने वाले लोग मिंबर के मालिक हैं। **असहाब-ए-रिश** कहलाए जाने वाले लोग वो होते हैं जिनको (महश्र के मैदान में) पसीना आता है। **असहाब-ए-काबेअन** कहलाए जाने वाले लोग [यानी वो जिन्हें टखने की हडडी तक पसीना आता है,] ये वो लोग हैं जो पानी में डूब गए थे। फरिश्तें उनसे कहेंगे, "अब तुम्हारे लिए वहाँ कोई डर या ग़म नहीं हैं।"

मुझे कुछ आरिफून ने जानकारी दी (रूहानी तौर पर संजीदा लोग जिन्हें कहते हैं) के असहाब-ए-काबेअन को **अव्वाबून** भी कहा जाता है और ये के फदाइल बिन इयाद रहमुतुल्लाहि अलैहि, (डी.187 [803 ए.डी.] मक्का,) और दूसरे उनके जैसे लोग असहाब-ए-काबेअन में शामिल हैं। इसलिए, हमारे मुबारक नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने फरमायाः **"एक शख्स जब अपने गुनाह (गुनाहों) की तौबा कर लेता है तो उस शख्स की तरह हो जाता है जिसने कभी गुनाह न किए हों।"** ये हदीस-ए-शरीफ़ मुतलक़ हैं। यानी, ये किसी शर्त पर मुनहसिर नहीं हैं। ये तीन लोगों की जमाअत, (यानी असहाब-ए-रेए और असहाब-ए-रिश और असहाब -ए-काबेअन,) सफ़ेद चेहरे वाले लोगों का ग्रुप हैं, जैसे के सूरह अल-ए-इमरान की 106वीं आयत-ए-करीमा से वाज़ेह हैंः **"उस दिन जब कुछ लोगों के चेहरे सफ़ेद हो जाएंगे (चमकने लगेंगे), और कुछ चेहरे (तारीकी में हो जाएंगे) काले हो जाएंगे..."** इन तीन ग्रुप के अलावा बाकी सारे लोगों के (उस दिन) चेहरे काले हो जाएंगे। ये परेशानी ये पसीना केसे दूर हो जाएगा जब सूरज सिरों से इतना पास होगा। दरअसल, ऐसा लगेगा के अगर तुम हाथ उठाओ तो इसे छू सकते हो। सूरज की गरमी ऐसी नहीं होगी जैसी अब है। ये सत्तर गुना ज़्यादा गरम होगा। कुछ पिछले इस्लामी आलिमों का कहना हैः अगर सूरज उसी तरीके से निकले जिस तरह से वो उठाए जाने वाले दिन निकालेगा तो ये ज़मीन को जला देगा, चटटानों और पत्थरों को पिघला देगा, और दरिया सूख जाएंगे।

उस दिन मखलूक एक सफ़ेद खुले मैदान अराफ़ात में जमा किए जाएंगे। अल्लाह तआला ने सूरह इब्राहीम की अढ़तालीसवीं आयत-ए-करीमा में इस सफ़ेद जगह के बारे में वाज़ेह किया है, जिसका मतलब हैः **"उस दिन ये वक्त होगा के जहाँ पर मैं, वाहिद और कहार इस ज़मीन को मुखतलिफ़ ज़मीन में बदल दूँगा और आसमानों को मुखतलिफ़ शक्लों में। उस दिन सारी मखलूक मेरी ताबे होगी।"**

उस दिन इस ज़मीन के रहने वाले मुखतलिफ़ शक्लों में होंगे। वो जो दुनिया में बड़े दिखाई देते थे और बाढ़ाई इखतियार करते थे वो महश्र के मैदान में छोटे तिंको/ज़र्रो की तरह दिखाई देंगे। एक हदीस-ए-शरीफ़ में हवाला दिया गया हैं के मग़रूर लोग धब्वों की तरह होंगे। वो असल में धब्वों की तरह छोटे नहीं होंगे। इसे धब्वों की तरह बताया गया है क्योंकि उन्हें बेइज़्ज़त और काबिले हिकारत की तरह पैरों के नीचे रौंदा जाएगा।

उन के दरमियान लोगों का एक ग्रुप होगा जो मीठा और साफ़ पानी पी रहा होगा। वो मोमिन बच्चों के बाप होंगे जो बहुत छोटी उमर में मर गए होंगे और जो अब वापस आ गए, अपने वालदेन को उस बरतानों में पानी पिलाने के लिए जिसे उन्होने जन्नत के दरियाओं से भरा हैं।

कुछ सलफ़-ए-सालिहीन के हवाले बयान के मुताबिक एक मुबारक शख्स ने इस तरह का सपना देखाः महश्र का वक्त आ गया, और वो मुबारक शख्स मोकिफ़ नाम की एक जगह पर इंतज़ार कर रहा है वो बहुत प्यासा है। उन्होने देखा छोटे बच्चें पानी बांट रहे हैं। उन्होने इलतिजा की, "बराए मेहरबानी मुझे भी थोड़ा पानी दे दो।" बच्चों में से एक ने पूछा, "क्या हम में से कोई तुम्हारा बच्चा है?" "नहीं, मेरा कोई नहीं," उन्होने जवाब दिया। इस पर बच्चे ने कहा, "तब तुम जन्नत के पानी में से कोई हिस्सा हासिल नहीं कर सकते।"

ये कहानी इस बात की दलालत है के शादी करना और बच्चें होना फायदेमंद हैं। हमारी किताब **इहया-उल-उलूम** में उन बच्चों से (उस दिन में) जो पानी बाँटते हैं (फायदे हासिल करने के लिए) शर्तो की एक फहरिस्त शामिल है।

वहाँ पर एक दूसरे लोगों का ग्रुप होगा जिनके सरों पर साया होगा और जो उन्हें महश्र के मैदान की गरमी से बचा रहा होगा। ये साया ज़कात है जब वो दुनिया में अदा करते थे और खैरात जो बांटते थे।

वो उस हाल कुछ हज़ारों सालों तक रहेंगे। वो उस हालत में रहेंगे जब वो सूरह मुदस्सिर की आयत-ए-करीमा सुनेंगे जिसका मतलब, **"आखिर में, जब सूर फूँका जाएगा..."** ओर जिसे हमने अपनी किताब **इहया-उल-उलूम** ये आला किताब हज़रत ग़ज़ाली के ज़रिए लिखी गई है जो अरबी में हैं और जिसकी पाँच जिल्दें हैं में ज़ाहिर है। ये आयत-ए-करीमा कुरआन-अल-करीम के राज़ों में से एक है।

उस बिगुल से इतनी खतरनाक आवाज़ निकलेगी के बाल सिरों पर खड़े हो जाएंगे और लरज़ जाएंगे, आँखें बहुत परेशानी में के क्या देंखे, और लोग, मोमिन और कफ़्फ़ार दोनो भागे चले जाएंगे। ये कयामत के दिन की सख्ती के अज़ाब को और बढ़ाएगा।

उस दिन आठ फरिश्तें अपने कांधों पर अर्श को उठाए हुए होंगे। उनमें से हर एक फरिश्ता ज़मीनी अंदाज़े में वीस हज़ार सालों जितने लम्बे कदम रखेगा।

फरिश्तें और बादल तसबीह के तरीके से अल्लाह तआला की तारीफ़ करेंगे जो दिमाग़ी बलाग़त से परे होगी जब तक के अर्श रूक न जाए। और ये वहाँ रूकेगा जब ये उस सफ़ेद ज़मीन के ऊपर आ जाएगा जो अल्लाह तआला

ने इसके लिए तखलीक की है। फिर सर लटक जाएंगे अल्लाह तआला के अज़ाब से पहले जो वो नाज़िल करेगा और जिससे कुछ नहीं बचेगा। पूरी तखलीक, बेसहारा, मायूस, और गूँगी, रहम की इलतिजा करती हुई होगी। नबी और आलिम दबवे मे ओलिया और शहीद रहमतुल्लाहि अलैहिम अजमईन अल्लाह तआला के अज़ाब के डर से रोते हुए जो की कोई मांस या खुन से बरदाश्त नहीं हो सकता। वेसे ही वो ऐसी उलझन में थे, के एक नूर सूरज से भी ज़्यादा चमकता हुआ उनके इतराफ़ फैल गया। ऐसा देखकर, लोग जो सूरज की गरमी के आगे पहले से ही लाचार थे वो और ज़्यादा घबराहट में हो गए। वो इस तरह और एक हज़ार सालों तक रहे। अल्लाह तआला के ज़रिए उन्हें कुछ नहीं कहा गया।

इस पर वो सबसे पहले नबी, आदम अलैहिस-सलाम के पास गए। "ए, तुम, आलमियत के बाप," उन्होने कहा। "हम सब बहुत बुरी हालत में हैं!" इस दौरान, काफ़िरों ने अल्लाह तआला से मिन्नत की, "या रब (ए हमारे अल्लाह)! हम पर रहम कर। हमें उस खौफनाक सख्ती और लाइलाज हालत से बचा।

लोगों ने आदम अलैहिस सलाम से मिन्नत की, "या आदम अलैहिस-सलाम! तुम इतने ज़्यादा मुबारक और ताज़ीम वाले नबी हो के अल्लाह तआला ने तुम्हें तखलीक किया, तुम्हारे आगे फरिश्तों को सर झुकाने को कहा, और खुद एक रूह तुम्हारे अंदर डाली। बराए मेहरबानी हमारी शफाअत करिए ताकि सवाल/जवाब और हिसाब-किताब जल्दी शुरू हो और जो कुछ अल्लाह तआला ने हमारे लिए हुकूम दिया है वो हमें मिल जाए हर कोई वहाँ चला जाए जहाँ जाने के लिए वो हुकूम देगा। अल्लाह तआला सबका हाकिम और मालिक, जो उसने अपनी तखलीक के लिए वसीयत/सोचा है वो कर दे।"

आदम अलैहिस सलाम ने उन्हें जवाब दिया, "मैंने पेड़ से फल खाया जिसे अल्लाह तआला ने ममनूअ किया था। अब मैं उसके आगे शर्मिंदा हूँ। ताहम, (मैं मश्वरा दूँगा के) तुम नूह (नोह) अलैहिस-सलाम जो पहले रसूल में से हैं उनके पास चले जाओ। "इस पर, उन्होने आपस में सोचविचार करने में हज़ार साल लगा दिए।

उसके बाद वो नूह अलैहिस सलाम के पास गए और उनसे मिन्नत की, "आप पहले रसूलों (पैगम्बरों) में से हैं। हम उलझन में हैं हमारा इस पर कायम भी रहना बहुत मायूसकुन है। बराए मेहरबानी हमारी शफाअत करीए ताकि हमें हिसाब के लिए जल्दी बुला लिया जाए! ये हमें मैदाने महश्र की अज़ियत से बचा लेगा।" नूह अलैहिस सलाम ने उन्हें जवाब दिया, "मैंने अल्लाह तआला से दुआ की (काफिरों की तबाही के लिए)। मेरी दुआ की वजह से ज़मीन पर रहने वाले सारे लोग ग़र्क हो गए। इसलिए, मुझे अल्लाह तआला से शर्मिंदगी है। ताहम, इब्राहीम अलैहिस सलाम के पास चले जाओ, क्योंकि वो खलीलुल्लाह हैं। अल्लाह तआला ने उनके बारे में सूरह हज की आखिरी आयत में फरमाया जिसका मतलब हैः **इब्राहीम अलैहिस सलाम ने तुम्हारे पैदा होने से पहले, तुम्हारा नाम मुसलान** रखा। शायद वो तुम्हारे लिए शिफ़ाअत करदें।

जिस तरह उन्होने पहले किया था, उन्होने इस मामले पर आपस में हज़ार सालों बात चीत की। फिर वो इब्राहीम अलैहिस-सलाम के पास आए और उनसे कहा, "ए, आप, मुसलमानों के बाप! आप इतने शरीफ़ शख्स हैं के अल्लाह तआला ने आपको खलील (उल्लाह), यानी अपना दोस्त बना लिया। हमारे लिए शिफ़ाअत करें और अल्लाह तआला से तखलीक के दरमियान फैसला करने के लिए दुआ करें। उन्होने उन्हें जवाब दिया, "मैंने दुनिया में तीन बार इशारे इस्तेमाल कर लिए। मेरे उस बोलने की वजह से मज़हबी तौहफ़े मिले। अब मुझे अल्लाह तआला से शर्म महसूस हो रही हैं के मैं

इस दर्जे पर उससे शफाअत करने की इजाज़त मागूँ। तुम मूसा अलैहिस सलाम के पास चले जाओ। क्योंकि अल्लाह तआला उनसे बात चीत करता है और रूहानी तौर पर उनसे रहम रखता है। वो तुम्हारे लिए शफाअत करेंगे।"

इस पर उन्होने अगले हज़ार साल एक दूसरे के साथ बातचीत करने में लगा दिए। इस दौरान, अगरचे हालात से बंद होते चले गए, और मैदान-ए महश्र और ज़्यादा पतला हो गया। वो मूसा अलैहिस सलाम के पास आए और कहा, "या इबनि इमरान। आप शरीफ़ शख्स हैं जिसके साथ अल्लाह तआला बातचीत करता है। उसने आप पर तौरह नाज़िल की। हमारी शफाअत करीए ताकि इंसाफ़ जल्दी शुरू हो! क्योंकि, हम यहाँ बहुत अरसे से इंतज़ार कर रहे हैं। ये जगह बहुत ज़्यादा भीड़ वाली हो गई है, के यहाँ पर एक दूसरे के ऊपर पैर चढ़े जा रहे हैं। मूसा अलैहिस-सलाम ने उनसे कहा, "मैने अल्लाह तआला से फिरओन के खानदान को सज़ा देने के लिए दुआ की उन चीज़ों के साथ जो वो सालों से नापसंद करते थे और इलतिजा की के आने वाली नसलों के लिए वो सबक हों। इसलिए मैं अब तुम्हारे लिए शफाअत करने में शर्मिंदा महसूस करूँगा। ताहाम, अल्लाह तआला माफ़ करने वाला और रहमदिल है। तुम ईसा अलैहि-सलाम के पास जाओ। क्योंकि, वो रसूलों (पैगम्बरों) के सबसे ज़्यादा असाह हैं (यानी जिसके लुग़वी मआनी सच्चा, खालिस हैं। इल्म की सच्चाई, खालिस ईमान के साथ, मआरिफत। अगर कोइ अहल-अस-सुन्नत आलिम के ज़रिए पढ़ाया गए हो ईमान के उसूलों को अपना लेता है, जो काम फर्ज़ और वाजिब है, वो सब अदा करता है, इस्लामी मुमानियते जिन्हें हराम कहा गया उन्हें छोड़ता है, और हमारे नबी के ज़रिए बताए गए तरीकों और रास्तों पर चलता है, बयान की गई सारी जानकारी को मआरिफत कहते है वो उनके दिल में भर जाती है जो सबसे उमदा और ज़ुहद यानी दुनियावी अज़ाईशों को नज़रअंदाज़ करता हे) यह वहीं हैं जो हिकमत के मामले में सबसे आला हैं तुम्हारे लिए

शफ़ाअत करेंगे।" एक बार फिर वो सोच विचार में लग गए, और हज़ार साल लगा दिए, इतनी ज़्यादा खराब हालात के बावजूद।

उसके बाद वो ईसा अलैहिस-सलाम के पास आए, और उनसे कहा, "तुम अल्लाह तआला की रूह और अल्फ़ाज़ हो।उसने तुम्हारे बारे में फरमाया है, जैसा के आल-ए इमरान की पैंतालीसवी आयत-ए-करीमा से वाज़ेह हैः **'... इस दुनिया में और आखिरत में दोनों में इज़्ज़त पाई...'** अपने रब (अल्लाह तआला) से हमारी शफ़ाअत करो! ईसा अलैहिस-सलाम ने उन्हें जवाब दिया, "मेरे लोगों ने मुझे और मेरी माँ को अल्लाह तआला के साथ साथी मंसूब किया।मैं किस तरह तुम्हारी शफ़ाअत करा सकता हूँ इस हकीकत के साथ के वो मेरी भी इबादत करते हैं।वो मुझे 'बेटा' बुलाते हैं और अल्लाह तआला को मेरा 'बाप'।क्या तुमने तुम में से किसी को देखा है जिसके पास पर्स तो हो लेकीन उसमे उसकी रोज़ी न हो, या पर्स हो जिसके मुंह पर सील लगी हो और फिर भी उसमें बग़ैर सिल तोड़े रोज़ी पहुँच जाए।जाओ 'सरकारे दो आलम मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम' के पास जाओ, सबसे ऊँचे और आखिरी नबी।क्योंकि, उन्होने अपनी दावत और शफ़ाअत अपनी उम्मत (मुसलमानों) के लिए मखसूस रखी है।क्योंकि उनके लोग अकसर उन्हें तंग करते थे।आपके मुबारक सर को ज़ख्मी करते थे।उन्होंने आपके मुबारक दाँत को तोड़ दिया और उन्होने आप पर पागलपंती का इल्ज़ाम लगाया।ताहम, वो बुलंद नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' उनमें सबसे अफ़ज़ल हैं इज़्ज़त में शोहरत में सबसे अव्वल हैं।इन सब नाकाबिले बरदाश्त परेशानियों और ज़ुल्मों के जवाब में जो उन्होने आप पर कीं, आपने इस आयत-ए-करीमा का हवाला दिया जिसका मतलब हैः **"इस दिन कोई मलामत तुम पर (डाली) न जाएः जनाब-ए-हक़, जो उन लोगों से भी ज़्यादा रहमत करने वाला है जो रहम दिखाते हैं, वही तुम्हें बख्शेगा**, सूरह युसूफ़ की **92**वीं आयत-ए-करीमा।) और जो युसूफ़ अलैहि-सलाम की अपने भाइयों से बयान का हवाला है।" जब

ईसा अलैहिस सलाम ने उन्हें हमारे नबी 'सरकारे दो सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' की बरतर खुबियों के बारे में बताया, तो वो सब जितनी जल्दी हो सके मुहम्मद अलैहिस-सलाम को देखकर इज़्ज़त पाने की लालसा में आ गए।

उस समय वो मुहम्मद अलैहिस-सलाम की मिंबर पर आए। उन्होने कहा, "आप हबीबउल्लाह (अल्लाह के प्यारे) हैं। और एक हबीब (प्यारा) बहुत असरदार शिफ़ाअत करने वाला होता है। हमारे लिए अपने रब (अल्लाह तआला) के साथ सिफ़ारिश करिए। क्योंकि, हम पहले नबी, आदम अलैहिस-सलाम के पास गए। उन्होने हमें नूह अलैहिस-सलाम के पास भेज दिया हम नूह अलैहिस-सलाम के पास गए उन्होने हमें इब्राहिम अलैहिस-सलाम के पास भेज दिया हम इब्राहिम अलैहिस-सलाम के पास गए उन्होने हमें मूसा अलैहिस-सलाम के पास भेज दिया हम मूसा अलैहिस-सलाम के पास गए उन्होने हमें ईसा अलैहिस-सलाम के पास भेज दिया और ईसा अलैहिस-सलाम ने हमें आपके पास भेज है। या रसूलुल्लाह 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम'! आपके बाद हमारे पास कोई जगह नहीं हैं जाने के लिए।"

हमारे आका अल्लाह के पैगम्बर 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने उनसे कहा, **"मैं तुम्हारे लिए शफ़ाअत करूँगा अगर अल्लाह तआला मुझे इसकी इजाज़त देगा और इसे मंज़ूर करेगा।"**

आप **सुरादिकात-ए-जलाल,** यानी जलाल के पर्दे तक गए। आपने अल्लाह तआला से इजाज़त मांगी। उसने इजाज़त दे दी। परदे चले गए। आप अर्श-ए-आला में दाखिल हुए। आपने अपने आपको झुकाया। आप एक हज़ार सालों के लिए सजदे में रहे। उसके बाद आपने जनाब-ए-हक़ की शान में हमद (तारीफ़ और शुक्रिया) अदा किया। ऐसी हमद जिसे आलम की तखलीक से कोइ भी अल्लाह तआला की इस हमद के बराबर हमद नहीं कर सकता।

कुछ आरिफ़ों का कहना हैः "जब अल्लाह तआला ने आलम की तखलीक की थी, उसने अपनी तारीफ़ इसी तरह की हमद से की थी।" अर्श -ए-आला अल्लाह तआला की ताज़ीम में हरकत में आया। इस वक्त में हालात बहुत ज़्यादा खराब हो गए, और तकलीफ़े और परेशानियाँ जो वो सह रहे थे इंतेहा को पहुँच गई। हर इंसान का माल, जिसे वो दुनिया में मज़बूती से पकड़े हुए थे, उनकी गरदनों के इतराफ़ बंधा हुआ था। लोगों की गरदनों से ऊँट लटके हुए थे जिन्होने अपने ऊँटों (जो वो दुनिया में रखते थे) की ज़कात अदा नहीं की। 'ज़कात' की जानकारी के लिए बराए मेहरबानी **सआदत अबदिया** के पाँचवे हिस्से के पहले बाब को देखिए।) उनका रोना और चीखना इतना तेज़ था के उनकी आवाज़ ऐसी थी जैसे के पहाड़ चिल्ला/रो रहें हों। यही हाल उन लोगों के साथ होगा जिन्होने अपने मवेशियों और भेड़ों की ज़कात अदा नहीं की थी। उनका रोना गरज की तरह ऊँचा था।

उन लोगों के लिए जिन्होने अपनी फसल के लिए ज़कात, यानी उश्र अदा नहीं की; उनमें से हर एक के गले/गरदन से एक बोझ की गुट्ठरी लटकी हुई होगी और उस तरह की फसल के मुताबिक होगी जिसकी उसने ज़कात अदा नहीं की होगी, मिसाल के तौर पर गेहूँ की गट्ठरी और जौ के लिए जौ की गट्ठरी, वो रो रहे होंगे और चीख कर ये अलफ़ाज़ बोल रहे होंगे "वावेला" और वासबुरा। वैल एक लफ़्ज़ है अज़ाब को वाज़ेह करने के लिए। एक शख्स ये लफ़्ज़ चिल्लाएगा जब वो बहुत ज़्यादा कमज़ोरी महसूस करेगा उस पर अज़ाब नाज़िल होने की वजह से, 'सबूर' भी तबाही के वक्त इस्तेमाल किया जाता है।) लोग जो सोने या चाँदी या [कागज़] पैसे या दूसरे तिजारती माल की ज़कात अदा नहीं करते वो एक खौफ़नाक नाग लदे होते हैं। उस नाग के सिर पर सिर्फ़ दो बुनाई होती हैं। उसकी दुम उनकी नाक में होती हैं। वो उनकी गरदन के चारों तरफ़ एक हलका बनाता है और अपना सारा वज़न उनकी गरदन के इतराफ डाल देता है, इतना ज़्यादा के उसका वज़न चक्की के पत्थरों

से भी ज़्यादा भारी है। जब वो चीखेंगे और पूछेंगे ये क्या है, तो फरिश्तें जवाब देंगे, "नाग तुम्हारी दुनियावी जाएदाद है जिसकी तुमने दुनिया में ज़कात अदा नहीं की थी।" ये अफ़सोसनाक हालत सूरह अल-ए-इमरान की **180**वीं आयत-ए-करीमा में बयान हैं, जिसका मतलब हैः **"...बहुत जल्द जो चीज़ें वो दुनिया में लालच के साथ रखते थे, इंसाफ़ वाले दिन, उनकी गरदनों में बल दिए हुए कॉलर क ी तरह बांधी जाएंगी..."**

दूसरा लोगों के ग्रुप मे बड़े जेनिटल जनअंग जिसमें से पस और मादा रिस रहा होगा उनके पास के लोग उस गंदी बदबू से परेशान होंगे जो उनमें से पैदा हो रही होगी। ये लोग ज़िनाकार और वो औरतें जो अपने सिरों, बाल, बाज़ूओं और टाँगों को खुला रखती थीं वो हैं।

दूसरा ग्रुप पेड़ों की शाखों से लटका होगा। ये वो लोग हैं जो दुनिया में लौंडेबाज़ी के काम किया करते थे।

दूसरे ग्रुप में उनके मुँह से ज़बाने बाहर आ रही होंगी और उनके सीनों पर लटकी होंगी। ये नज़ारा देखने लायक नहीं होगा के तुम उसे देखने में नफरत महसूस करोगे। वो झूठे और इल्ज़ाम लगाने वाले लोग होंगे।

अभी वहाँ एक ग्रुप और है। उनके पेटों पर सूजन होगी और पहाड़ों की तरह बड़े होंगे। वो सूद (ब्याज़) पर पैसा जाएदाद लेते देते थे बग़ैर ज़रूरत या बिना वो मुआमला इख़्तीयार किए जो करार दिया गया है। ये ऐसे हिकारत वाले तरीके हैं जहाँ लोग जो हराम करते हैं वो बेइज़्ज़ती मानी जाती है। क्या ज़रूरत मे सुद का मामला है और किन तरीकों से इजाज़त है जब तुम सूद लगाओ ये सब **सआदत अबदिया** के पाँचवे हिस्से में वाज़ेह किया गया है। बराए मेहरबानी उसके **37**वें और **44**वें बाब को देखिए।]

नौवां बाब

अल्लाह ने वाज़ेह किया,**"या मुहम्मद, अपना सर सजदे से उठाओ! कहो, और तुम्हें सुनाई भी देगा। आगे जाओ और सिफ़ारिश** (शफ़ाअत) **करो, और इसे कुबूल किया जाएगा।"** इस पर मुबारक नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने अर्ज़ किया: **"या रब्बी! बराए मेहरबानी बुरे बदों में से अच्छे बंदो को अलग कर दो, क्योंकि ये बहुत लंबा इंतज़ार हो गया है, इसलिए वो अपने गुनाहों की वजह से बहुत शर्मिंदगी वाली हालतों में हैं।"**

एक आवाज़ ये कहते हुए सुनाई दी: **"हाँ, या मुहम्मद"** 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम'। जनाब-ए-हक जन्नत को हुकूम देंगे के अपने आपको सारे तरह के ज़ेवरात से आरास्ता करो, और जैसा उसे हुकूम दिया जाएगा वो करेगी। इसे अरसात के चौराहे पर लाया जाएगा। इसमें इतनी खुबसूरत इतर की खुशबू निकलेगी के उसे पाँच सौ सालों से भी दूर के रास्तों पर सूँघा जाएगा। ये इतनी ज़्यादा खुश होगी के दिलों को आराम मिलेगा और रूहें ताज़ादम हो जाएंगी। ताहम, [काफ़िर, मुंकर-ए-दीन, लोग जो मुसलमानों का मज़ाक उड़ाते थे, वो जो कुरआन-अल-करीम की बेहुरमती करते थे, वो जो जवान लोगों को गुमराह करते थे और इसलिए उनके ईमान को लूटते थे, और] गंदे काम वाले लोगों को जन्नत की खुशबू का एहसास भी नहीं होगा।

जन्नत अर्श के सीधे हाथ की तरफ़ हैं। इसलिए जनाब-ए-हक़क ने दोज़ख को बुलाने का हुकूम दिया। दोज़ख डर से चिल्लाने लगी। उसने अपने बुलाए जाने वाले फरिश्ते से पूछा: "क्या अल्लाह तआला ने एक मखलूक को तखलीक किया है जिसके ज़रिए मुझ पर अज़ाब नाज़िल करे?" उन्होने कहा: "अल्लाह तआला की इज़्ज़त (शान), जलाल (दबदबे), और जबरूत (ताकत, हुकूमत) की वजह से, तुम्हारे रब, (यानी.अल्लाह तआला) ने हमें भेजा है

ताकि तुम नाफरमानों और इस्लाम के दुश्मनों से बदला ले सको।इसलिए ही तुम्हें बनाया गया हैं।"उन्होने उसके चारों सिरों को पकड़ते हुए उठाया।उन्होने उसे सत्तर हज़ार रस्सियों से बाँधकर उसे उठाया।हर रस्सी पर सत्तर हज़ार घेरे थे।अगर ऐसा मुमकिन होता के ज़मीन का सारा लोहा एक जगह ढेर कर दिया जाता तो भी उसका वज़न उस एक घेरे की तरह भारी नहीं होता।हर घेरे पर सत्तर हज़ार अज़ाब के फरिश्ते हैं जिन्हें ज़बानी कहा जाता है।अगर उनमें से किसी एक को हुकूम दिया जाए के ज़मीन पर पहाड़ों को तोड़ो, तो वो उन्हें मिसमार कर देंगे।इसी दौरान, दौज़ख चिल्लाती हैं और इतनी ज़्यादा आवाज़ निकालती हैं, और आग और धुँआ उगलती है, पूरे आसमान को पूरा अंधेरा कर देती हैं, जब वहाँ एक हज़ार सालों का रास्ता रह गया जमा किए जाने वाली जगह में पहुँचने से पहले, तो ये फरिश्तों के पंजों से अपने को ढीला करा लेती हैं।जो आवाज़ ये पैदा करती हैं वो नाकाबिले बरदाश्त ऊँची होती हैं और जो गरमी ये पैदा करती वो सहन करना मुमकिन नहीं होता।सारे लोग जो जमा किए जाने वाली जगह पर इंतज़ार कर रहे हैं वो बहुत ज़्यादा खौफ़ज़दा हो जाते हैं, और वो पूछते हैं ये क्या हैं।जब उन्हें बताया जाएगा के ये आवाज़ दोज़ख के ज़रिए पैदा की जा रही हैं जिसने अपने आपको ज़ेवनियों के हाथों से फ्री कराया है और वो "इस तरफ़ आ रही हैं," वो सब डर के मारे घुटनों पर रास्ता देंगे।यहाँ तक के नबी और पैगम्बर भी अपनी मदद नहीं कर पाएंगे।हज़रत ईसा अर्श-ए-आला को मज़बूती से पकड़ लेंगे।इब्राहीम अलैहिस-सलाम (अपने बेटे) इसमाईल अलैहिस सलाम के बारे में भूल जाएंगे जिन्हें उन्होने (एक वक्त में तकरीबन) कुरबानी के तौर पर मारा था।मूसा अलैहिस-सलाम अपने भाई हारून (आरोन) अलैहिस-सलाम के बारे में भूल जाएंगे, और ईसा (जिसस) अलैहिस-सलाम अपनी मुबारक माँ हज़रत मरयम (मैरी) के बारे में भूल जाएंगे, हर कोई उनमें से कहेगाः "या रब्बी! आज मैं अपने अलावा और किसी को नहीं चाहता।"

मुहम्मद अलैहिस-सलाम, अगरचे, दुआ करेंगेः **"मेहरबानी करके, या रब्बी! मेरी उम्मत (मुसलमानो) की रहमत के साथ हिफ़ाज़त फरमा।"**

वहाँ पर उन लोगों में कोई ऐसी दिलेरी वाला नहीं था। दरअसल, अल्लाह तआला ने हमें इस हकीकत के बारे में बता रखा हैं, जैसा के सूरह जासिया की **28**वीं आयत-ए-करीमा से वाज़ेह हैंः **"और इस रोज़ आप हर फिरके को देखेंगे के मारे खौफ़ के ज़ानू के बल गिर पड़ेंगेः हर फिरका अपने नामा-ए-अमाल के हिसाब की तरफ़ बुलाया जाएगाः 'आज तुम को तुम्हारे किए का बदला मिलेगा।"** जब दोज़ख अपने आपको ऊपर बताए गए तरीके से आज़ाद करेगी और दहाढ़ेगी, सब लोग महसूस करेंगे जैसे के उनका गला घोटा जा रहा हो, और गहरी तकलीफ़ में वो अपने आपको मुंह के बल सीधे गिरा देंगे। ये हकीकत सूरह फुरकान की **12**वीं आयत-ए-करीमा में वाज़ेह हैं **"जब शौला उगलती महश्र** (इजतमाअ) **के लोगों को दूर से देखेगी तो वो लोग दूर ही से उसके बदसूरत और बहुत गुस्से और जोश व खरोश भरी आहें सुनेंगे।"**

अल्लाह तआला ने सूरह मुल्क की **8**वीं आयत में वाज़ेह किया, जिसका मतलबः **"जैसे मालूम होता हैं के शौला उगलती आग (दोज़ख की) गुस्से के मारे अभी फट पड़ेगी। ..."** इस पर हमारे मुबारक नबी आगे आए और दोज़ख को रोका। **"वापस जाओ, नाहंजार और नीच। इंतज़ार करो जब तक तुम्हारे लोग तुम्हारे पास ग्रुप में न आ जाएँ।"** दोज़ख ने कहाः "या मुहम्मद! बराए मेहरबानी मुझे आगे जाने दिजिए, क्योंकि आप मेरे लिए हराम (ममनुअ) हैं, (यानी मुझे हुकूम दिया गया हैं के मैं आपको न छूऊँ।)" एक आवाज़ अर्श से ये कहते हुए सुनी गईः "ए, तू, दोज़ख! मुहम्द अलैहिस-सलाम जो कह रहे हैं उसे सुनो! और उनकी तावेदारी करो! फिर रसूलुल्लाह 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने दोज़ख को खींचा और उसे अर्श की उलटी हाथ की तरफ़ ले गए। लोग जो मैदान-ए-महश्र में इंतज़ार कर रहे थे

एक दूसरे को हमारे मुबारक नबी के इस रहमदिलाना बरताव की अच्छी खबर सुनाते हैं। इससे उनका डर कुछ हद तक कम हुआ। इसलिए सूरह अबदिया की **107**वीं आयत-ए-करीमा, जिसका मतलबः **"हमने आपको और किसी बात के लिए नहीं भेजा, मगर दुनिया जहान के लोगों पर महरबानी करने के लिए।"**

इसके बाद एक तराज़ू का जेड़ा रखा गया हमें नहीं पता ये कैसे हुआ। इसके दो पलड़े हैं, एक नूर (चमक, रोशनी) से, और दूसरा जुलमत यानी अंधेरे से।

उसके बाद अल्लाह तआला ने अपनी ताकत इस तरीके से वाज़ेह की के वक्त और जगह और जिस्म से आज़ाद और दूर, जहाँ लोग अपने आपको उसकी ताज़ीम में झुकाते हैं। ताहम काफ़िर और मुंकर ए दीन अपने आपको सजदे में ले जाने में नाकाम रहे, क्योंकि काफ़िरों की कमरें लोहे की तरह सख्त हो चुकी हैं जिससे वो अपने आपको झुकने में नाकाम रहेंगे। दरअसल, ये हकीकत सूरह नून की **42**वीं आयत-ए-जलाल-ए-इलाहिया में बयान किया गया है जिसका मतलबः **"उस दिन जबकि आँखों पर ढके पर्दे हट जाएँगे और पेरेशानियाँ दुगनी हो जाएंगी, वो सज्दा करने के लिए बुलाए जाएंगे। ताहम वो अपने आपको झुकाने मे नाकाम रहेंगे।"**

जैसे के इमाम बुखारी रहमतुल्लाहि अलैहि (इमाम) मुहम्मद बुखारी समरकंद में **256** [**870** ए.डी.] में गुज़र गए थे। आपने अपनी तफसीर में इस आयत को वाज़ेह किया, उन्होने एक हदीस-ए-शरीफ़ का हवाला दिया जिसको इस तरह पढ़ा जाता हैः **"इंसाफ वाले दिन अल्लाह तआला साक रोशनी में लाता है।** [कफ़ को ऊपर मोड़ दिया जाएगा। दूसरे लफ्ज़ों में, एक बहुत ही मुश्किल और परेशानी हाल का सामना किया जाता है। लोगों को अपने आप झुकने के लिए कहा जाएगा।] **सारे मोमिन खुद ब खुद झुक जाते हैं।"** अल्लाह अपना ज़िक्र करने वालो को लागतार अपना जानशीन बनाता है जो

अपने आप रसूलुल्लाह 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' तक जाते हैं। मुझे इस हदीस-ए-शरीफ़ की तश्रीह के बारे में डर है। और मुझे उन (आलिमों) की बताई हुई वज़ाहत पसंद नहीं आई जो इस राए पर आवाज़ करते हैं के ये एक मिसाली इज़ाहार हैं। मीज़ान के लिए (यानी ऊपर बताए गए तराज़ू;) ये एक अनजान चीज़ें हैं मलकूत के ताअल्लुक से, (यानी आसमानी चीज़ें जिन्हें हम नहीं जानते।) वो तराज़ू का जोड़ा दुनियावी तराज़ू के जोड़े से पूरे तौर पर अलग होता है। क्योंकि, ये सिफ़ाती पहचाने होती है सिफ़ात और खसूसियात को तौलने वाली चीज़ों की तरह, हमारी जानकारी वाले तराज़ू से तौलना सही नहीं है। ये सही तब होगा जब इसे सिर्फ़ उस तराज़ू के जोड़े से तौला जाएगा जिसे हम नहीं जानते।

जैसे के लोग सज्दे में होते हैं, अल्लाह तआला पुकारता हे जो दूर और पास से आवाज़ सुनी जाती हैं। जेसे के इमाम बुखारी ने हवाला दिया, जनाब-ए-हक़्क ने एलान किया, [जैसे के ये हदीस-ए-कुदसी से वाज़ेह हैंः] **"मैं, अज़ीम-उस-शान** (सबसे ज़्यादा जलील उल कदर), **दरयान** (आला बदला देने वाला अच्छाई और बुराई का), **और सबके ऊपर मैं मुजासात के लायक हूँ** (तलाफ़ी करने वाला अच्छाई और बुराई की)। **किसी ज़ालिम के** (ज़ुल्म करने वाला, सित्मगर) **ज़रिए किया गया कोई ज़ुल्म मुझ पर काबिज़ नहीं हो सकता। अगर ऐसा होता, तो मैं (खुद) भी ज़ालिम होता।"**

उसके बाद वो जानवरों की सलतनत के बीच के मामलात पर इनसाफ़ करेगा। वो आसानी से सींग वाली मेड़ों को बदला देगा, क्योंकि उन्हें बग़ैर सींग वाली भेड़ों पर फौकियत हासिल थी, वो उन्हें खुश करेगा। वो पहाड़ों के जानवरों और परिंदों को एक दूसरे के हुकूम देने के लिए कहेगा। फिर उसके बाद वो उन्हें हुकूम देगा केः **"खाक हो जाओ।"** इसलिए जानवर फौरन खाक बन जाएंगे। जब काफिर ये वाक्या देखेंगे तो कहेंगेः **"मेरे पर अफसोस क्या मैं (खाली) धुल होता,"** जैसा के सूरह नबा की चालीसवी आयत में वाज़ेह हैं।

फिर अल्लाह तआला से एक आवाज़ कहेगी **"लोह-इल-महफ़ूज कहाँ हैं?"** ये आवाज़ इस तरह सुनी जाएगी जैसे के मखलूकों के दिमागों को परेशान करने वाली की तरह। अल्लाह तआला कहेगाः **"ए, तू, लौह! वो हकाईक कहाँ हैं जो मैने तौरह और इंजील** (बाएबल का मुकम्मल मतन), **और कुरआन अल-अज़ीम-उस-शान में से इस पर लिखे थे?"** लोह-इल-महफ़ूज़ कहेगीः "या रब्ब-अल-आलमीन! इनके बारे में जिब्राईल अलैहिस-सलाम से पूछिए!" ([1] लौह-इल-महफ़ूज़ के लिए **सआदत-ए-अबदिया** के तीसरे हिस्से के **36**वें बाब को देखिए।)

इस पर जिब्राईल अलैहिस-सलाम मंज़र में लाए जाएँगे। वो लरज़ते हुए आएँगे। वो ताअजुब से घुटने के बल गिर जाएँगे। वो लरज़ते हुए आएँगे। जनाब-ए-हक़ कहेंगेः **"या जिब्राईल! ये लौह कह रही हैं के तुमने मेरे लफ़ज़ और वही मेरे बंदो तक पहुँचाई। क्या ये सही/सच हैं?"** जिब्राईल अलैहिस-सलाम जवाब देंगे, हाँ, या रब्बी, ये सच हैं।" अल्लाह तआला सवाल करेगा, **"ये तुमने कैसे किया।"** जिब्राईल अलैहिस सलाम कहेंगेः "या रब्बी! मैने तौरह मूसा अलैहिस सलाम पर ज़ाहिर की, इंजील ईसा (जिसस) अलैहिस-सलाम पर, और कुरआन अल करीम मुहम्मद अलैहिस सलाम पर, और मैने हर एक रसूल (नबी, पैगम्बर) को उसकी रिसालते (नब्बुवत) के बारें में इतलाअ दी और आसमानी सफ़हें हर एक नबी को बताए जिन पर ये आसमानी सफ़हे (सहूफ़) उतारे गए।"

एक आवाज़ आईः **"या नूह।"** इस पर नूह (नोह) अलैहिस सलाम लाए गए। लरज़ते हुए, वो अल्लाह तआला के हुज़ूर में आए। **"या नूह! जिब्राईल"** अलैहिस सलाम **ने कहा के तुम रसूलों में से एक हो।"** ये सवाल उनसे पूछा गया। उन्होने कहाः "हाँ, या रब्बी ये सही है।" और अल्लाह तआला ने दोबारा पूछाः **"तुम्हारा अपने लोगों के साथ कैसा मामला था?** नूह अलैहिस-सलाम ने कहाः या रब्बी। मैं दिन और रात उन्हें ईमान के लिए बुलाता

था।मेरी दावत उनके लिए कोई फायदा नहीं थी।वो मुझ से भाग गए ।" उसके बाद दोबारा, एक आवाज़ आई, ये कहते हुए, **"ए, तुम, नूह के लोगों।"** एक बड़ा लोगों का ग्रुप, नूह अलैहिस सलाम के लोग, उस जगह लाए गए।उनसे मुखातिब हुआ गयाः **"ये तुम्हारा भाई नूह** अलैहिस सलाम, **कहता है के इसने अपनी रिसालत के बारे में मेरे पैगाम को तुम तक पहुँचाया।"** उन्होने उनकी नब्बुवत से इंकार किया, और कहा, "ओ, तुम, हमारे रब! ये झूठ बोल रहे हैं।इन्होने हम तक कुछ नहीं पहुँचाया।"

अल्लाह तआला ने कहाः **"क्या तुम्हारे पास गवाह हैं।"** नूह अलैहिस सलाम ने कहाः "या रब्बी! मेरे गवाह मुहम्मद अलैहिस-सलाम की उम्मत, (यानी मुसलमान) हैं।"

अल्लाह तआला ने कहाः **"या मुहम्मद! ये नूह** अलैहिस-सलाम **ने अपनी नब्बुवत की मवासलत की इसके लिए तुम्हें तसदीक करने के लिए गवाह के तौर पर मुर्करर किया है।"** हमारे मुबारक नबी अलैहिस-सलाम ने इस हकीकत की तसदीक की के नूह अलैहिस-सलाम ने अपनी नब्बुवत की मवासलत के फर्ज़ को अदा किया, और सूरह हूद की **25**वीं आयत-ए-करीमा का हवाला दिया, जिसका मतलब **"हमने लोगों तक नूह को नबी के तौर पर भेजा।उन्होने अल्लाह तआला की तरफ़ से उन्हें अज़ाब से तबीह की।उन्होने उन्हें बताया के अल्लाह तआला के सिवा किसी और चीज़ की इबादत ना करें।"** जनाब-ए-हक़ ने नूह के लोगों से कहाः **अज़ाब तुम्हारे लिए सही रेगिस्तान बन गया है।क्योंकि,** काफ़िर/बेदीन **अज़ाब के मुसतहीक हैं।"**

इसलिए वो सब दोज़ख में धकेले जाएँगे।उनके (दूसरे) अमाल तौले नहीं जाएँगे, ना ही वो हिसाब लगाए जाएँगे।

फिर आवाज़ ने पुकाराः **"आद के लोग कहाँ हैं?"** जो कारवाई नूह अलैहिस सलाम के लोगों के साथ की गई वही हूद अलैहिस सलाम और उनके लोगों के साथ की गई। लोगों को आद कहा गया हैं। हमारे मुबारक नबी अलैहिस सलाम और आपकी उम्मत में से अच्छे लोगों ने गवाही दी। हमारे मुबारक नबी ने सूरह शोअरा की **123**वीं आयत-ए-करीमा को पढ़ा। वो लोग भी दोज़ख में फैंके गए।

उसके बाद आवाज़ ने पुकाराः "सालिह या ज़मूद।" सालिह अलैहिस -सलाम और उनके लोग (जिन्हें ज़मूद कहते हैं) उस जगह आए। जब ज़मूद के लोगों ने इंकार किया (सालिह अलैहिस-सलाम के ज़रिए दावत दिए जाने का), तो हज़रत रसूल को गवाह के तौर पर बुलाया गया। हमारे मुबारक नबी अलैहिस-सलाम ने सूरह शोअरा की **14**वीं आयत-ए-करीमा पढ़ी, इस पर उन लोगों को भी दोज़ख में फैंक दिया गया।

जैसे के कुरआन अज़ीम उस शान में बयान हैं, एक के बाद एक दूसरी उम्मतें अल्लाह तआला के सामने लाई गईं। ये हकीकत सूरह फुरकान की **38**वीं आयत-ए-करीमा और सूर इब्राहिम की आठवीं आयत-ए-करीमा में हवाला दी गई हैं। उनसे पहले लोगों की तरह इन्हें भी, दोज़ख में फैंक दिया गया। इस मकाम पर ये बात ज़हन में रख लेनी चाहिए कि अभी तक जिन लोगों का ज़िकर किया गया वो सब नाफरमान और निहायत ही खराब लोग थे। उनमें वारिह और मारिह और ज़ुहा और इसरा, और उनके जैसे और भी काफ़िर शामिल हैं। उसके बाद, आवाज़ ने असहाब-ए-रेस और तव्वा और इब्राहिम अलैहिस-सलाम के लोगों के नामों को पुकारा। मीज़ान (तराज़ू) उनमें से किसी के लिए भी नहीं जुड़ा। और वो हिसाब के लिए नहीं बुलाए गए। उस दिन वो अपने रब (अल्लाह तआला) से शर्मा रहे थे। एक मुतरज्जिम उन्हें अल्लाह तआला के लफ़्ज़ के साथ मुखातिब कर रहा था। एक बार एक शख्स

नज़र-ए-इलाही या कलाम-ए-इलाही से इज़्ज़त बख़्शा जाए, तो वो शख़्स कभी भी अज़ाब में मुबतला नहीं होगा।

उसके बाद, आवाज़ ने मूसा (मोसेस) अलैहिस सलाम को पुकारा। वो उस जगह तेज़ हवा में फड़फड़ाती पत्तियों की तरह लरज़ते हुए आए। जनाब-ए-हक़ ने उन्हें मुख़ातिब किया: **"या मूसा! जिब्राईल ने तसदीक की है के तुमने अपनी नब्बुवत और तौरह अपने लोगों तक पहुँचा दी।"** "जी, या रब्बी" मूसा अलैहिस सलाम ने यकीनी कहा। "फिर, अपने मिंबर पर चढ़ जाओ! जो तुम पर वही के ज़रिए उतारा गया था उसको पढ़ो।" उन्हें हुकूम दिया गया और किरअत की। हर कोई अपनी जगह पर खामोश था। उन्होने तौरह की किरअत की जैसे के अभी नई जाहिर हुई हो। यहूदी आलिम ऐसे थे जैसे के उन्होने कभी देखा ना हो या तौरह को जानते ना हो।

उसके बाद दाऊद (डेविड) अलैहिस-सलाम को पुकारा गया। जैसे के वो इंसाफ़ की जगह पर आए, वो, भी बुरी तरह लरज़ते हुए, जैसे के तेज़ हवा में फड़फड़ाती पत्तियाँ।

जब अल्लाह तआला ने दाऊद अलैहिस सलाम से कहा: **"या दाऊद! जिब्राईल अलैहिस सलाम ने तसदीक की है के तुमने अपनी उम्मत को ज़बूर की जानकारी दी।"** उन्होने कहा: "जी हाँ, या रब्बी।" इस पर उन्हें हुकूम दिया गया: "अपने मिंबर पर चढ़ जाओ और जो तुम पर नाज़िल किया गया उसे पढ़ो।" दाऊद अलैहिस सलाम मिंबर चढ़े और अपनी खुबसूरत आवाज़ में ज़बूर-ए-शरीफ़ की किरअत की। जैसे के एक हदीस-ए-शरीफ की किरअत की। जैसे के एक हदीस-शरीफ़ से रिवायत है, दाऊद अलैहस-सलाम जन्नत के लोगों के लिए मुनादी हैं। (एलान करने वाले, लोगों को पुकारने वाले) दाऊद अलैहिस-सलाम की बहुत बुलंद खुबसूरत आवाज़ थी।] जब कि वो किरअत कर रहे थे, एक इमाम, (अदह का संदूक) ने उनकी आवाज़ सुनीं, वो भीड़ को

धकेलते हुए आगे आए, और दाऊद अलैहिस-सलाम के पास पहुँचे। उन्होने नबी को गले लगाया और कहाः "क्या ज़बूर ने आपकी तबलीग़ नहीं की थी, इसलिए तुम मेरे बारे में गलत इरादा रखते थे?" हज़रत दाऊद बेहद शर्मिंदा हो जाते हैं। वो उन्हें जवाब नहीं देते। अरासात (का मुरबअ/चौराहा) ग़म के अंदर गहराई में डूब जाता है। लोग दाऊद अलैहिस-सलाम की बिना पर अरिय्याह पर गुज़ारे मुश्कलात की वजह से खौफज़दा माअज़िरत करते हैं। उसके बाद वो दाऊद अलैहिस-सलाम को गले लगाते हैं और अल्लाह तआला के हुज़ूर ले जाते हैं। एक पर्दा नीचे गिरता है और उन्हें ढक लेता है। ताबूत के इमाम (यानी अरिय्याह) ने कहाः "या रब्बी! दाऊद अलैहिस -सलाम के फज़्ल के लिए मुझ पर रहम कर, जिन्होने मुझे एक जंग करने के लिए भेजा था। असल में, मैं (इस जंग में) मारा गया। ये उस औरत से शादी करना चाहते थे जिससे मैं करना चाहता था, हांलाकि इनकी निन्यानवें बिवियाँ थीं।" अल्लाह तआला ने दाऊद अलैहिस-सलाम से पूछाः **"या दाऊद! क्या ये जो कह रहे हैं सच हैं?"** शर्मिंदा और अज़ाब के डर से जो अल्लाह तआला उन पर मसलत कर सकता है दाऊद अलैहिस-सलाम ने अपना सिर लटका लिया, और अल्लाह तआला से मग़फिरत (माफ़ी, निजात) की इल्तिजा की, जिसका उसने वादा किया था। जब एक शख्स डर या खौफ़ महसूस करता हैं, तो वो अपना सिर लटका लेता है। और वो सिर उठाता हैं जब उसे तवक्को हो या कुछ माँगे। इस पर अल्लाह तआला ने ताबूत के मुबारक इमाम से पूछाः "आप पर ज़ुल्म किया गया इसका **मुआवज़ा करने के लिए, मैं तुम्हें इतना और ऐसा कई विला और दूसरी** (जन्नत की) **बरकते दूँगा। क्या तुम मुतमईन हो?"** उस बाबरकत शख्स ने जवाब दियाः "मैं मुतलईन हूँ, या रब्बी।" उसके बाद उन्होने दाऊद अलैहिस-सलाम से कहाः **"तुम, भी, जाओ, या दाऊद। मैं तुम्हें भी माफ़ करता हूँ।"** इस वाक्या का एक मज़ीद मुफ़सिल ब्यौरा मवाहिब नाम की तफ़सीर की किताब में सूरह साद की **23**वीं आयत की वज़ाहत में मिलता है। नबी छोटे से छोटे गुनाह भी नहीं कर सकते, और वो कभी गुनाह नहीं कर

सकते। एक शख्स जिसने इस कहानी को उस तफसीर में पढ़ा है वो सच्चाई को अच्छे से समझ सकता है।

उसके बाद अल्लाह तआला ने दाऊद अलैहिस-सलाम को हुकूम दियाः **"अपने मिंबर पर वापिस जाओ और बाकी ज़बूर की किरअत शुरू करो।"** उन्होने अल्लाह तआला के हुकूम की इताअत की। फिर इसरालियों को दो गुपों में बटने के लिए कहा गया। एक गुप ने मोमिनों में शिरकत की, और दूसरा गुप काफ़िरों में शामिल हो गया।

उसके बाद एक आवाज़ ये कहते हुए सुनी गईः **"ईसा** (जिसस) अलैहिस-सलाम **कहाँ हैं?"** ईसा अलैहिस-सलाम लाए गए। अल्लाह तआला ने उन्हें इस तरह मुखातिब किया, जैसे के सूरह माएदा की **116**वीं आयत-ए-करीमा से वाज़ेह हैः **"या ईसा! क्या तुमने आदमियों से ये नहीं कहाः के अल्लाह मेरी और मेरी माँ की खुदाओं की तरह इबादत करो?"**

ईसा अलैहिस-सलाम ने अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा किया और तारीफ़ की। फिर उन्होने (उसी) आयत-ए-करीमा के बाद के हिस्से के साथ जवाब दिया, जिसका मतलब **"या रब्बी! आप पर इज़्ज़त हो, (जो हर सिफ़ात के नुक्स से परे हैं)। जिसे (कहने का) मुझे हक नहीं वो मैने कभी नहीं कहा। क्या मैंने ऐसा कभी कहा, आप ज़्यादा बेहतर जानते हैं। या रब्बी! आप जानते हैं मेरे नफ़स के अंदर क्या है, अगरचे मैं नहीं जानता आपके अंदर क्या है। या रब्बी! आप पूरे तौर पर ग़ैब का हाल जानते हैं।"**

इस पर जनाब-ए-हक़ ने अपनी जमाल-ए-सिफ़त ज़ाहिर की और ऐलान किया, जैसे के सूरह माएदा की **19**वीं आयत-ए-करीमा से वाज़ेह हैंः **"ये वो दिन हैं जिस दिन सच्चे अपनी सच्चाई से फायदा उठाएगें..."** फिर उन्होने उनसे कहाः **"या ईसा तुम! सच बोल रहे हो। तुम अपने मिंबर पर जाओ!**

इंजील की किरअत करो, जिसे जिब्राईल ने तुम पर नाज़िल किया।" ईसा अलैहिस-सलाम ने कहाः "जी हाँ, या रब्बी।" और मुकददस किताब की किरअत शुरू कर दी।किरअत इतनी ज़्यादा असरदार थी के सारे सामेइन के सिर उठ गए।इसलिए, के ईसा अलैहिस-सलाम रिवायत (बयान) के मामले में इंसानियत के सबसे ज़्यादा हकीम (अकलमंद तरीन) हैं।उन्होने इतने ताज़े और ठीक अंदाज़ से किरअत की सारे ईसाइयों और राहिबों को ये महसूस हुआ के वो इंजील किसी भी आयत को नहीं जानते।

इसके बाद नसारा (ईसा अलैहिस-सलाम के लोग) दो ग्रुप में बंट गए।बिदअती लोग, यानी ईसाई काफ़िरों में शामिल हो गए, जबकि जो बिदअत के मुजरिम नहीं हैं, यानी सच्चे मोमिन, उन्हें मोमिनों के साथ रखा गया।

उसके बाद एक आवाज़ ये कहती हैः **"मुहम्मद** अलैहिस-सलाम **कहाँ हैं?"** हमारे मुबारक नबी आते हैं।अल्लाह तआला कहता हैः **"या मुहम्मद! जिब्राईल कहते हैं के उन्होने कुरआन-अल-करीम तुम तक पहुँचाया।"** "हाँ, नबी ने कहा।अल्लाह तआला ने हुकूम दियाः **"या मुहम्मद! अपने** मिंबर पर चढ़ जाओ और कुरआन अल-करीम की किरअत करो।" हमारे नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने खुबसूरत और मीठे अंदाज़ से कुरआन अल-करीम की किरअत की।आपने मोमिनों को खुशी की खबरें दीं।वो खुश हुए और मुसकुराए।उन लोगों के चेहरे जिन्होने कुरआन अल-करीम से इंकार किया और इस मुबारक किताब को रेगिस्तानी कानून कहा- **(अल्लाह तआला हमें इस घिनौने काम के खिलाफ़ हिफ़ाज़त फरमाए!)-** बेहद बदसूरत हो गए।

सवाल जो नबियों से पूछे गए, जिन्हें हमने अब तक वाज़ेह किया, वो सूरह अराफ़/एराफ़ की छठी आयत-ए-करीमा से बयान हैं,**"फिर हमने उनसे**

सवाल किया जिनके पास हमारा पैग़ाम गया था और उनसे जिनके ज़रिए हमने इसे भेजा।"

कुछ (आलिमों) का कहना हैं के ये सूरह माएदा की 19वीं आयत-ए-करीमा में बयान हैं, जिसका मतलब **"उस दिन अल्लाह तआला आला नबियों को जमा करेगा और पूछेगाः 'तुम्हें क्या (तुम्हारी तालीमात को आदमियों की तरफ से जवाब हासिल हुआ?" ...** फिर नबी कहेंगेः या रब्बी! हम तेरी तसबीह (या तसबीह) करते थे, (जिसका मतलब "हम जानते हैं और तसबीह करते हैं के आप आज़ाद हैं और नाकुस सिफ़ात से परे हैं।") और (हम इस हकीकत को तसलीम करते हैं) हमारे लिए कोई इल्म (जानकारी) नहीं हैं। आप सबसे ज़्यादा आला हैं ग़ैब (नामालूम) को जानने के लिए।" ज़्यादातर, वो आलिम जो बहस करते हैं ये आयत-ए-करीमा में बयान, हैं पिछले मतन में बताए गए हिस्से में सच्चाई से ज़्यादा करीब हैं। हमने इस हकीकत को भी अपनी किताब जिसका नाम **अहया-उल-उलूम** हैं उसमें वाज़ेह किया है। क्योंकि, मुखतलिफ पैग़म्बर नब्बुवत के मुखतलिफ़ दर्जात पर थे। और, ईसा अलैहिस-सलाम, अपनी बारी में आला नबियों में से एक हैं। क्योंकि, वो रूहुल्लाह और **कलिमउल्लाह** हैं। जैसे के हमारे मुबारक नबी कुरआन अल-करीम की किरअत कर रहे थे, आपकी उम्मत (मुसलमानों) को ऐसा लग रहा था जैसे उन्होने इसे पहले कभी नहीं सुना। इत्तिफ़ाकन, हज़रत अबू साईद इसमाई जो 122 में बसरा में पैदा हुए थे, और 216 [831 ए.डी.] में मार्व (या मर्व) में रहलत फरमा गए। उनका असली नाम अबद-उल-मलीक रहिमउल्ल्लाहु तआला था।) से पूछा गया, "तुम उन लोगों में सबसे आला था जिन्होने कुरआन अल-करीम हिफ़्ज़ किया था। क्या तुम भी ऐसा ही महसूस करते हो?" "जी," उन्होने जवाब दिया।" जब मैने हज़रत नबी को सुना इसकी किरअत करते हुए, मुझे ऐसा लगा जैसे मैने इसे कभी नहीं सुना।"

जब सारी आसमानी किताबों की किरअत हो चुकी तो, एक आवाज़ ये कहते हुए सुनाई दीः **"ओ, ये, मुजरिम** (खताकारों, कुसरवारो, गुनाहगारों)। **ये अब अलग हो जाएँ।"** इस पुकार पर, ठहरी हुई जगह, यानी अरसात चौराहा हरकत में आ गया। इस पर, सारे लोग, खौफ़ में आ गए, एक दूसरे में फंस गए। फरिश्तें जिन्नात में फंस गए, जो बदले में इंसानी मखलूक से फंस गए। उसके बाद एक आवाज़ सुनाई दीः **"या आदम! अपने बच्चे दिखाओ जो दोज़ख के लायक हैं।"** आदम अलैहिस-सलाम पूछेंगेः "या रब्बी। उनमें से कितने? जनाब-ए-हक़ फरमाएंगेः **"उनमें से निनयानवें फ़िसद (99%) दोज़ख में, और एक फ़िसद (1%) जन्नत में।** काफ़िरों और मुलहिदों और ग़ाफ़िलों के बाद जो अहल-अस सुन्नत के रास्ते से भटक गए थे वो अलग हुए, मोमिनों जिन्हें छांटा गया वो तादाद में इतने कम थे जिसे अल्लाह तआला मुठ्ठी भर कहते हैं। इसलिए अबू बक्र सिददीक रज़ी अल्लाहु अनह की रिवायत का मतलब हैंः **"बाकी बचने वाले (सिर्फ़) हमारे रब की मुठ्ठी को भरने के लिए काफ़ी हैं।"**

उसके बाद इबलीस और उसके शैतान लाए जाएँगे। जो गुनाह उन्होने किए होंगे वो उनके अच्छे कामों से ज़्यादा भारी होंगे। अगर इस्लाम एक शख्स के पास पहुँचता (दुनिया में उसकी ज़िंदगी के दौरान), तो उसके सवाब (अच्छे काम) और बुरे कामों को बेशक तौला जाता। जब शैतान को पक्का पता चलता के उनके गुनाह ज़्यादा भारी हैं और उन्हें अज़ाब में धकेला जाएगा वो कहेंगेः "आदम अलैहिस-सलाम ने हमारे साथ नाइंसाफ़ी की। फरिश्तें जिन्हें जेबानी कहा जाता है हमें बालों से पकड़ेंगे और दोज़ख तक घसीटते हुए ले जाएंगे।"

इस पर एक आवाज़ जनाब-ए-हक़ से आएगी जो कहेगी, जैसे के सूरह मोमिन की 17वीं आयत-ए-करीमा से वाज़ेह हैंः **"उस दिन हर रूह को जो उसने कामाया उसका बदला दिया जाएगा। उस दिन कोई बेइंसाफ़ी नहीं**

होगी। अल्लाह तआला हिसाब लेने में तेज़ है।" एक बड़ी किताब, इतनी बड़ी जो मशरिक और मग़रिब के बीच के हिस्से को कवर करने के बराबर, वो सबके लिए लाई जाएगी। इसमें मखलूक के सारे कामों का लिखा हुआ रिकॉर्ड होगा, काबिले माफ़ी और बड़े गुनाहों सबका। अल्लाह तआला किसी के साथ नाइंसाफ़ी नहीं करेगा। हर दिन, जैसा भी हो हर मखलूक ने किया हो वो किताब में अल्लाह तआला को पैश किया जाता हैं। अल्लाह तआला किरामुन बेरेरा कहे जाने वाले फरिश्तों, यानी शरीफ़ और फरमाबरदारों को हुकूम देगा सूरह अबसा की 16वीं आयत-ए-करीमा के उनके कामों को इंदराज करें। वो किताब होगी जिसे बाहर लाया जाएगा। इसलिए सूरह जाज़िया की 29वीं आयत-ए-करीमा का बाबरकत मतलब जो इस तरह वाजेह हैंः "**...क्योंकि हमारे पास वो सब रिकॉर्ड में हे जो तुमने किया।"**

उसके बाद एक आवाज़ हर एक को, एक बाद एक हिसाब के लिए पुकारेगी। हर किसी के लिए अलग से फैसला किया जाएगा। सूरह नूर की 24वीं आयत-ए-करीमा वाज़ेह करती हैः **"उस दिन जब उनकी ज़बाने, उनके हाथ, और उनके पैर उनके अमाल की गवाही देंगे।"**

एक रिवायत के मुताबिक जो हम तक पहुँचाई गई, एक शख्स को अलाह तआला की हुज़ूर में खड़ा किया जाएगा। जनाब-ए-हक उससे कहेगाः **"ए, तुम, बुरे गुलाम! तुम गुनाहगार और नाफरमान हो।"** पैदा हुआ गुलाम कहता हेः "या रब्बी! मैने इनका इरतकाब नहीं किया, (यानी मुझे गुनाहों को करने का इलज़ाम लगाया जा रहा है)" **"तुम्हारे खिलाफ सबूत और गवाहियाँ हैं।"** हफ़ाज़ा के फरिश्तों को बुलाया जाता है उस शख्स का कहना हैंः "ये मेरे खिलाफ़ झूठ बोल रहे हैं " ये वाक्या सूरह नहल की 11वीं आयत-ए-करीमा में बयान हैं जिसका मतलब **"उस दिन सब को लाया जाएगा, हर जान खुद के लिए जद्दोजहद करेगी..."** फिर उसका मुँह बंद कर दिया जाएगा। ये वाक्या

सूरह यासीन-ए-शरीफ की **65**वीं आयत-ए-करीमा में बयान हैं जिसका मतलब **"उस दिन मैं, अज़ीम-उस-शान, उनके मुंह पर मुहर लगा दूंगा। लेकिन उनके हाथ मुझ से बोलेंगे, और उनके पैर उस सबकी गवाही देंगे जो उन्होने किया।"** इसके मुताबिक, नाफरमान के अज़ा उनके खिलाफ गवाही देंगे, और हुकूम दिया जाएगा के उन्हें दोज़ख में ले जाया जाए। मुजरिम [यानी मज़हब के दुश्मन, लोग जो हराम करते हैं, और वो लोग जो नमाज़ को अहमियात नहीं देते बराए मेहरबानी **सआदत अबदिया** के चौथे हिस्से को नमाज़ की तफ़सीली जानकारी के लिए देखिए।) वो अपने ही अज़ा पर चिल्लाना और पीटना शुरू कर देते हैं। उनके अज़ा जवाब देंगेः **"...ये गवाही जो हमने दी हैं ये हमारी मरज़ी नहीं हैं। वो, अकेला, सब मखलूक को बात कराता है..."** ये वाक्या सूरह फसलत की **21**वीं आयत-ए-करीमा में बयान है। सारे हिसाब निपटाने के बाद, सारे लोगों को एक पुल जिसे सिरात कहा जाता हैं वहाँ भेज दिया जाता है।

मुजरिम जो सिरात पुल को पार करने में नाकाम रहते हैं और गिर जाते हैं उन्हें दोज़ख के रखवालों को दे दिया जाता है, यानी उन फरिश्तों को जिन्हें अज़ाब देने के काम पर मामूर किया गया है। वो रोना और कराहना शुरू कर देते हैं। खास तौर से मोमिनीन और मुवाहिदीन में से नाफरमानों का सख्त रोना है। जैसे के फरिश्ता (अज़ाब का आयद करने वाला) उन्हें पकड़ता है और दोज़ख में फैंकता है, फरिश्तें कहते हैंः **"...ये दिन हैं (उठाए जाने का) जिसका तुम से वादा किया गया था,"** जिसे अंबिया की **103**वीं आयत-ए-करीमा में वाज़ेह किया गया हैं।

अज़ीम सिसकी- वहाँ चार मराहिल हैं जहाँ दोज़ख के लोग बहुत तलखी के साथ सिसकते और रोते हैंः पहली सिसकी जब सूर (तुरही) सुनाई देता हे तब होती है, दूसरी उस वक्त होता है जब दोज़ख अपने आपको फरिश्तों से आज़ाद करती है और महश्र की जगह (जमा हुए) पर जमा हुए लोगों पर कुदती है, तीसरा मरहला है जब वो आदम अलैहिसा-सलाम के पास

जाते हैं उन्हें अल्ल्लाह तआला के पास भेजने के लिए, और चौथा जब उन्हें दोज़ख में अज़ाब देने के लिए उस पर फरिश्तों के हवाले किया जाता है।

दोज़ख के लोग अपनी जगहों पर चले जाते हैं, और सिर्फ़ लोग जो अरसात के चौराहे पर रह जाते हैं वो मोमिन होते हैं मुसलमान, लोग जो अच्छे अमाल वाले हैं और खैरात करने वाले, आरिफ़, सिद्दिक, वली, शहाईद (शहीद), सालिह (पाक मुसलमान), और रसूल (पैगम्बर)। शक्की ईमान के साथ लोग, मुनाफ़िक, ज़िंदिक, बिदअती, [यानी जो अहल-अस-सुन्नत के उसूल नहीं मानतें,] सबको पहले ही दोज़ख में भेजा जा चुका होगा। अल्लाह तआला उनसे कहेगाः **"ए, तुम, लोगों। तुम्हारा रब्ब कौन है?"** वो अल्लाह है," वो कहेंगे। **"क्या तुम उसे जानते हो?"** "हा, हम जानते हैं।" इस पर, एक फरिश्ता उनके हाथ की तरफ़ से अरश-ए-आला से निकल कर आएगा। वो इतने बड़े हजम का होगा के सात समुंद्रों का पानी एक कतरा बनेगा अगर उसे अंगूठे की नोक पर रखा जाए।" अना रब्बोकूम (मैं तुम्हारा रब हूँ)," फरिश्ता महश्र के लोगों से कहेगा, क्योंकि उन लोगों को परखने के लिए अल्लाह तआला उसे हुकूम देगा ऐसा करने के लिए। महश्र के लोग जवाब देंगे, "हमें अपने अल्लाह पर भरोसा है के तेरे खिलाफ़ हमारी हिफ़ाज़त करेगा।"

उसके बाद उनके सीधे हाथ की तरफ़ से अर्श से एक फरिश्ता नाज़िल होगा। चौदह समुंद्र नज़र से हट जाएंगे अगर वो अपने पैर की नोक उस पर रख देंगे। वो महश्र के लोगों से कहेंगे, "मैं तुम्हारा रब हूँ।" उन्हें भी वही जवाब मिलता हैः "हमें अल्लाह पर भरोसा है के वो हमारी तेरे खिलाफ़ हिफ़ाज़त करेगा।"

इसके बाद अल्लाह तआला उन्हें नरमी और अच्छे से बरताव करेगा जिससे वो खुश हो जाएँ। सारे महश्र के लोग अपने आपको झुका लेंगे।

जनाब-ए-हक़ उनसे कहेगाः **"तुम ऐसी जगह पर आए हो जहाँ तुम कभी खुद को ग़ैर नहीं महसूस करोगे, ना ही ये जगह तुम्हें कभी डर दिलाएगी।"**

अल्लाह तआला सारे मोमिनों को सिरात पुल से गुज़ार देगा। मोमिनों को जन्नत में उनके घरों में ले जाया जाएगा, जो अलग होंगे, उन औहदों के हिसाब से जो उन्होने हासिल किए। लोग पुल को ग्रुपों में पास कर लेंगे। सबसे पहले रसूल, फिर नबी, फिर सिद्दीक, फिर वली और आरिफ़, फिर नरमाई और खैरात के लोग, फिर शहीद, और फिर दूसरे मोमिनों को ले जाया जाएगा। मुसलमान माफ न किए जाने वाले गुनाहों के साथ वही एक तरफ़ गिरे होंगे, औंधे मुंह, और दूसरे कैद में पड़े होंगे अराफ़ में। कुछ लोग कमज़ोर ईमान के साथ सिरात को सौ सालों में पार करेंगे, और दूसरे हज़ारों सालों में। ताहम, उन्हें दोज़ख की आग नहीं भूगतनी पड़ेगी।

एक बार एक शख्स अपने रब (अल्लाह तआला) को देख लेगा, उसे कभी भी दोज़ख में नहीं डाला जाएगा। हमने **इसतिदराज** नाम की अपनी किताब में मुसलमानों और मोहसिनों के ज़रिए हासिल किए गए मरतबों के बारे में बताया है। उनके चेहरे एक रोशनी की चमक की तरह पार कर लेंगे। और दूसरे लोगों की एक कसीर तादाद भूख और प्यास से गुज़रेगीः उनके फैफड़ें टुकड़ों में बँट जाएँगे, इसलिए वो धुंए की तरह हवा छोड़ेंगे। वो कौसर को तालाब से पानी पिएंगे, जिसके प्याले आसमानी सितारों से भी बड़े होंगे और जो इतना लंबी रकबे का होगा जितना के जेरूस्सलाम और यमन के बीच का फासला और एदेन और मुबारक शहर मदीना के बीच का रास्ता। ये हकीकत हमारे नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' के मुबारक कहे तसदीक की गई हैं जो इस तरह पढ़ी जाएगीः **"मेरा मिंबर तालाब के ऊपर है,"** जिसका मतलब हैः "मेरा मिंबर हौज़े कौसर के दोनों किनारों पर है।"

लोग जो हौज़े कौसर से परे हैं वो सिरात पर कैद में रखे गए हैं, और उनके मरतबे मुखतलिफ़ हैं, उनके गुनाह की बुराई के ऊपर मुनहसिर हैं।

बहुत सारे लोग जो वुज़ू सही अदा नहीं करते। बहुत सारे लोग हैं जो नमाज़ अदा करते हैं, ताहम वो अपनी नमाज़ के बारे में बताते हैं अगरचे कोई उनसे उसके बारे में पूछता नहीं हैं, और वो उसे खुज़ूअ और खुशअ से नहीं पढ़ते सिर्फ़ एक चींटी उन्हें काट ले तो वो नमाज़ के बारे में भूल जाते हैं। और अपने आपको चींटी में मसरूफ़ कर लेते हैं। दूसरी तरफ़, वो जो (कमाल की हालत को पहुँचे होते हैं) अल्लाह तआला की अज़मत (बड़ाई) और जलालत (शान) को जानते हैं वो कोई मज़ाहमत नहीं करते चाहे अगर कोई हाथ और पैर ही क्यों न काट ले। क्योंकि, उनकी इबादत सिर्फ़ अकेले अल्लाह तआला के इरादे से हैं। एक शख्स होता है वो जितना उसकी अज़मत और जाहो जलाल के बारे में जानता है और उसके इलम के बारे में वो उतना खुशुअ और डर महसूस करता है। ये हालत उस शख्स के सब्र के साथ वाज़ेह की जा सकती है जो एक बादशाह की मौजूदगी में खड़ा है जबकि उसे एक बिच्छू ने काट रखा हो। इज़्ज़त जो बादशाह ने हुकूम दी है उसकी तरफ़ से उसे कोई भी रद्द अमल करने से बचाती है। हमारी इस मिसाल में महान शख्स एक मखलूक है। आखिरकार, जो बदले में लासनी हद में हैं अपने फायदों और नुकसानों के बीच में फर्क करने में।

हम किस तरह खुद उस एक आदमी की हालत का अंदाज़ा लगा सकते हैं जो अल्लाह तआला के हुज़ूर में खड़ा है, जो अज़ीज़ और जलील है, जैसा कि हम कहते हैं एक शख्स के लिए जो हैबत और सल्तनत और अज़मत और जबरूत (जेबरूत) और कहर-उ-ग़लाबा-ए-इलाहिया को जानता है इसके लिए बेशक खुसुअ और खुशूअ चाहिए होता है अल्लाह तआला के हुज़ूर खड़े होने के लिए।

एक कहानी बताई गई एक शख्स की जिसने अपने इबादत के कामों को ढंग से किया और तौबा की (गुनाहों के लिए जो उसने किए) और ताहम उस शख्स को देखने में नाकाम रहा जिसके साथ उसने बुरा किया था और उस तक रसाई की नाइंसाफ़ी के लिए जो उसने उसके साथ कीः उसे अल्लाह तआला के हुज़ूर ले जाया जाता है। वो इंसानी हुकूक (जो उसने दुनिया में खराब किए, अगर कोई हुए,) और जिसे वो करने में नाकाम रहता है, खुल कर सामने आ जाते हैं। सताया गया शख्स उसे गले लगाता है। अल्लाह तआला उस मज़लूम शख्स से कहते हैंः **"ओ, तू, सताए गए शख्स! ऊपर देख!"** जब सताया गया ऊपर देखता है, वो एक बहुत बड़ा महल देखता है। वो हैरतअंगेज़ तौर पर सजा हुआ और बड़ा था। सताया गया शख्स पूछता हैः "या रब्बी! ये क्या है?" अल्लाह तआला फरमाता हैः **"ये बिकने के लिए हैं। क्या तुम इसे मुझ से खरीदोगे?"** "या रब्बी! मेरे पास बदले में इसकी कीमत चुकाने के लिए कुछ नहीं हैं," गुलाम बेचारगी से कहता है। इस पर अल्लाह तआला कहता हैः **"ये महल तुम्हारा है, अगर तुम अपने भाई को बचा लो** (अज़ाब से) **उस नाइंसाफ़ी के लिए इसे माफ करके जो उसने तुम्हारे साथ की।"** "या रब्बी! मैं तेरी अमर-ए-इलाही (हुकूमे इलाही) की रहमत के लिए छोड़ने के लिए राज़ी हूँ," गुलाम ने रज़ामंदी दी।

ये अल्लाह तआला का बरताव है ज़ियादती करने वालों के साथ जो तौबा कर लेते हैं। दरअसल, उसने सूरह इसरा की **25**वीं आयत में एलान किया है, जिसका मतलब **"मैं, अज़ीम-उस-शान-उन लोगों को माफ़ कर देता हूँ जो तौबा करते हैं।"** एक शख्स जो तौबा करता है वो शख्स गुनाह से रूकता है, या जुल्म से, जैसा भी मामला हो, फैसले के साथ के इसे दोबारा नहीं करेगा। दाऊद अलैहिस-सलाम को **अव्वाब** (बुरदबार/बुर्दबार अस्तग़्फ़ार करने वाला) कहा जाता है। [ताहम, दाऊद (डेविड) अलैहिस-सलाम ने कभी कोई गुनाह का काम नहीं किया। उन्हें क्या करने के लिए बताया गया [जिसे

एक **खिलाफ़-ए-औला** कहा जाता है] मामला रसूलों (नबियों) के साथ है दाऊद अलैहिस-सलाम के अलावा।

ए मेरे दिल! वो तेरी पौशिदा आग मेरी महक को जला रही रही है;

वो रोना और सिसकना जो तुझ से निकल रहा है वो आसमानों तक जा रहा है।

कितना नायाब दिवाना हैं तू, क्या तू कभी अच्छा नहीं हो सकता?

तूने अपने आपको इतनी शर्मिंदगी में डाला, क्या तुझ में ऐसे हवास नहीं है?

क्योंकि तू उस जाल में फंस गया है जो अबदी है,

क्या तेरे बहार के फूल नरम होकर नतीजा खेज़ अंजाम को पहुँच जाएँगे?

दसवाँ बाब

दो दूसरे नाम जिनसे **अरसात का चौराहा** पुकारा जाता है **मुअकिफ़** और **महश्र की जगह** हैं। इस्लामी आलिमों के ज़रिए दी गई इत्तलाआत के किस तरह वहाँ रह रहे लोगों को जमा किया जाएगा, मुख्तलिफ़ हैं। बुलाए जाने के वाक्यात तफसीर की किताबों में और हदीसों में बयान सही हैं। बराए मेहरबानी **सआदत अबदिया** के दूसरे हिस्से के छठे बाब को हदीसों की किस्मों के लिए देखिए।) कातिनों का सबसे पहला लोगों का ग्रुप होगा जिसे अल्लाह तआला अंधे मोमिनों को इनाम देगा जो सही यकीन रखते थे, (जिसका मतलब जो अहल-अस-सुन्नत के आलिमों के ज़रिए बताए गए अकीदे के उसूलों पर मुश्तमिल हैं।) हाँ! एक आवाज़ पुकारेगीः "कहाँ हैं वो लोग जिन्हें दुनिया में रोशनी से महरूम रखा गया?" उन से कहा जाएगाः "तुम किसी से भी सबसे

ज़्यादा अल्लाह तआला के जमाल (हुसन) को देखने के लायक हो।" उसके बाद अल्लाह तआला उनके साथ हया (शर्मीला, शर्म का अहसास) के साथ बरताव करेगा, और उनसे कहेगाः **"तुम सीधी तरफ़ जाओ!"**

एक झंडा उनकी ताज़ीम के लिए तैयार होगा और शुऐब अलैहिस-सलाम को दिया जाएगा, जो उनके इमाम बनेंगे। लातादाद फरिश्तें नूर के उनको साथ देंगे। अल्लाह तआला के अलावा उनकी तादाद कोई नहीं जानता। वो उनमें शामिल होंगे और वो रोशनी की तेज़ी से सिरात को पार कर लेंगे। सब्र और हिल्म में (नरमाहट, हलावट), उनमें से हर एक अब्दुल्लाह इबनि अब्बास रज़ी अल्लाहु अनहुमा जो **68** [**687** ए.डी.] में ताइफ़ में रहलत फरमा गए।) की तरह हैं और मुसलमान जो (आदत और तमीज़ में) उनसे मिलते हुए हैं।

उसके बाद, "वो कहाँ हैं जो मुसिबतों में सब्र करते थे," एक निदा आती है। फिर लोग जो कोढ़ या दूसरी छूत की बीमारी सह रहे थे उन्हें बुलाया जाता है। अल्लाह तआला उन्हें खुशआमदीद कहता है। उन्हें, भी सीधा जाने के लिए कहा जाता है। एक हरा झंडा उनके लिए तैयार किया जाता है। उसे अय्यूब (जॉब) अलैहिस-सलाम को दिया जाता है। वो असहाब-ए-यामीन के इमाम बनाए जाते है। [बराए मेहरबानी **सआदत अबदिया** के चौथे हिस्से के **27**वें बाब को असहाव-ए-यामीन के लिए देखिए।] सबर और हिल्म (दो) सिफ़ास हैं जो एक शख्स के साथ चलती हैं जो मुबतला (प्यार में) हो। उनमें उकेल बिन अबी तालिब रज़ी अल्लाहु अन्ह और जो उनसे मिलते हुए हैं वो शामिल हैं।

उसके बाद एक आवाज़ पुकारती हैः "कहाँ हैं वो जवान लोग ईमान और पाकिज़गी के साथ, जो इस्लाम के दुश्मनों के ज़रिए लगाए गए झूठ और तोहमतों पर यकीन नहीं रखते थे और जो अहल-अस-सुन्नत के आलिमों के

ज़रिए पढ़ाए गए अकीदे के उसूलों पर मज़बूती से कायम थे और जिन्होने कामिल तौर पर अपने सही ईमान और पाकिज़गी की हिफ़ाज़त की।" उसी तरह वो भी लाए गए। अल्लाह तआला ने उनका भी ख़ैरमकदम किया, और कहा, "मरहबा उसने जो मुतंखिब किया उसी तरह से उनकी तारीफ़ और ताज़ीम की। उनसे भी उसने कहा, **"सीधी तरफ़ चले जाओ।"** एक झंडा उनके लिए तैयार किया गया और उसे यूसुफ़ अलैहिस सलाम को दे दिया गया। यूसुफ़ अलैहिस सलाम उनके इमाम बन गए ऐसे जवानों के साथ जो सिफ़त जाती हैं वो हैं ना-महरम वो नोजवान जो ना महरम लड़कियों को नज़रअंदाज़ करता हे बराए मेहरबानी ना-महरम के बारे मे जानकारी के लिये **सआदत अबदिया** के चौथे हिस्से को देखें। ऐसे लोगों में राशिद बिन सुलेमान रहिमाहुल्लाहु तआला, और उनकी तरह कोई भी जवान मुसलमान हैं।

उसके बाद एक दूसरी आवाज़ ने पुकारा "कहाँ हैं वो (मुसलमान) जो अल्लाह तआला की रज़ा के लिए दूसरे को प्यार करते हैं और जो मुसलमानों को पसंद करते हैं और काफ़िरों और बिदअतियों को नापसंद करते हैं?" इसलिए अल्लाह तआला उन्हें भी "मरहबा," कहता है, और वो ताज़ीम पाते हैं जिस तरह वो मुंतखिब करता है। उन्हें भी सीधे तरफ़ जाने का हुकूम दिया जाता है। जो अल्लाह तआला के दुश्मनों से नफरत करते हैं उनकी दो सिफ़ात हैं सब्र और हिल्म, इसलिए वो कभी भी दुनियावी मामलों में मुसलमानों के लिए ग़ैर दोस्ताना या नुकसान दायक नहीं हुए। हज़रत अली रज़ी अल्लाहु अनह ऐसे लोगों की मिसाल हैं, और वो जो उनकी तरह बरताव करते हैं।

उसके बाद, दूसरी आवाज़ पुकारती हैः "कहाँ हैं वो लोग जो अल्लाह तआला से डरते थे और इसलिए हराम के कामों को नज़रअंदाज़ करते थे और परेशानी में रोते थे?" इसलिए उन्हें भी उसी तरह लाया गया। उनके आँसुओं को शहीदों के खून और आलिमों के ज़रिए इस्तेमाल की गई, सियाही के साथ तौला गया। उनके आँसुओं का वज़न (दोनो से) ज़्यादा था। उन्हें भी सीधे हाथ

की तरफ़ जाने का हुकूम दिया गया। एक झंडा सितारों वाला मुख़तलिफ़ रंगों में रंगा उनकी ताज़ीम के लिए तैयार किया गया। क्योंकि, वो ऐसे लोगों के बीच में रहते थे जो हर तरह के गुनाह करते थे और गुनाह के कामों की तरफ़ रागिब किए जाते थे अल्लाह तआला की तरफ़ से माफ़ी दिलाए जाने के वादे पर, और इसके बावजूद वो अपने आपको हराम के कामों को करने से बाज़ रखने में कामयाब थे। अपनी चिंता में ऐसे कोई गुनाह को ना करने के लिए और अल्लाह तआला के डर की वजह से, वो आँसू बहाते थे। उनमें से कुछ अल्लाह तआला के डर से रोते थे, उनमें से कुछ चिंता से रोते थे के दुनियावी माया में न पड़ जाएँ और दूसरे नदामत से रोते थे। उनका झंडा नूह अलैहिस-सलाम को सौंपा गया। आलिम उनसे पहले जाना चाहते थे। "उन्होने कहा, हमने उन्हें सिखाया के उनका रोना अल्लाह के लिए होना चाहिए।" एक आवाज़ सुनाई दीः "या नूह! जहाँ तुम हो वहीं रहो!" नूह अलैहिस-सलाम फौरन रूक गए। और उनके साथ के लोगों ने भी ऐसा किया।

अहले-सुन्नत के ज़रिए इस्तेमाल की गई सियाही को शहीदों के ज़रिए बहाए गए खून के मुखतलिफ़ तौला गया। आलिमों के ज़रिए इस्तेमाल की गई स्याही का वज़न भारी था, और उन्हें सीधे हाथ की तरफ़ का हुकूम दिया गया। शहीदों के लिए ज़ाफ़रानी झंडे का हुकूम दिया गया। इसे याहया (जॉन) अलैहिस-सलाम को सौंपा गया। याहया अलैहिस-सलाम ने उनकी रहनुमाई की। आलिम जो उनसे पहले जाना चाहते थे, ने कहाः "शहीद हमारे से इल्म हासिल करने के बाद लड़े। हम उनसे पहले जाने के मुसतहिम हैं।" इस पर अल्लाह तआला ने अपनी रहमत दिखाई, और कहाः **"आलिम मेरी नज़र में मेरे नबियों की तरह हैं।"** उन्होने आलिमों से कहाः **उनकी"शफ़ाअत, करो जिन लोगों को तुमने मुनखिब करा।"** इसलिए आलिमों ने अपने अहल-ए-बैअत, (यानी अपने कुंबों की,) के लिए, अपने पड़ोसियों के लिए, अपने मोमिन भाइयों

के लिए, और उनके लिए जो उनके शार्गिद थे उनकी फरमाबरदारी करते थे शफ़ाअत करी।

ये मंदरजाज़ेल तरीके से वाक्या हुआः हर एक आलिम के लिए एक फरिश्ता आवाज़ लगाएगाः "अल्लाह ने फलाँ फलाँ को हुकूम दिया, जो एक आलिम हैं, शिफ़ाअत करे।वो किसी की भी शिफ़ाअत कर सकते हैं जिसने उनकी छोटी सी भी खिदमत की हो या जिसने उन्हें एक छोटा लुकमा दिया हो खाने के लिए या कुछ पानी पीने के लिए या जिसने उनकी किताबें फैलाई खड़े हो जाएंगे ताकि आलिम उनकी शिफ़ाअत कर सकें।

जैसा के हदीस-ए-शरीफ़ में बयान हैं, रसूल सबसे पहले लोग होंगे (दूसरों के लिए) शिफ़ाअत करने के लिए।उसके बाद नबी अलैहिम-उस -सलवात-उ-व-त-तसलीमात अगर एक पैग़म्बर पर एक आसमानी किताब और एक नई तकदीर भेजी जाती हैं तो उन्हें एक रसूल कहा जाता है।अगर उनका मकसद उनसे पहले वाले पैग़म्बर की तकदीर/मरज़ी को बहाल रखना हैं, तो उन्हें एक नबी कहा जाता है।), आलिम उनकी तकलीद करते हुए (अहले सुन्नत के)।आलिमों की ताज़ीम के लिए एक सफ़ेद झंडा तैयार किया जाता है।इसे इब्राहिम अलैहिस-सलाम को दे दिया जाता है।इब्राहिम अलैहिस-सलाम छुपी हुई मारिफत को खोजने के सारे रसूलों के आगे हैं इसलिए उन्हें झंडा दिया गया।

उसके बाद एक दूसरी आवाज़ ने पुकाराः "वो गरीब लोग कहाँ हैं जो अपनी रोज़ाना की रोज़ी के लिए काम करते थे और पसीना बहाते थे और अपनी कमाई पर शाकिर थे?" इसलिए गरीब लोगों को अल्लाह तआला की हाज़िरी में लाया गया।अल्लाह तआला उनकी तारीफ़ करता है,"**मरहबा, तुम लेगों पर जिनके लिए दुनिया एक तहखाना थी**।" इन लोगों को भी असहाब-ए-यमीन (जन्नत के लोगों) में शामिल होने का हुकूम दिया गया।एक

पीला झंडा उनके लिए तैयार किया गया, ईसा अलैहिस-सलाम को इसे सौंप दिया गया। इस तरह ईसा अलैहिस-सलाम उनके इमाम बन गए और उनकी रहनुमाई की।

उसके बाद एक दूसरी आवाज़ ने पुकाराः "अग़ानिया कहाँ हैं, यानी अमीर लोग जो (अपनी मालदारी) शुक्रगुज़ार थे और अपने माल और पैसे को इस्लाम को फैलाने में लगाते थे और मुसलमानों को ज़ालिम से बचाने के लिए?" इसलिए उन्हें उसी तरह लाया गया। अल्लाह तआला ने उन्हें रहमतें याद करवाई जो उसने उन्हें दी थीं (दुनिया में), जिसमें उन्हें पाँच हज़ार साल लगते। दूसरे लफ़्ज़ों में, उसने उन्हें याद दिलाया इस तअल्लुक से के वो किस तरह अपना माल खर्च करते थे (जो उसने उन्हें दिया था)। उनके लिए भी, एक झंडा मुखतलिफ रंगे का उनके लिए तैयार किया गया और सुलेमान अलैहिस सलाम को सौंप दिया गया, जो अपनी बारी में उनके इमाम बने। उन्हें भी असहाब-ए-यमीन को पकड़ने का और उनमें शामिल होने का हुकूम हुआ।

जैसा के एक हदीस-ए-शरीफ़ में बयान हैं के चार चीज़ें चार दूसरी चीज़ों का मुतालबा करती हैं के वो उनके लिए गवाही देती हैं। एक आवाज़ लोगों से कहती है जो अपने माल और मरतबे को लोगों पर ज़ुल्म करने में इस्तेमाल करते थेः "किस माल ने तुम्हें मसरूफ़ रखा, इसलिए तुम अल्लाह तआला की इबादत से ग़ाफ़िल हो गए?" उन्होने जवाब दियाः "अल्लाह तआला ने हमें माल और मरतबा दिया। उन्होने हमें अल्लाह तआला की तरफ़ से अपने फर्ज़ को अदा करने से बाज़ रखा।" फिर उनसे पूछा गयाः "कौन अम्लाक के लहज़े में बढ़ा हैः तुम या सुलेमान अलैहिस-सलाम?" उन्होने कहा, "सुलेमान अलैहिस-सलाम बड़े हैं।" इस पर अल्लाह तआला ने फरमायाः "इतनी बड़ी माल की कीमत उन्हें मेरी इबादत करने से बाज़ नहीं रख सकी, लेकिन तुम्हारे माल ने तुम्हें इबादत से बाज़ रखा, ऐसा कैसे?"

उसके बाद, “अहल-ए-बेला कहाँ हैं,” एक आवाज़ ने पूछा। इसलिए, वो उसी तरह लाए गए। उनसे पूछा गयाः “क्या चीज़ हैं जिसने तुम्हे अल्लाह तआला की इबादत से बाज़ रखा?” उन्होने जवाब दियाः “अल्लाह तआला ने दुनिया में हमें मुश्किलों और ना मुसलसल आफ़त रूकने वाली तबाहियों में डाला हुआ था। इसलिए हम उसके ज़िकर और इबादत से महरूम रह गए?” उनसे दोबारा पूछा गयाः “मुसिबत के सिलसिले में, कौन सी भारी हैं; वो वाली जिसने अय्यूब (जॉब) अलैहिस-सलाम को घेरा या वो जिसका तुम शिकार हुए?” अय्यूब को बहुत भारी मुसीबतों से गुज़रना पड़ा।” उन्होने जवाब दिया। इस पर उन्हें डांटा गयाः “तुम किस तरह कह सकते हो के मुसिबतों ने तुम्हें अल्लाह तआला की इबादत करने से बाज़ रखा इस हकीकत के मंददेनज़र के उन्होने अयूब को अल्लाह तआला का ज़िक्र करने से बाज़ नहीं रखा या उसके मज़हब को उसके बंदो के बीच फैलाने या उसकी तरफ़ अपने फराईज़ को अदा करने से बाज़ नहीं रखा? बराए मेहरबानी **सआदत-ए-अबदिया** के चौथे हिस्से के **25**वें बाब को ‘ज़िक्र’ के लिए देखिए।)

उसके बाद उन्होने पुकाराः “कहाँ हैं लोग और कहाँ हैं कब्ज़े में किए गए गुलाम और जारियाएँ?” उन्हें भी, अल्लाह तआला के हुज़ूर लाया गया। उनसे पूछा गयाः “किस चीज़ ने तुम्हें अल्लाह तआला की इबादत से रोके रखा?” उन्होने जवाब दिया। हम उस रहमत में आ गए और जवाबी की उमर के मज़ों में मशगूल हो गए। हमने सोचा के जवानी हमेशा हमारे साथ रहेगी। हमने अल्लाह तआला का मज़हब नहीं सीखा। इसलिए हम उसे उसका हक़ देने में नाकाम रहे।” और काबिज़ लोगों ने कहाः “हम तो गुलाम और जारियाएँ थे, इसलिए हम अपने मालिक की खिदमत करते थे। हम उन लोगों की इबादत करते थे जो दुनियावी मामलों में ऊँचे थे। हम जाहिल रह गए। हम गलत थे। या रब्बी। हमें तुम्हारे हक को तुम्हें अदा करने से महरूम रखा गया।” इस पर उनसे पूछा गयाः “कौन ज़्यादा खुबसूरत था; तुम युसूफ़

अलैहिस-सलाम?" उन्होने कहा, "युसूफ़ अलैहिस-सलाम ज़्यादा खुबसूरत थे।" "फिर," उन्हे बताया गया, "तुम ये कैसे कह सकते हो के हुस्न (और जवानी की उमर) ने तुम्हें अल्लाह तआला की इबादत करने से दूर रखा हकीकत के बावजूद के यूसुफ़ अलैहिस-सलाम को अल्लाह तआला की तरफ़ उसका हक पैदाएशी गुलाम होने के तौर पर अदा करने से कोई चीज़ नहीं रोक सकी?"

उसके बाद एक आवाज़ ने पुकाराः "वो गरीब लोग कहाँ हैं जो काम करने के लिए बहुत आलसी थे?" वो उसी तरह लाए गए। उनसे पूछा गयाः "किसने तुम्हें अल्लाह तआला के पैदाएशी गुलाम के फराईज़ अदा करने से बाज़ रखा?" उन्होने कहाः "हम काम नहीं करते थे। हमने कोई पेशा भी नहीं सीखा। [हमने अपना वक्त कॉफ़ी हाऊस, सिनेमा घरों, मैचों में खाली बैठ कर गंवाया।] अल्लाह तआला ने हमें गरीब बनाया। गरीबी और मस्ती ने हमें गुलाम होने के तौर पर अपने फराईज़ अदा करने से बाज़ रखा।" उनसे पूछा गया, "कौन ज़्यादा गरीब था; तुम या ईसा अलैहिस-सलाम" उन्होने कहाः "ईसा अलैहिस-सलाम हम से ज़्यादा गरीब थे।" इस पर उनसे कहा गयाः "फिर, तुम कैसे कह सकते हो के गरीबी, जो, इतनी ज़्यादा शदीद थी, के उन्हें अल्लाह तआला का एक गुलाम होने के तौर पर अपने फराईज़ अदा करने से नहीं रोक पाई या मज़हबी तालीमात फैलाने से, ये तुम्हारी लापरवाही का सबब बनी?"

अगर एक शख्स ऊपर बताए गए चार रूकावटों में से किसी एक के असर में हैं, तो उसे अपने मालिक के बारे में सोचना चाहिए! हमारे प्यारे नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहिस वसल्लम' ने मंदरजाज़ेल दुआ फरमाईः **"या रब्बी! मुझे अपने आप पर भरोसा है के तु मेरी दौलत साथ के साथ गरीबी के फितने से मेरा ध्यान रखेगा।"**

चलो ईसा (जिसस) अलैहिस-सलाम तुम्हारे लिए एक सबक की चीज़ हैः वो दुनिया में कोई चीज़ नहीं रखते थे। उन्होने **20** सालों तक एक ऊनी

लिबास पहना। सफ़र के दौरान, जो वाहिद शख्सी असर उनका था उनके पास एक कप था, एक बुनी हुई चटाई, और एक कंघा। एक दिन उन्होने एक आदमी को उसके हाथ से पानी पीते देखा। इस पर उन्होने अपना कप फैंक दिया। एक और दिन उन्होने देखा के कोई अपने हाथ से अपने बालों में कंघी कर रहा था। उन्होने अपना कंघा भी फैंक दिया। "मेरे पैर मेरा काठी वाला घोड़ा है। गुफ़ाएँ मेरा घर हैं। ज़मीन पर घास मेरा खाना हैं। दरिया का पानी मेरा मशरूब हैं, "उन्होने कहा। [अगरचे, ये तरीका इस्लामी मज़हब के ज़रिए नहीं सिखाया गया। ये इबादत का एक काम/अमल है मेहनत से काम करना और कमाना। ये ज़रूरी है के ज़्यादा कमाने के लिए, सख्त मेहनत से काम करना चाहिए, और अपनी कमाई को इस्लाम के हुकूम के तरीके से खर्च करना चाहिए।]

ये इस तरह एक हदीस-ए-शरीफ़ में बयान हैं, जो **रामूज़-उल-अहादीस** नाम की किताब (ज़िया-उद-दीन गूमूशानवी **1235**, गूमूशाने **1311** [**1893** ए.डी.], इस्तांबुल के ज़रिएः) में लिखी गई हैंः **"गरीब मेरे असहाब के लिए नबीब हैं। मेरी उम्मा (मुसलमानों) के लिए जो बाद के वक्त में रहेंगे; दौलत उनके लिए नसीब होगी।"** हम अब ऐसे वक्त में रह रहें जब गुनाहगार, गलत काम करने वाले, और लोग जो अपनी इबादत के कामों में मिलावट ज़्यादा करते हैं। इस वक्त में ये इबादत का सबसे बेहतर अमल होगा के हालाल, हराम, बिदअत, और काम जो कुफ़्र (बेयकीनी) का सबब बने उन सबको सीखना चाहिए, और उन तालीमात के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारनी चाहिए, और हलाल तरीके से कमाई करके अमीर बनना चाहिए। ये बड़ी नसीब की बात है के एक शख्स अपनी कमाई गरीब और मुसलमानों पर लगाए जो अहले सुन्नत की तालीमात की तबलीग़ कर रहे हों। वो कितने नसीब वाले हैं जो ऐसे बड़े नसीब को हासिल कर रहे हैं।] बराए मेहरबानी **सआदत-ए-अबदिया** के छठे हिस्सों को हलाल और हराम के लिए पढ़िए।)

जैसा के कुछ आसमानी सहीफ़ों में अल्लाह तआला के ज़रिए अपने पैगम्बरों को बयान को ज़ाहिर किया गया हैः **"ए तुम आलमियत! बीमारी और रियाकारी** दुनिया में **ज़िंदगी की दो हालतें हैं।जानबुझकर कत्ल करके कफ़फ़ारत (कफ़फ़ारा) के साथ मुकाबले में,** (यानी, जो कोई बुग़्ज़ रखते हुए किया जाए,) **अनजाने में किए गए कत्ल के लिए कफ़फ़ारत को कम माना गया है, और उस पर किसास नहीं पहुँचाया जाएगा।ताहम ये एक बुरा काम है।इसे भी ना करो।"**

अगर एक शख्स के दिल में जिसने गंभीर गुनाह किया हो ईमान हो, तो कुछ अज़ाब के बाद वो शिफ़ाअत हासिल कर सकता है।अल्लाह तआला उन पर रहम करेगा और हज़ारो सालों बाद उन्हें दोज़ख **से** बाहर निकाल देगा।ताहम, दोज़ख के लोगों की खालें जलने के बाद दोबारा तखलीक की जाएंगी।हसन बसरी रहमतुल्लाहु अलैह (डी.**110** [**728** ए.डी.] ने कहा, "काश मैं उन लोगों में से एक होता।" इसमें कोई शक नहीं है के हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैह एक ऐसे शख्स थे जो आखिरत में होने वाले वाक्यात के बारें में जानते थे।इंसाफ़ वाले दिन, एक मुसलमान लाया जाएगा।उसके पास कोई खैरात नहीं थी जो तराज़ू पर भारी होती।अल्लाह तआला उसके ईमान की रज़ा के लिए और मोमिन के लिए हमदर्दी के लिए, उससे कहता हैः **"जाओ दूसरे लोगों के पास और एक शख्स को देखो जो तुम्हें सवाब** (इनाम) **दे दे जो उसने अच्छे अमाल की वजह से और खैरात के कामों से हासिल किए** (जो उसने दुनिया में अदा किए)।**तुम उसकी रहमदिली की वजह से जन्नत में जा सकते हो।"** वो शख्स जाता है और देखता है के कोई उसकी इच्छा पूरी करने में उसकी मदद कर दे।जिससे भी उसने पूछा सबने यही जवाब दियाः "मुझे डर है के मेरी खुद की खैरात तराज़ू पर कहीं हल्की ना पड़ जाए।मैं तुमसे ज़्यादा ज़रूरतमंद हूँ।" अब वो बहुत उदास हुआ।कोई उसके नज़दीक आया और उससे पूछा के वो क्या चाहता है।" मुझे खैरात [सवाब] की ज़रूरत है।मैं

तकरीबन हज़ार लोगों से पूछ चुका हूँ। हर शख्स जिससे मैने पूछा उसने एक नफ़ीस सा जवाब ढूँढा और मना कर दिया, "मैं अल्लाह तआला की मौजूदगी में हाज़िर हुआ। मैने अपने सफहे पर कुछ नहीं पाया, सिवाए एक अकेले सवाब के। ये मुझे बचाने के लिए किसी भी तरह काफ़ी नहीं हैं। चलो मैं इसे तुम्हें दे देता हूँ। इसे ले लो।" पुरसुकून और खुश, ज़रूरतमंद शख्स चला गया। अल्लाह तआला जानता था कि क्या हुआ, लेकिन फिर भी आपने पूछाः "तुम किसके साथ वापिस आए हो?" उस शख्स ने अपनी पूरी मूहिम के बारे में बताया। अल्लाह तआला ने खैरात करने वाले को अपने हुज़ूर में बुलाया और उनसे कहाः **"मेरी रहमदिली मोमिनों के लिए तुम्हारी रहमदिली से ज़्यादा है। अपने मुसलमान भाई का हाथ पकड़ो, और तुम दोनो जन्नत में चले जाओ।"**

अगर तराज़ू के दोनों पलड़े एक ही नुकते पर हों और सवाब वाला पलड़ा भारी न हो, तो अल्लाह तआला कहेगाः **"ये शख्स ना ही जन्नत के लिए है ना ही दोज़ख के लिए।"** इस पर एक फरिश्ता एक सफहे के साथ आगे आएगा और उसे सय्इआत [गुनाह] के पलड़े पर रख देगा। उस पर एक अलामत होगी जो कहेगी, 'उग़'। इस तरह वो पलड़ा अच्छे अमाल से भारी हो जाएगा। क्योंकि ये, लफ़्ज़ एहतेजाज का है, "उग़", वालदेन की तरफ़ बोल गया। ये हुकूम-ए-इलाही लाता है के उस शख्स को दोज़ख में डाल दो। वो शख्स दाएँ बाएँ देखता है। वो मुतालवा करता है के अल्लाह तआला के हुज़ूर उसे बुलाया जाए। अल्लाह तआला उसे बुलाता है,ः **"ए, तूँ, नाफरमान गुलाम! तुमने मुझ से क्यों कहा के मैं तुम्हें बुलाऊँ?"** उसने जवाब दियाः "या रब्बी! मैं समझ गया के मैं दोज़ख में जा रहा हूँ क्योंकि मैं अपने वालदेन का नाफरमान था। बराए मेहरबानी उनके अज़ाब भी मेरे में शामिल कर दें और उन्हें दोज़ख से आज़ाद कर दें।" इस पर अल्लाह तआला ने कहाः **"तुम दुनिया में अपने वालदेन के लिए नाफरमान थे। लेकिन तुम आखिरत में उनके लिए महरबान हो**

गए। उनको उनके हाथों के साथ मज़बूती से पकड़ों और उन्हें जन्नत में ले जाओ।"

लोग जिन्हें जन्नत में नहीं भेजा गया फरिश्तों के ज़रिए पकड़े गए। क्योंकि, फरिश्तों को आखिरत के मामलात के बारे में बहुत अच्छी तरह पता है। दरअसल, लोगों का एक ग्रुप जिन्हें आखिरत (रहमतों में) से कोई हिस्सा नहीं मिला उन्हें बताया जाएगा कि वे (इस्तेमाल किए जाएंगे) दोज़ख की आग की लकड़ियाँ हैं। उनको इसलिए तखलीक किया गया (घेरने और) दोज़ख को भरने के लिए। जैसा के सूरह साफात की **24**वीं आयत से वाज़ेह है, अल्लाह तआला ने उनसे कहाः **"उन्हें रोको। उनसे सवालात किए जाएंगे।"**

उन्हें तब तक जेल में कैद रखा जाएगा जब तक के उनसे पूछ ना लिया जाए, जैसे के सूरह सफ़ात की **25**वीं आयत-ए-करीमा से वाज़ेह हैः **"तुम्हारे साथ किया मसला है, कि तुम लोग एक दूसरे की मदद नहीं कर रहे?"** नतीजन, उन्होने छोड़ दिया, अपने गुनाहों को कुबूल लिया, और उन सबको, दोज़ख में भेज दिया गया। इसी तरह, उम्मत-ए-मुहम्मद (मुसलमानों) के बीच में गंभीर गुनाह करने वालों को एक साथ लाया गया, सबको, जवान और बूढ़े दोनो को एक ही तरह से वहाँ लाया जाएगा। **मालिक**, दोज़ख का दरोगा, उन्हें देखेगा और कहेगाः "तुम एशकिया (दोज़ख के लोगों) में शामिल हो। ताहम मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे हाथ बंधे हुए नहीं हैं और तुम्हारे चेहरे सियाह नहीं हैं। कोई तुम्हारे जितना खुबसूरत नहीं है (सारे) दोज़ख में आए है।" वो कहेंगेः "या मालिक! हम मुहम्मद अलैहिस-सलाम की उम्मत हैं। ताहम हमारे गुनाह जो हमने (दुनिया में) किए हमें दोज़ख में ले आए। हमें अकेला छोड़ दो ताकि हम अपने गुनाहों पर रो सकें।" "रो लो (जिस तरह तुम चाहो)। लेकिन रोना अब तुम्हारे लिए कोई अच्छा नहीं करेगा, फरिश्ते ने जवाब दिया।

कई दरमियानी उम्र के गुनाहगार रोते हैं, कहते हुएः "मैं बेचारा! दर्द और परेशानियों में बद से बाहर चले गए।"

एक बूढ़ा शख्स अपनी सफ़ेद दाढ़ी अपने हाथ से पकड़ता है और रोता है, जिसका मतलबः अफसोस, मेरी छोटी उम्र मुझे दुख और बढ़ती फिक्रों के साथ छोड़ के चली गई।अब मेरी इतनी ज़िल्लत भरी और शर्मनाक हालत है!"

बहुत से लड़के रोते हैं, अफसोस करते हुएः "ओह! मैने अपने हाथों से अपनी जवान उम्र गंवा दी! इसलिए, मैं जवानी की रहमत का फायदा उठाने में नाकाम रहा!"

कई औरतें अपने खुद के बाल पकड़ेंगी और रोएंगी, मातम करते हुए कहेंगीः "अफसोस हो मुझ पर! मेरा चेहरा काला हो गया, और मुझे शर्मिन्दगी में डाल दिया गया!"

एक आवाज़ अल्लाह तआला की तरफ़ से हुकूम देती हुई आएगीः **"या मालिक! इन सबको दोज़ख के पहले गढ़े में डाल दो।"** जैसे ही दोज़ख उनको निगलने लगेगी, वो सब चिल्लाएंगे, कहते हुएः **"ला इल्लाहा -इल्लल्लाह!"** जैसे ही दोज़ख ये कलाम सुनती हैं वो भाग कर पाँच सौ बरस की दूरी के रास्ते पर चली जाती हैं।[जैसा के **इबनि अबिदीन** मुहम्मद इबनि आबिदीन, (डी.**1252**[**1836** ए.डी.] दमिश्क के ज़रिए।) की अल हज़र -व-ल-इबाह उनवान वाले बाब में बयान है, ये अरब में रिवाज था के ज़्यादा मिकदार को ऊँचे नम्बरों से ज़ाहिर करना।यानी, आला नम्बरों से ज़ाहिर करना।यानी, आला नम्बरों का इरादा किसी इकदाम के मुताबिक निशानदही करने के लिए नहीं बल्कि रकम पर तबसरा करके मुतासिर करना है।] एक आवाज़ दोबारा ये कहते हुए सुनाई देती हैः "ए दोज़ख! इन्हें अंदर ले लो! या

मालिक! इन्हें दोज़ख के पहले गढ़े में डाल दो!" फिर एक आवाज़ बिजली की सी सुनाई देती है। मालिक दोज़ख को उनके दिलों को ऐसा करने से मना करते हैं,और कहते हैं, "ए दोज़ख! ऐसे दिल को मत जलाओ जिसमें कुरआन अल-करीम है और जो ईमान की हालत मे इस्तेमाल हुआ। उन माथों को मत जलाओ जिन्होने सज्दों में अल्लाह तआला के लिए ज़मीन को छुआ, जो रहमान (रहम करने वाला) है।" इसलिए, उन्हें दोज़ख में फैंक दिया गया दोज़ख के लोगों में से एक का रोना दूसरों से आगे बढ़ गया। उसे दोज़ख से निकाला गया। हैरत की बात है कि सिर्फ़ खाल जली थी। **"वो क्या हैं जिसने दोज़ख के लोगों में सबसे ज़्यादा तेज़ रूलाया,"** अल्लाह तआला ने पूछा। उसने कहाः "या रब्बी! आपने मुझे हिसाब के लिए बुलाया। मैने आपकी रहमत से उम्मीद नहीं छोड़ी। मुझे पता था कि आप मुझे सुनेंगे। इसलिए मैं इतना तेज़ रो रहा था।" जैसा कि सूरह हिजर की 56वीं आयत-ए-करीमा से वाज़ेह है, अल्लाह तआला ने एलान कियाः **"अगर एक शख्स अल्लाह तआला की रहमत से उम्मीद छोड़ देता है, तो वो दलालत** (बिदअत कुफ़्र) **के लोगों में शुमार होता हैं।"** फिर आपने उससे कहाः **"जाओ! मैने तुम्हें माफ किया।"**

एक और शख्स दोज़ख से बाहर आता हे। अल्लाह ने उससे कहाः **"ए मेरे बंदे। अब तुम दोज़ख से बाहर हो। तुम्हारा क्या अच्छा अमल हे जिसकी वजह से तुम जन्नत में जाओगे?"** "या रब्बी," उस शख्स ने कहा। "मै एक लाचार बन्दा हूँ। मैं सिर्फ़ कुछ में से थोड़ा चाहता हूँ।" जन्नत में से एक पेड़ उसे दिखाया जाता है। अल्लाह तआला उससे कहता हैः **"अगर मैं तुम्हें वो पेड़ दे दूँ जो तुमने देखा है, तो क्या तुम किसी और चीज़ का भी पूछोगे?" "या रब्बी,"** गरीब बन्दे ने जवाब दिया। **"आपकी इज़्ज़त और जलाल के हक के लिए, मैं किसी और चीज़ का मुतालबा नहीं करूँगा।"** अल्लाह ने फरमायाः **ये मेरा तुम्हारे लिए तौहफ़ा रहने दो।"** उसके बाद उस शख्स ने उस पेड़ से कुछ फल खाए और उसकी छाया में गरमाने लगा, उसे एक

और पेड़ दिखाया गया, जो ज़्यादा खुबसूरत है। वो शख्स उस पेड़ को काफ़ी वक्त के लिए घूरता रहा। **"तुम्हारे साथ क्या मसला है,"** अल्लाह तआला ने पूछा। **"क्या तुमने उसके साथ इसे भी पसंद कर लिया है?"** "हाँ, या रब्बी।" बन्दे ने कहा। "और तुम दूसरे के लिए नहीं पूछोगे अगर ये मैं तुम्हें दे दूँ?" नहीं, मैं नहीं, या रब्बी।" इसलिए, वो उस पेड़ का फल खाने लगा और उसके साए में मस्त हो गया। उसे एक और पेड़ दिखाया गया, जो (दूसरे वाले से) ज़्यादा खुबसूरत था, और जिसे वो तारीफ़ किए बगैर ना देख सका। जनाब-ए-हक़ ने उसे मुखातिब किया: **"अगर मैं तुम्हें ये वाला भी दे दूँ, तो क्या तुम दूसरे की इच्छा नहीं रखोगे?"** "आपकी इज़्ज़त की रज़ा के लिए, मैं नहीं, या रब्बी," बन्दे ने जवाब दिया। इसपर अल्लाह तआला उस मोमिन के साथ खुश हो गए और उसे माफ़ कर दिया। आपने उसे जन्नत में डाल दिया।

आखिरत में परेशानकुन वाक्यात में से एक ये है: एक शख्स अल्लाह तआला के हुज़ूर में ले जाया जाएगा, और अल्लाह तआला उससे पूछताछ करेगा। उसके अच्छे और बुरे अमाल एक दूसरे के मुखालिफ़ तोले जाएंगे। इस दौरान, वो शख्स इस ख्याल में होगा के उस वक्त में यकीनन और कोई नहीं हैं जिससे अल्लाह तआला सुलूक कर रहा हो। ताहम, उस वक्त हकीकत कुछ और है। वो ऐसा लम्हा है जिसके दौरान अल्लाह तआला लातादाद दूसरे लोगों को जाँच रहे हैं, जिनका शुमार कोई नहीं जानता सिवाए अल्लाह तआला के। इसी तरह, उन दूसरे लोगों में से हर कोई इस ख्याल में होगा जैसे कि वो वाहिद शख्स है जिसे हिसाब के लिए बुलाया गया है।

उस जगह पर लोग एक दूसरे को नहीं देखेंगे। एक शख्स को सुनाई नहीं देगा के दूसरा क्या कह रहा है। हो सकता है, हर शख्स एक खास पर्दे में हो जिससे अल्लाह तआला ने उन्हें छुपा रखा हो और अकेला कर रखा हो। सुबहान-अल्लाह! कितनी आला लियाकत और ताकत है। वो वक्त ऐसा

वक्त है जिसकी सूरह लुक़मान की **28**वीं आयत में निशानदही हुई है, जिसका मतलब **"तुम्हारी तखलीक दुनिया में और, उसके बाद, आखिरत में,** (सिर्फ़) **इतना लंबा वक्त लेगी जितना के एक शख्स एक सांस लेता है।"** जनाव-ए-हक के इस राज़ो के बारे में इज़हार में शामिल है, जैसे के आपकी हस्ती जगह और वक्त से परे है। क्योंकि, अल्लाह तआला के कामों या अमाल या खुदमुखतारी के लिए कोई हद या चरसीमा नहीं हैं। फा-सुवहान-अल्लाह, उसका कोई भी अमल उसे दूसरी चीज़ें करने से नहीं रोक सकता।

इसके तौर पर ऐसे वक्त में, एक शख्स अपने बेटे के पास आया और कहाः "ए मेरे बेटे! मैने उस वक्त तुम्हें कपड़े पहनाए जब तुम खुद ऐसा करने के लायक नहीं थे। मैने तुम्हें खाना खिलाया और पानी दिया, जोकि तुम्हारी ज़रूरत थी क्योंकि तुम खुद उसे अपने आप करने के काविल नहीं थे। मैने बचपने में तुम्हारी हिफ़ाज़त की, जब तुम अपने आपको ऐस चीज़ों से बचाने के लायक नहीं थे जो तुम्हें नुकसान पहुँचाती या जो चीज़े तुम्हारे फ़ायदे की थीं उनके लिए पूछा। तुमने मुझ से बहुत सारे फलों का कहा, और मैने वो सब खरीदा जो तुमने मुझ से पूछा और तुम्हारे लिए लेकर आया। मैने तुम्हें तुम्हारा मज़हब, इस्लाम और ईमान सिखाया। मैने तुम्हें बाहर भेजा जहाँ वो सिखाते थे के कुरआन-अल-करीम कैसे पढ़ते हैं। लेकिन अव तुम देख रहे हो इस इंसाफ़ वाले दिन किस कदर हालात खराब हो गए हैं। और तुम जानते हो मैं कितना गुनाहगार हूँ। मेरे कुछ गुनाह अपने ऊपर ले लो ताकि मेरे पास कुछ गुनाह हों हिसाब के लिए! मुझे अपने अच्छे कामों में से इनाम और सवाब दे दो ताकि मेरी अच्छाई के पैमाने का वज़न भारी हो जाए। "उसका बेटा उसके पास से, ये कहते हुए भाग जाता हैः "वो सवाब ऐसा है जिसकी तुम से ज़्यादा मुझे ज़रूरत है।"

इसी तरह की बातचीत बेटों और उनकी माओं के बीच में, और शौहरों और बीवियों के बीच में होगी। इसी तरह भाई बहन भी सुलूक करेंगे। ये

हालत हज़रत अल्लाह तआला के ज़रिए कुरआन-अल-करीम में वाज़ेह की गई है, जैसा के सूरह अबस की **34**वीं और **35**वीं आयत से वाज़ेह हैः **"उस दिन एक आदमी अपने खुद के भाई से भाग़ा फ़िरेगा," "और माँ अपने बच्चों से।"**

ये हदीस-ए-शरीफ़ से रिवायत हैः **"कयामत के दिन, लोगों को नंगा इकट्ठे किया जाएगा, जैसे वो हैं वैसे।"** जब हमारी माँ आएशा-ए-सिददीका रज़ी-अल्लाहु अन्ह ने ये सुना, उन्होने पूछाः "और क्या कुछ लोग दूसरे लोगों को नहीं देखेंगे! इस पर हमारे मुबारक आका, पैगम्बर 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम' ने सूरह अबस की **37**वीं आयत-ए-करीमा पढ़ी, जिसका मतलब **"उनमें से हर एक, उस दिन, एक दूसरे से लातअल्लुक होगा, (अपने खुद के लिए) वो काफ़ी परेशानी/तश्वीश में होगा।"** हमारे पैगम्बर 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' का इस हदीस-ए-शरीफ़ से क्या मतलब है के ये हकीकत है कि कयामत वाले दिन की सख्ती और शिद्दत इतनी ज़्यादा होगी जो लोगों को एक दूसरे की तरफ़ देखने से बाज़ रखेगी।

उस दिन लोग एक जगह जमा किए जाएंगे।एक काला बादल आएगा और उनके ऊपर मंडराएगा, उनके ऊपर उनकी अमाल की किताबें बरसाएगा, जिन्हें **सुहूफ़-ए-मुनशशरा** कहते हैं।मोमिनों के अमाल गुलाब की पंखुड़ियों की तरह स्क्रॉल (किताबचा) पर लिखे होंगे, जबकि काफ़िरों के अमाल ऐसे लगेंगे जैसे के देवदार के पत्तों पर लिखे हैं।स्क्रॉल नीचे आएंगे, उड़ते हुए।हर एक का स्क्रॉल (किताबचा) उसके पास आएगा चाहे उसके सीधे हाथ की तरफ़ से या उलटे हाथ की तरफ़ से, ऐसे जिसकी उनके पास कोई राह ना हो।दरहकीकत, जनाब-ए-हक्क ने एलान कियाः **"...(कयामत वाले दिन) हम, अज़ीम-उस-शान आदमी के लिए स्क्रॉल (किताबचा) लाए, जिसे वो खुलते हुए देखेगा।"**

कुछ आलिमों के मुताबिक, पुल सिरात से गुजरने के बाद हौज़े कौसर लाया जाएगा। ये गलत है क्योंकि, एक बार एक शख्स सिरात से गुज़र जायेगा तो वो हौज़ के पास दोबारा वापिस नहीं आएगा।

सत्तर हज़ार लोग, [यानी उनमें से बहुत ज़्यादा,] बग़ैर परेशानकुन हिसाब के जन्नत में दाखिल हो जाएंगे। ना ही उनके लिए कोई तवाज़न कायम किया जाएगा। और ना ही वो कोई स्क्रॉल (किताबचा) हासिल करेंगे। ताहम, उन्हें नकश के साथ स्क्रॉल हासिल होगा जो कहेगाः **"ला इलाहा इल-ल-अल्लाह, मुहम्मादुन रसूलुल्लाह। ये साबित किया जाता है कि फलां फलां, जो फलां फलां का बेटा है वो जन्नत में दाखिल किया जाता है और दोज़ख (दाखिल) में जाने से महफूज़ है।"** एक बार जो एक बन्दे के गुनाह माफ़ किए जाएंगे तो, एक फरिश्ता उसे अरसात के चौराहे पर ले जाएगा, और पुकारेगाः "ये फलां फलां हैं, फलां फलां का बेटा। अल्लाह तआला ने इसके गुनाहों के लिए इसे माफ़ कर दिया। ये सब कभी शकी नहीं बनेगा। इसे सआदत (अबदी खुशी) हासिल हो गई है और सईद बन गया है। कोई और हुसूल उस शख्स को इस से ज़्यादा प्यारा नहीं।

कयामत वाले दिन, रसूल (पैगम्बर) अलैहिम-उस-सलवात-ओ-व-त-तसलीमात मिंबरों (चबूतरा) पर होंगे। मिंबर रसूलों के ज़रिए मरतबों, दरजात के मुताबिक अलग होंगे। उलमा-ए-आमिलीन, यानी इस्लामी आलिम जो अहल अस-सुन्नत के अकीदे को रखते हैं और जो रहमतुल्लाहि अजमईन उनकी तालीमात पर अमल करते हैं वो सब भी नूर के तख्तों पर हैं। लोग जो अल्लाह तआला के मज़हब (इस्लाम) को फैलाने की लड़ाई के दौरान शहीद हुए; सालिह मुसलमान यानी जिन्होने अपनी ज़िंदगी अहकाम-ए-इसलामिया के मुताबिक गुज़ारी; हाफ़िज़ जो कुरआन अल-करीम को इज़्ज़त के साथ और बग़ैर साज़ों यानी गाकर पढ़ें (या किरअत करें) मोअज़्ज़न जो अज़ान अदा करें जिस तरह सुन्नत ने बताया है; ये सारे लोग ऐसी जगह पर होंगे जिसकी

मिट्टी मुश्क की होगी। क्योंकि इन लोगों ने अपने आपको अहकाम-ए-इस्लामिया (एहकामात और मुमनिअत इस्लाम मज़हब की) के मुताबिक ढाल लिया, उनके पास कुर्सी थी और सारे पैग़म्बरों के बाद जो दुनिया में आए आदम अलैहि-सलाम से हमारे आका, फख्र-ए-आलम 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम' तक वो शिफ़ाअत की इज़्ज़त से बख्शे जाएंगे। (यानी सिफ़रिश की इजाज़त गुनाहगार मुसलमानों के लिए)

एक हदीस-ए-शरीफ़ मंदरजाज़ेल पढ़ी जाएंगी- **"कयामत वाले दिन कुरआन अल-करीम** (इंसाफ़ वाली जगह पर) **एक शख्स के भेस में आएगा खुबसूरत चेहरे और एक खुबसूरत किरदार के साथ। इससे शिफ़ाअत के लिए मिन्नत की जाएगी, और वो शिफ़ाअत करेगा। वो उन लोगों के खिलाफ़ नालिस (मुकदमा) करेगा जो इसे गाकर पढ़ते थे** [गाने की तरह गाते थे और उन लोगों के खिलाफ़ जो इसे तफरीह की जगहों पर मज़े के लिए पढ़ते (या किरअत) थे और उन लोगों के खिलाफ जो इसे पैसा कमाने के लिए पढ़ते थे]। **ये ऐसे लोगों से अपने हक का मुतालबा करेगा। ऐसे लोगों के लिए जिन्होने इसकी इनाअत हासिल की; वो उन्हें जन्नत ले जाएगा।"**

दुनिया, [यानी. (दुनिया, जिसका इस बयान में मतलब हैं) चीज़ें और लोग जो इबादत के कामों में रूकावट डालते थे और तुम से ऐसे काम कराते थे जो हराम,] एक बूढ़ी और सफ़हें बालों वाली और सबसे गंदी औरत के भेस में ज़ाहिर होगी। लोगों से पूछा जाएगाः "क्या तुम जानते हो ये कौन हैं?" "हमें अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त का खुद पर भरोसा है उस शख्स के खिलाफ़," उन्होने कहा। इस पर उनसे कहा गयाः "जब तुम दुनिया में रहते थे, तो तुम इसे हासिल करने के लिए एक दूसरे से लड़ते थे और एक दूसरे को नुकसान पहुँचाते थे।"

इसी तरह, जुमा एक प्यारे शख्स की शक्ल में दिखाया जाता है। लोग इसे उतावले होकर देखेंगे। ये लोगों को जो जुमे की इज़्ज़त करते थे मुश्क और काफूर के रेत पर जगह देंगे। एक नूर मोमिनों के ऊपर मंडराएगा जो (दुनिया में) जुमे की इबादत अदा करते थे। सारे लोग सराहना से उस नूर को देखेंगे। जुमे को इज़्ज़त देने की वजह से, उनको जन्नत में ले जाया जाएगा।

ए मेरे मुसलमान भाई! अल्लाह तआला की फराग़दिली और कुरआन अल-करीम की और इस्लाम की और जुमे की सखावत देखो के किस तरह कुरआन अल-करीम के लोग कीमती हैं। और कितना ज़्यादा इस्लाम कीमती है, जिसमें नमाज़, रोज़ा, सब्र, और खुबसूरत अखलाक (जिन्हें इबादत कहते हैं) शामिल हैं।

लोग जो एक मरते हुए शख्स की अज़ियतों और ज़ाहिर एहतिजाज के बारे में मुमकिना तशरीहात बनाते हैं उन्हें इसकी तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए। दरअसल, हमारे मुबारक पैगम्बर 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' की दुआ जो इस तरह पढ़ी जाएंगी, "या रब्बी; जो मुरदों का रब है जो सढ़ जाएंगी और रूहों का बनाने वाला है जो बाहर आने से रोक दी जाएंगी।" और जो वो खंदक (खाई) ([1] दिफअ लिए जंग जो हमारे मुबारक नबी और मोमिनों ने लड़ी थी जो आपके साथ थे मक्का के इलाही के खिलाफ़ हिजरत के पाँचवे साल में [**627** ए.डी.] ज़ाहिर करती हैं के हर मय्यत सढ़ जाती अगर अल्लाह तआला हुकूम देता के इसे सढ़ना हैं। रूहों के लिए; वो कयामत वाले दिन बाहर आने के लिए रोक दी जातीं अल्लाह तआला खालिक है और इन सब चींज़ों का रब है। सारी हकीकतें जो अब तक बताई गई है वो सब इल्म पर मुबनी है, जो एक हकीकत से दूसरी तक मुखतलिफ़ हो सकती हैं। हमने उनमें से हर एक को अपनी दूसरी किताबों में **ज़िक्र** किया है जो हमने लिखी हैं।

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि ने हमें यहाँ बताया है के उन्होने आखिरत में (हमारे मुंतज़िर) होने वाले वाक्यात का बहुत कम हिस्सा बताया है। उन्होने कहा ये खुलासे वाली मरज़ी मश्रिकी मुसलमानों को अहल -अस-सुन्नत के (आलिमों के) ज़रिए सिखाए गए तरीकों की तरफ इशारा करती हैं। अपने आपको बिदअत (गलत राए) [या जो लोग किसी भी एक (सिर्फ़ चार) मसलक में से नहीं, या उन लोगों के ज़रिए जो इस्लाम को नया करने की कोशिश करते हैं उनकी तरफ़ अपने आपको मत डालो!] जो अहल-अस-सुन्नत के आलिम मतलब समझते हैं और कुरआन अल-करीम और हदीस-ए-शरीफ़ से समझते हैं उसे मज़बूती से पकड़ो! दूसरों के ज़रिए तजवीज़ की गई बिदअत की बातों, शैतानी अवतार पर यकीन नहीं रखना चाहिए! उनसे सावधान रहो! इसी मामले के लिए, मोमिनों और मुसलमानों को जो अहल-अस-सुन्नत के रास्ते पर चलते हैं उन्हें मुबारकबाद हो!

हम अल्लाह तआला, हमारे मुकम्मल पाक, सबसे ज़्यादा मेहरबान, और सबसे ज़्यादा सखी, से इस्मत के लिए (गलत काम करने से हिफ़ाज़त के लिए) और कामयाबी के लिए दुआ करते हैं। आमीन व हस्ब-अन-अल्लाह व निमल-वकील व सल्लल्लाह अला मुहम्मददिन व आलिहि व सहबिहि अजमइन।

ए आदम के बेटे, अपनी आँखे खोलो, ज़मीन पर एक निगाह डालो।

वो क्या ताकत है जो इन प्यारे फूलों को बनाती हैं, और उन्हें मारती हैं?

हर फूल हक्क की तारीफ़ करता है नज़ाकत के साथ, और उसकी मिन्नत करता है;

भेड़िये चीखते हैं और चिड़ियाँ गाती हैं, हमेशा, जिसने उन्हें तखलीक किया उसे बुलाते हैं।

वो उसकी कादिर मुतलिक और हर जगह मौजूदगी की तारीफ़ करते हैं;

और उनमें से बिल्कुल उनके रंग जैसी उसकी ज़ेर बीरी।

दिन पर दिन अपना रंग खोकर, वो ज़मीन पर वापिस गिरते हैं;

इन वाक्यात को काफ़ी समझना एक सबक के तौर पर, एक आरिफ़ इन्हें महसूस करता है।

क्या तुमने इस राज़ को देखा है, या कम अस कम इस पर अफसोस चखा है,

और अपने वुजूद में पिछलाया; ये इन्हें देखने के लिए एक इंसान लेता है।

जो कोई भी इस पैग़ाम में दाखिल होता है वो सब जानता है के कौन आने वाला है

एक दिन वापिस जाएगा, मौत उनकी मुंतज़िर हैं

जिसका पीना उन्हें चखना हैं।

<u>कयामत और आखिरत किताब के आखिरी लफ़्ज़</u>

इस दुनिया में और आखिरत में खुशियों के लिए सबसे पहले **अहल-अस-सुन्नत** (और इस्लाम के सुन्नी आलिमों के ज़रिए सिखाए गए) के उसूल के अकीदे को सीखना और उसके बाद फिकह के उसूल (अहल अस-सुन्नत के आलिमों के ज़रिए सीखाए गए) को सीखना और उसके बाद इन तालीमात की तरफ़ एक शख्स के इबादत के काम और बरताव को अपनाना और फिर अल्लाह तआला के प्यारे बंदों से प्यार करना और फिर इस्लामी मज़हब के दुश्मनों को जानना और उनकी चालो की तरफ अकल रखना ऐसा न हो के एक शख्स उनके जालों में फँस जाए। ये फर्ज़-ए-ऐन इस्लाम के सादा अहकामात फर्ज़ कहलाते हैं, और उसकी मुमानियतें 'हराम' कहलाती हैं। दोनो लक़ब खासियत और नाम के तौर पर इस्तेमाल होते हैं। जब एक इस्लामी अहकाम हर मुसलमान फर्द के ज़रिए अदा किया जाए तो उसे 'फर्ज़-ए-ऐन' कहते हैं, और जब ये एक अहकाम हो के इसे एक खास मुसलमानों का गुप अदा करे, तो इसे फर्ज़ के किफ़ाया कहेंगे।) हर मुसलमान फर्द के लिए के इसके **अ**कीदे के उसूल याद करें और इतनी तालीम हासिल करें जितनी फर्ज़ के काम या हराम के लिए ज़रूरी हैं। ये एक जुर्म, एक गुनाह है, उन्हें याद न करना। इस्लामी तालीमात जो यकीनन याद करनी चाहिए वो **सआदत-ए-अबदिया** के छठे हिस्सें में सही और साफ़ लिखी हैं, **इस्लामी अखलाकियत** नाम की किताब में भी (और वो किताबें, जो **हकीकत किताबेवी**, फातिह, इस्तंबुल, तुर्की में दस्तयाब हैं सब में मौजूद हैं। हर मुसलमान को एक किताब जो इस्लाम के अमल की तालीम दें और जिन्हें अहल-अस-सुन्नत के आलिमों के ज़रिए इकठ्ठा किया गया हैं वो ज़रूर लेनी चाहिए और अपने

खानदान और दोस्तों और जान पहचान वालों को ज़रूर पढ़वाना चाहिए। किताबों, रिसालों और अखबारों को पढ़वाने के बजाए, जो आखिरत में भी, हमें उन किताबों से पढ़ना चाहिए जो हमारे लिए ज़रूरी और फायदेमंद हैं। सबसे ज़्यादा कीमती इनमें से ज़रूरी किताबें वो हैं जो इमाम ग़ज़ाली के ज़रिए लिखी गई हैं, और **मकतूबात** और इमाम रब्बानी कुददिसा सिरूहुमा इमाम अहमद रब्बानी भारत, सिरहंद, में **1034** [**1624** ए.डी.] में रहलत फरमा गए।) के ज़रिए लिखी गई किताब। इन दोनो आलिमों की सवानह उमरी हकीकत किताबवी की इशाअत में लिखी हुई हैं, खासतौर से (तुर्की में) **सआदत-ए-अबदिया** नाम की किताब में, जिसे अंग्रेज़ी में तर्जुमा किया गया है और छ: हिस्सों में छापा गया है। **सआदत-ए-अबदिया**, छ: के ज़रिए एक हिस्सा।) ये एक हदीस-ए-शरीफ़ में ऐसे बयान हैंः **"रहमत (अल्लाह तआला की उस जगह पर उतरती थी जहाँ ओलिया** ओलिया वली की जमा हैं, जिसका मतलब एक शख्स जिसे अल्लाह तआला चाहता है।) **का ज़िकर होता हैं (या याद किया जाता है)"** ये हदीस-ए-शरीफ़ बताती हैं के लोग जो ओलिया को याद करते हैं उन्हें फैज़ हासिल होता हे और उनकी दुआएँ (अल्लाह तआला के ज़रिए) कुबूल की जाती हैं। हर कोई जो उन्हें प्यार करता है वो उन आला लोगों के फैज़ और नूर से फायदा उठाता है, फ़ैज़ और नूर का हिसाब उनके प्यार की शिददत पर मनहसिर करता है। उनकी नज़रें सब रोगों को अच्छा करने का इलाज है और उनकी सोहबत के साथ है, (यानी उनके साथ है;) बीमार और मुरदा दिलों का इलाज करते हुए। लोग जो उन्हें देखते हैं अल्लाह तआला को याद रखते हैं। हम ऐसे वक्त में रह रहे हैं जहाँ उन्हें ढूँढना या उन्हें देख पाना नामुमकिन हैं; फिर भी एक शख्स जो उनकी किताबे पढ़ता है, मानते हैं के वो सरफराज़ किए गए और चुने हुए लोग हैं; और इसलिए उन्हें प्यार करते हैं, उनकी रूहों से फ़ैज़ और फायदा हासिल करते हैं। **मुसलमान के लिए सलाह** नाम की किताब, (**हकीकत किताबवी** की इशाअतों में से एक,) इस मज़मून पर वाज़ेह जानकारी देती हैं। पैगम्बर अलैहिम-उस-सलाम गाड़ियाँ और

मज़बूत रस्सियाँ हैं अल्लाह तआला से करीब होने के लिए उसके बन्दों के लिए। जैसा के एक हदीस-ए-शरीफ़ में बयान हैं, ओलिया यानी **"आलिम जो एहकाम-ए-इस्लामिया को अच्छी तरह जानते हैं और जो उनके इल्म पर अमल करते हैं** (और जो इसलिए अल्लाह तआला के ज़रिए चाहे जाते हैं,) **वो पैग़म्बरों के वारिस हैं।** इस बात के लिए, ओलिया भी अल्लाह तआला की महरबानी और रहम हासिल करने के तहत गाड़ियाँ और रस्सियाँ हैं। कुरआन-अल-करीम ने हमें हुकूम दिया है **"...अल्लाह तआला से सजूअ हासिल करने के लिए वसीले तलाश करो..."** (जोकि सूरह माएदा की 35वीं आयत-ए-करीमा से वाज़ेह हैं।) सबसे बड़ा वसीला यहाँ बताया गया हैं वो पैग़म्बर सलावातुल्लाहि अलैहिम अजमईन और उनके वारिस, यानी इस्लामी आलिम रहमतुल्लाहि अलैहिम अजमईन। उन वारिसों में से दो है इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली-हुज्जत-उल-इस्लाम, और इमाम अहमद रब्बानी मुजदिद-ए-व -मुनव्वर -ए-अलफ़-ए-सानी रहमतुल्लाहि अलैहिमा। इन आला लोगों के ज़रिए खुशियाँ हासिल करना बहुत आसान हैं जो हमारे आका नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम' के वारिस हैं, और जो आपके मुबारक दिल से निकलने वाले नूर और मारिफ़ को हासिल करते हैं और उन्हें पाक दिलों को पहुँचाते हैं। इसलिए, उनकी किताबों और सवानेह उमरी को पढ़कर बहुत आसान हैं उन आला लोगों को जानना और प्यार करना। वो जो ओलिया को प्यार करते हैं उन्हें ये खुशी की नवेद मिल जाती हैं कि उन्हें माफ़ कर दिया जाएगा।

अपने खुद के नफस के हिसाब को पुकारना

अज़ीम इस्लामी आलिम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि ईरान के तास शहर में **450** हिजरी साल पैदा हुए, और **505** [**1111** ए.डी.] में उसी शहर में गुज़र गए। उन्होने अपनी सैकड़ों किताबें जो उन्होने लिखीं उसमें से एक किताब जिसका नाम **किमया-ए-सआदत** है उसके छठे बाब के चौथे हिस्से में फारसी ज़ुबान में बयान कियाः सूरह अंबिया की **47**वीं आयत से वाज़ेह हैंः **"हमने कयामत वाले दिन के लिए इंसाफ़ का पैमाना ठीक किया, कोई एक भी रूह के साथ कम से कम में भी नाइंसाफ़ी नहीं की जाएगी। और अगर (इससे ज़्यादा नहीं) एक सरसों के बीज के वज़न के बराबर भी होगा तो हम (हिसाब के लिए) उसे लाएंगे। और हम हिसाब करने को काफ़ी हैं।"** उसने हमें इस हकीकत के साथ आगाह कर दिया, ताकि हर कोई अपना हिसाब चेक करले। हमारे नबी अलैहिस-सलाम ने फरमायाः **"एक समझदार शख्स वो है जो अपना दिन चार हिस्सों में बांट लेता है, जिसमें से पहले वह सोचता है कि उसने क्या किया और वो क्या करने जा रहा है। दूसरे हिस्से में वो अल्लाह तआला से दुआ करता है और उससे माफी मांगता है। तीसरे हिस्से में वो फन या तिजारत की एक शाखा में काम करता है और अपनी रोज़ी हलाल तरीके से कमाता हे। चौथे हिस्से में वो आरामा करता है, अपने आपको उन चीज़ों से खुश करता है जो मुबाह** (अल्लाह तआला के ज़रिए इजाज़त दी गई) **हैं, जो चीज़ें हराम हैं उन्हें नहीं करता और नहीं ऐसी जगाहों पर जाता है।"** उमर अल-फ़ारूक रज़ीअल्लाहु अनह, दूसरे खलीफ़ा, [मदीना-ए-मनव्वरा में **23** (हिजरी) साल में रहलत फरमा गए। वो हुजरा-ए-सआदत में दफनाए गए। आपने फरमायाः अपने आपको हिसाब के लिए तैयार कर लो इससे पहले के तुम से पूछा जाए। अल्लाह तआला ने हुकूम दिया, जिसका मतलब **"अपने**

शहवा को मुतमईन करने की कोशिश मत करो, [यानी अपने नफस की इच्छा,] **उन तरीकों और अदाब के ज़रिए जो हराम है। करारदाद और बरदाश्त के साथ अपने जिहाद पर कायम रहो!"** इसी वजह से हमारे आला मज़हबियों को ये एहसास हुआ के ये दुनिया एक बाज़ार है जहाँ वो अपने नफस के साथ तिजारत की लेन देन करते हैं। इस तिजारती लेन देन में जन्नत कमाया गया मुनाफ़ा हैं, और दोज़ख नुकसान हैं जो भुगतना पड़ेगा। दूसरे लफ़्ज़ों में, मुनाफ़ा अबदी कामयाबी है, और नुकसान न खत्म होने वाली तबाही है। ये लोग ऐसी हालत की कलपना करते हैं जिसमें इनके नफ़स इनके तिजारती शरीक हैं। पहले तुम्हें अपने शरीक/पार्टनर के साथ राज़ीनामा बनाना चाहिए। फिर तुम्हें देखना चाहिए के चीज़ें किस तरह चल रही हैं, ये देखने के लिए कि वो राज़ीनामे को मान रहा है कि नहीं। उसके बाद तुम अपना हिसाब साथ ठीक करो, और अगर वो तुम्हारे साथ जालसांज़ी करे तो उस पर नालिश करो। इसी तरह, ये लोग, अपने नफस को अपना तिजारती पार्टनर मानते हुए, इस काम की तकलीद करेः एक तिजारती शिराकतदारी कायम की जाए; मुराकबा, यानी उसे नज़दीक से देंखे; मुहासबा, यानी उसके साथ हिसाब ठीक करे; मुआकबत, यानी उसे रज़ा दे; मुजाहदा, उसके साथ जददोजहद करे; और मुआतबत, यानी उसे डाँटेः

पहला कदम हैं। तिजारती पार्टनरशिप कायम की जाए। तुम्हारा तिजारती पार्टनर सिर्फ़ पैसा कमाने में तुम्हारा पार्टनर नहीं है, बल्कि अगर वो धोखेबाज़ है तो वो तुम्हारा दुश्मन भी है। दूसरी तरफ़, दुनियावी कमाई नापाइदार होती है। एक समझदार शख्स की नज़र में उनकी कोई कीमत नहीं होती। दरहकीकत, उनमें से कुछ ने कहा के आरज़ी नेकी बेकार हैं किसी चीज़ के मुकाबले जो कि सदा से मौजूद हैं। हर सांस एक शख्स लेता है वो एक कीमती मणि की तरह है, और ऐसी कीमती जवारात एक खज़ाना बनाने के लिए जमा करने चाहिए। ये असल मामला है जिस पर ग़ौर करना चाहिए। एक अकलमंद शख्स को चाहिए, अपनी सुबह की इबादत अदा करने के बाद और

बग़ैर किसी और चीज़ के बारे में सोचते हुए, अपने नफ़स के साथ मंदरजाज़ेल बातचीत करेंः मेरी वाहिद कमाई मेरी उम्र है।मेरे पास कुछ और नहीं हैं।ये अमाल इतने ज़्यादा कीमती हैं के हर सांस छोड़ा हुआ किसी और तरीके से वापिस नहीं आ सकता, और मेरे पास पहले से सांस लेने की तादाद मौजूद हैं, और नम्बर जैसे दिन गुज़ारते जा रहे हैं छोटे और छोटे होते जा रहे हैं।जब उम्र हो जाएगी तो तिजारत खत्म हो जाएगी।हमें तिजारत को मज़बूती से पकड़ लेना चाहिए, क्योंकि वक्त जो दिया गया है वो कम है; वैसे, आखिरत में हमारे पास बहुत वक्त होगा, फिर भी वहाँ कोई तिजारत नही होगी या कोई मुनाफ़ा नहीं किया जाएगा।इस दुनिया में दिन बहुत कीमती है के जब मौत का वक्त आएगा, एक दिन मौहलत के लिए भीख मांगी जाएंगी; फिर भी ये हासिल नहीं है।हम आज भी उस नेमत के वारिस हैं।ए मेरे नफ़स, महरबानी करके होशियार रहो ऐसा न हो कि तुम ये अज़ीम किस्मत खो दो।दूसरी सूरत में, रोना और कराहना अच्छा नहीं है।मान लो कि तुम्हारा मौत का वक्त आ गया, और फिर भी तुम एक दिन ज़्यादा की भीख मांग रहे हो और तुम्हें वो एक दिन दे दिया गया, जिस दिन में तुम इस वक्त में रह रहे हो! फिर, इससे ज़्यादा क्या सानेह होगा कि तुमने उस दिन को जाने दिया बजाए इसके के इसे अबदी कामयाबी हासिल करने के लिए इस्तेमाल करो? अपनी ज़ुबान, अपनी आँखों, और सारे अपने सातों अज़ा की हराम से हिफ़ाज़त करो!"

"वो कहते हैं, दोज़ख में सात दरवाज़ें हैं।" ये दरवाज़े तुम्हारे सात अज़ा हैं।मैं तुम्हें सज़ा दूँगा अगर तुम इन अज़ा को हराम से नहीं बचाओगे और अगर तुम आज अपने इबादत के कामों को नहीं अदा करते।" नफ़स की काबिज़ वाली फितरत होती है, इसलिए ये एहकामात को मानने में ना रज़ामंद होते हैं; फिर भी ये सलाह लेते हैं, और उसकी इच्छाओं की नफ़स कशी और इंकार के लिए उसे अपने असर में लाना होगा।इस तरीके से अपने नफस को हिसाब में लेना होगा।रसूलुल्लाह 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम' ने फरमायाः **"एक समझदार शख्स वो है जो मौत से पहले खुद का हिसाब करले और वो चीज़ें करें जो मरने के बाद उसके लिए फाएदेमंद होंगे।"** एक और मौके पर आपने फरमायाः **"कोई काम करने से पहले, सोचो, और अगर अल्लाह तआला ने इसकी मंज़ूरी दी हो या जिसकी उसने इजाज़त दी हो उसे करो; नही तो, उस काम से भाग जाओ।"** ये राज़ीनामा है जो हमें रोज़ाना अपने नफ़स के साथ तजदीद करना चाहिए।

दूसरा कदम मुराकिबा है, जिसका मतलब उसके ऊपर काबू हासिल करो और उससे ग़ाफ़िल मत रहो। अगर तुम इसके बारे में भूल गए, तो ये दोबारा अपनी पिछली सुस्त और आलसी आदतों में शुरू हो जाएगा। हमें ये नहीं भूलना चाहिए कि हमारे अमाल और सोंचे अल्लाह तआला जानता है। लोग एक दूसरे की बाहरी ज़हिरदासी को देखते हैं। लेकिन अल्लाह तआला एक शख्स का अंदरूनी और बाहर दोनो देखता है। एक शख्स जो इस हकीकत को जानता है वो अपने अमाल और अपनी सोचों दोनों में सही बरताव, (यानी अदब के साथ,) करता है। एक शख्स जो हकीकत से इंकार करता है वो एक काफ़िर (नास्तिक) है। दूसरी तरफ़, ये सरासर जुरअत है इसे मानना और फिर अपने यकीन के बरअकस उसे मानना। अल्लाह तआला ने एलान किया, जैसे के वाज़ेह हैंः **"ए बन्दे! क्या तू नहीं जानता के मैं हर लम्हा तुझे देख रहा हूँ?"** एक हबशी रसूलुल्लाह 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' की खिदमत में हाज़िर हुआ और कहा, "मैने बहुत सारे गुनाह किए है। क्या मेरी तौबा कबूल होगी?" **"हाँ, ये होगी,"** हमारे मुबारक नबी ने जवाब दिया। तौबा करने का मतलब अपने गुनाहों के लिए पछताना, अल्लाह तआला से माफ़ी मांगना, और दोबारा गुनाह न करने का उससे वादा करना।) "क्या वो मुझे देखता था जब मैं वो गुनाह करता था," हबशी ने दोबारा पूछा। जब अल्लाह तआला के प्यारे नबी ने फरमाया, **"हाँ, वो देखता था,"** हबशी ने एक गहरा सांस लिया, "अफसोस," और गिर कर मर गया। ईमान के नमूने (पक्का

यकीन जिसे कहते हैं) और (हकीकी मआनी में शर्म जिसे कहते हैं) हया वाले! हमारे नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु आलैहि वसल्लम' ने फरमायाः **"अदा करो (अपने अमाल को) इबादत को ऐसे जैसे तुम अल्लाह तआला को देख रहे हो! तुम उसे नहीं देखते, लेकिन वो तुम्हें देख रहा है।"** अगर एक शख्स ये मान ले के वो उसे देख रहा है, तो क्या वो कुछ ऐसा करेगा जो वो नहीं चाहता? हमारे अज़ीम रूहानी रहनुमाओं में से एक अपने शार्गिदों में से एक को अपने दूसरे शार्गिदों से ज़्यादा चाहते थे, एक दिन उन्होने अपने अपने हर एक शार्गिद को एक मुर्गी दी, उसे ऐसी जगह पर मारने की (जादूगरी के ज़रिए) बोली लगाई जहाँ उसे कोई ना देख रहा हो। जब शार्गिद जो ज़िंदा मुर्गि याँ लेकर गए थे वापिस आए हर मुर्गी को अकेली जगह पर कत्ल करके, उनमें से भी चंद एक वहाँ थे क्योंकि पसंद किया हुआ शार्गिद थोड़ा ज़्यादा वक्त लगाकर वापिस आया, और जो मुर्गी उसके पास थी वो बग़ैर मरी हुई थी। जब उसके आका ने पूछा के तुम इस मुर्गी को वापिस क्यों लाए बग़ैर हुकूम को माने हुए, उसने कहा, "मैं ऐसी जगह ढूँढने से कासिर था जहाँ मुझे कोई न देख रहा हो। वो सब जगहों को देखता है।" इस पर दूसरे शार्गिदों को ये पता चल गया के उनके साथी को रूहानी मरतबा जिसे 'मुशाहदा' कहते हैं वो हासिल हो गया। मिस्र के खज़ाने के वज़ीर पोतीफर की बीवी जुलेखा ने जब यूसुफ़ अलैहिस-सलाम को अपने पास बुलाया, और सबसे पहली चीज़ जो उसने की वो वो खड़ी हुई एक बुत को ढ़क दिया जिसे वो पाक मानती थी। जब बाद में उससे पूछा गया के उसने ऐसा क्यो किया, "उसने जवाब दिया, मुझे इसकी मौजूदगी में शर्म आती।" इस पर पाकबाज़ जवान ने कहा, "लिहाज़ा तुमको इस तराशे हुए पत्थर के सामने शर्म महसूस होगी और फिर मुझ से चाह रही हो के मैं अपने रब (अल्लाह तआला) की मौजूदगी में ऐसा महसूस न करूँ जो ज़मीन और आसमानों की सातों सतहों का खालिक है, और जो सब देखता है!" किसी ने जुनैद बग़दादी कुददिसा सिरोह (**207-298** [**910**], बग़दादः) से पूछा "मैं बाहर अपने आपको औरतों और लड़कियों को देखने से रोक नहीं

पाता।मैं अपने आपको इस गुनाहगार आदत से पीछा कैसे बचाऊँ?" "सोचो के अल्लाह तआला तुम्हें ज़्यादा बहतर देखता है बनिस्बत इसके के तुम उस औरत को देख रहे हो," अज़ीम आलिम ने जवाब दिया।हमारे नबी 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने फरमायाः **"अल्लाह तआला उन लोगों के लिए एक जन्नत का बाग़ जिसे अदन कहते हैं तैयार कराया जो, जब गुनाह करने वाले होते हैं तो उसकी अज़मत के बारे में सोचते हैं, उसके सामने शर्म महसूस करते हैं, और गुनाहों को नज़रअंदाज़ करते हैं।"**

[ये औरतों के लिए हराम **हैं** अपने बालों और बाज़ूओं और टांगों को बाहर दिखाना।औरतें जो ईमान रखती हैं अपने दिमाग़ में ये हकीकत रख लें कि अल्लाह तआला सब कुछ देखता है और ना-महरम 'ना-महरम' शब्द, महरम का उलटा हे तफसीली जानकारी **सआदत-ए-अबदिया** के चौथे हिस्से में मौजूद हैं।)

आदमियों का उनको नंगा मत देखने दो।अब्दुल्लाह इबनि दीनार रज़ी-अल्लाहु अनह से रिवायत हैः उमर रज़ी-अल्लाहु अनह और मैं मदीना-ए-मुनव्वरा जा रहे थे, जब मैने देखा एक चरवाहा अपनी भेड़े पहाड़ से नीचे हाँक रहा था।खलीफ़ा (हज़रत उमर) रज़ी अल्लाहु अनह चरवाहे से पूछा के अपनी भेड़ में से एक बेच दो। "मैं गुलाम हूँ।भेड़े मेरी नहीं हैं," चरवाहे ने जवाब दिया। "तुम्हारे मालीक के बारे में कैसे पता चलेगा? उसे कहना के उन्हें भेड़िया ले गया," खलीफ़ा ने तजवीज़ किया।जब चरवाहे ने कहा, "वो इसके बारे में नहीं जानता, लेकिन अल्लाह तआला जानता है" उमर रज़ी-अल्लाहु अनह रोने लगे।उसके बाद उन्होने गुलाम के आका को ढूँढा, उसके आका से उसे खरीदा, और ये कहते हुए उसे रिहा कर दिया, "जैसे के तुम्हारे इस जवाब ने तुम्हें इस दुनिया में रिहाई दिलाई, इसी तरह आने वाली दुनिया में ये तुम्हें रिहा करेगी।"

तीसरा कदम **है** हिसाब करना अमल के बाद जैसे कि तुम हर रात सोने जाते हो, तो तुम अपने नफ़्स का हिसाब करो जो अमल दिन के दौरान दूसरे से मुखतलिफ रखते हो। सरमाया, मुनाफ़ा और नुकसान को एक दूसरे से मुखतलिफ रखते हो। सरमाया ज़रूरी अमाल है जिसे फर्ज़ कहते हैं। (मुनाफा को नफ़िल और सुन्नत कहते हैं) और नुकसान को गुनाह जो तिजारत मे किए गए। जैसे एक शख्स अपने कारोबारी पार्टनर के साथ अपने मामलात/हिसाब किताब ठीक करता है, उसी तरह उसे अपने नफ़्स के साथ देखना हैं। क्योंकि नफ़्स एक बेहद धोखेबाज़ और मक्कार मखलूक है। ये अपनी खुद की इच्छाओं को फायदों में छुपाएगा। इसके मुबाह (इजाज़त दिए गए) वाले कामों पर भी सवाल करने चाहिए, और पूछना चाहिए के उसने ऐसा क्यों किया। अगर उसने कुछ नुकसानदायक किया है, तो इसे इसका भुगतान देने के लिए कहना चाहिए। इबन-अस-सामेद एक अज़ीम औलिया और आलिमों में से थे। वो अपने माज़ी की ज़िंदगी भर से हिसाब लगाते है, साठ हिजरी साल, यानी **121,500** दिन। "अफसोस" उन्होने सोचा। "फर्ज़ कर लो रोज़ाना में एक गुनाह करूँ, कुल शुमार होगा **121,500** गुनाह। ताहम, कई दिन थे जब मैने सैकड़ों गुनाह किए। मैं किस तरह अपने आपको इन सारे गुनाहों से रिहाई दिला पाऊँगा!" वो तेज़ी के साथ फजाईया के साथ ढह गए। उनके आस पास के लोगों ने देखा के वो मर चुके थे।

लोग, फिर भी, खुद का हिसाब नहीं करते। अगर एक शख्स अपने कमरे में रोज़ एक गुनाह करने के बाद एक रेत का दाना रख दे, तो थोड़े ही सालों में कमरा पूरा रेत से भर जाएगा। अगर हमारे कंधों पर रिकॉर्डिंग करने वाले फरिश्तें हमारे किए गए हर गुनाह के लिए एक पैसा ले तो हमें अपनी सारी जाएदाद में कुल रकम का भुगतान करना होगा। मुश्किल ये हैं, के हमें जो इबादत के अलफ़ाज़ के मामूली नंबर का शुमार करते हैं जैसे के हम तसबीह के दाने घूमाते हैं जैसे के हम तसबीह के दाने घूमाते और "सुबहानल्लाह" कहते हैं,

एक परेशानकुन और बेखबर मिजाज़ में और फिर अपने आप से कहते हैं, “ओह, मैने एक सौ इबादतें कर लीं,” ये वही लोग हैं जो रोज़ाना कहे गए अपने खाली अलफ़ाज़ कभी नहीं गिनते। अगर हम उन्हें गिनती करें तो, वो हज़ारों से ऊपर हो जाएँ। और फिर भी हम ये उम्मीद करते हैं के हमारे सवाब (अच्छे अमाल) का पैमाना भारी वज़न का हो। ये किस तरह का तर्क है। इसी वजह से उमर रज़ी-अल्लाहु अनह ने कहाः “अपने अमाल को खुद तौल लो इससे पहले के वो तौले जाएँ।” उमर रज़ी अल्लाहु अनह हर शाम अपने पैरों पर खुद कोड़ा मारते थे और (अपने आपसे) कहते थे, “तुमने आज वो काम क्यों किया,” इबनि सलाम रहमतुल्लाहि अलैहि अपनी कमर पर जलाऊ लकड़ी लेकर चल रहे थे, जब कुछ लोगों ने उन्हें देखा और पूछा, “क्या तुम एक बोझ ढोने वाले हो?” उनका जवाब था, “मैं अपने नफ़्स को देखने की कोशिश कर रहा हूँ के इसे कैसा महसूस होता है।” अनस रज़ी-अल्लाहु अनह [डी.**91** हि.] से रिवायत हैः “एक दिन मैने उमर रज़ी-अल्लाह तआला अनह को देखा। वो अपने आप से कह रहे थे, “मेरी नफ़्स, तुम्हें शर्म आनी चाहिए, जिन्हें अमीर-उल-मोमिनीन कहा जाता है! या तो अल्लाह तआला से डर या अज़ाब के लिए तैयार रहो जो वो तुम पर डालने वाला है।”

चौथा कदम नफ़्स को सज़ा देना हैं। अगर नफ़्स को हिसाब के लिए नहीं बुलाया जाता और उसकी गलतियां नही देखीं जातीं और उसे सज़ा नहीं दी जाती, तो ये मारकाट पर चला जाता। इसके साथ निपटना नामुमकिन होता। अगर ये कुछ शकूक बराए मेहरबानी **सआदत-ए-अबदिया** के छठे हिस्से के पहले बाब को 'मश्कूक' के लिए देखिए के इसका क्या मतलब हैं।) खा ले तो इसे भूख से सज़ा देनी चाहिए। अगर वो ना-महरम औरतों को देखता हैं, तो उसे अच्छे मुबाह की तरफ़ देखने से रोक लगा देनी चाहिए। हर एक अज़ू को उसके किए की सज़ा मिलनी चाहिए। जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैहि (डी.**298** [**910** ए.डी.], बग़दाद) से रिवायत हैः “एक रात इबन-इ-कज़ीती

रहिमा-हुल्लाहु तआला (तहारात-ए-इखराज हो गया था इस वजह से वो) जुनब हो गए। जैसे के वो कोशिश कर रहे थे गुस्ल के लिए उठने की, के उनके नफ़्स को सुस्ती आ गई और उन्हें सोने की इच्छा के लिए उकसाने लगी और गुस्ल को देरी करा दी दूसरे दिन तक के लिए जब उन्होने गुस्ल किया; रात की ठंड लग जाने का डर भी उनकी काहली में शामिल था। उस वाक्य पर उन्होने एक हलफ़ लिया अपने रात के गाऊन को पहने हुए गुस्ल करने का। उन्होने ऐसा इसलिए भी किया, के अपने नफ़्स को अल्लाह तआला के एहकाम से लापरवाही करने की सज़ा दे सकें।"

कोई एक लड़की को देखता है जो उसके लिए ना-महरम है। इस पर वो पछताता है और एक हल्फ़ लेता है कि अब कभी ठंडा मशरूब नहीं पिएगा। वो अपनी कसम पर कायम रहा और दोबारा कभी ठंडी चीज़ नहीं पी। अबू तलहा रज़ी अल्लाहु अनह अपने बाग में नमाज़ पढ़ रहे थे। एक शानदार चिड़िया उनके नज़दीक एक शाख पर बैठी। उस चिड़िया से ध्यान बहका, वो इस बात से घबरा गए के कितनी रकाते अदा कर चुके हैं। अपने नफ़्स की सज़ा के लिए उन्होने पूरा बाग़ एक गरीब को दान कर दिया। [अबू तलहा ज़ैद बिन सहल-ए-अनसारी सारी गज़वा (पाक जंगो) में लड़े थे। वो (हिजरी साल) **34**, में रहलत फरमा गए जब वो **74** साल के थे।] मालिक बिन अबदुल्लाह-इल-हसमी रहिमा-हुल्लाहु तआला से रिवायत हैः एक दिन रबाह-उल-कैसी रहिमा-हुल्लाहु तआला हमारे घर आए और मेरे वालिद के बारे में पूछा। जब मैने कहा वो सौ रहे हैं, "आमतौर पर एक शख्स देर दोपहर बाद सोता नहीं हैं," उन्होने कहा, और चले गए। मैं उनके पीछे गया। वो खुद से कह रहे थे, "ए, तू, बातूनी दूसरे लोगों की सोने की आदत से तुझे क्या लेना देना? मैने अपने आप से वादा किया के एक साल के लिए मैं अपना सिर तकीये पर नहीं रखूँगा!" तमीम-ए-दारी रज़ी अल्लाहु अनह एक दिन शाम की इबादत में सौ गए। अपने नफ़्स को मारने के लिए, उन्होने अपने आप से वादा किया के

एक साल तक नहीं सोऊँगा। [तमीम-ए-दारी असहाब-ए-किराम (या सहाबा) में से एक थे।] मजमा रहिमा-हुल्लाहु तआला अज़ीम औलिया में से एक थे। एक दिन उन्होने एक खिड़की पर एक लड़की को देखा। इस पर उन्होने (खुद से) अपने आप से वादा किया। दोबारा कभी ऊपर नहीं देखेंगे।

पाँचवा कदम मुजाहदा है। ज़्यादा इबादत करने का तरीका हमारे कुछ बड़ों का था वो ऐसा तब करते थे जब उन्हें किसी गलती करने पर अपने नफ़्स को सज़ा देनी होती थी। मिसाल के तौर पर, अबदुल्लाह इबनि उमर रज़ी अल्लाहु अनहुमा को एक खास नमाज़ जमाअत के साथ अदा करने में काफ़ी देर हो गई, तो उन्होने एक अदा करने में काफ़ी देर हो गई, तो उन्होने एक रात जाग कर गुज़ारी। उमर रज़ी अल्लाहु अनह ने जाएदाद का एक हिस्सा खैरात के तौर पर दिया जोकि दो सौ हज़ार चाँदी के दरहम के बराबर था क्योंकि वो जमाअत से नमाज़ अदा करने में देर कर गए थे। एक दिन अबदुल्लाह इबनि उमर रज़ी अल्लाहु अनहुमा शाम की नमाज़ अदा कर रहे थे जोकि देर हो चुकी थी, जैसे की अंधेरा हो चुका था और सितारे निकलने शुरू हो गए थे। इस देरी के लिए उन्होने दो गुलामों को अज़ाद कराया। और भी बहुत सारे लोग हैं जिन्होने इसी तरह के तरीके अपनाए। एक शख्स के लिए सबसे अच्छी दवाई जो अपने नफ़्स को इच्छा के मुताबिक काम कराने में नाकाबिल होता वो हे के एक पाक शख्स की संगत में रहे। उस मुबारक शख्स को अपने इबादत के कामों को खुशी के साथ अदा करते हुए देखना उसको भी ऐसा करने के लिए उकसाएगा। किसी से रिवायत हैंः "जब कभी मैं अपने नफ़्स को इबादत के काम अदा करने में बरगश्ता पाता हूँ तो, मैं मुहम्मद बिन वासी रहिमा-हुल्लाहु तआला (डी. **112** [**721** ए.डी.], की सोहबत के साथ हो जाता हूँ (यानी मैं उनके साथ में रहता हूँ)। एक हफ्ते के अरसे में उनकी संगत में रहने से मुझे दिखा के मेरे नफ़्स ने इबादत के कामों को मरज़ी से करने की आदत डाल ली।" लोग अल्लाह के बंदे को ढूँढने में नाकाम रहते हैं तो उन्हें सालिह

(पाक) लोगों की सवानेह उमरी पढ़नी चाहिए जो पिछले ज़माने में रहते थे। अहमद बिन ज़रीन रहिमा-हुल्लाहु तआला अपने आस-पास नहीं देखते थे। जब उनसे पूछा गया क्यों, उन्होने वाज़ेह कियाः "अल्लाह तआला ने आँखें तखलीक की ताकि हम दुनिया में तरीका देख सकें, अपने चारों तरफ उमदा नज़ाकतें, और उसकी ताकत और बढ़ाई को तारीफ़ के साथ देखे और सबक लें। इन सब चीज़ों को बग़ैर सबक लिए और फायदे के देखना गलत होता है।" अबुदरदा रज़ी-अल्लाहु तआला अनह ने बयान दियाः "मैं इस दुनिया में तीन चींज़ों की वजह से रहना चाहता हूँः लंबी रातों के दौरान नमाज़ अदा करनाः लंबे दिनो में रोज़ा रखने के लिए; और नेक लोगों की सोहबत में बैठने के लिए।" [अबुदरदा रज़ी अल्लाहु तआला अनह सहावा में से एक हैं। वो खज़राज कवीले से तअल्लुक रखते थे। वो दमिकश के पहले गर्वनर **33** (हिजरी साल) में गुज़र गए।] अलकामा बिन कैस रहिमा-हुल्लाहु तआला अपने नफ़्स के शहीद मुखालिफ़ थे। जब उनसे पूछा गया क्यों तो वो अपने नफ़्स के खिलाफ़ बहुत तुंद थे, उन्होने कहा, मैं ऐसा इसलिए हूँ क्योंकि मैं अपने नफ़्स को बहुत प्यार करता हूँ। मैं कोशिश कर रहा हूँ कि अपनी नफ़्स को दोज़ख से बचा सकूं। जब इनसे कहा गया के तुमको ज़्यादा परेशानी उटाने के लिये हुकम नहीं दिया तो इनका जवाब मे तो यह सबसे कम कर रहा हूँ मुझे कल की मायूसी से अपना सर पिटना चाहिये। अलकामा तावे इनो मे से एक महान थे। वो अब्दुल्लाह इवनि मसूद रज़ी अल्लाहु तआला अनह के एक शार्गिद थे (डी. **32** [**651** ए.डी.] वो (हिजरीके) **61**वें साल में रहलत फरमा गए।]

छठा कदम अपने नफ़्स को धमकाना और डाँटना हैं। ये नफ़्स की तखलीक में ज़रूर होता है के अच्छे अमाल को नज़रअंदाज़ कर, बुराई की तरफ़ भाग, हर वक्त सुस्ती कर, और अपनी इच्छाओं को मुतमईन कर/अल्लाह तआला ने हमें अपनी इन आदत की नफसानिअत को तोड़ने के लिए कहा है

और उन्हें गलत रास्ते से परे रखने और सही पर डालने का हुकूम दिया है। अपनी इस फर्ज़/डयूटी को पूरा करने के लिए, हमें इसे पुचकारना होगा, फिर इसे धमकाना होगा, और बारी बारी इसे लफ़्ज़ों और अमाल दोनो के साथ कब्ज़े में करना होगा। क्योंकि, नफ़्स ऐसी फितरत में तखलीक किया जाता है के ये जो चीज़ें इसे अच्छी लगती हैं उसके पीछे भागता है और उसे हासिल करने में जो मुश्किलात उसके रास्ते में होती हैं उन पर वो सबर के साथ कायम रहता है। नफ़्स के लिए खुशी हासिल करने में सबसे ऊँची न चढ़ने वाली रूकावट है इसकी अपनी लाइलमी और जिहालत। अगर उसे लाइलमी से जगाया जाए रास्ता दिखाया जाए जो इसे खुशियों की तरफ़ ले जाए, तो ये इसे आज इसे कबूल करो! इसी वजह से अल्लाह तआला ने एलान किया, जैसे के सूरह ज़ारियात से वाज़ेह हैंः **"इन्हें अच्छी सलाह दो! मोमिन यकीनन अच्छी सलाह से फायदा उठाएंगे।"** तुम्हारा नफ़्स दूसरों के नफसों से अलग नहीं होगा। अच्छी सलाह उस पर असर डालेगी। फिर, अपने नफ़्स को अच्छी सलाह दो और इसे डांटो। दरहकीकत, इसे डाँटने में बिल्कुल ग़ाफ़िल मत हो! उससे कहोः "ए मेरे नफ़्स! तुम समझदारी का दावा करते हो, और बेवकूफ़ कहलाए जाने पर नाराज़गी महसूस करते हो। ताहम, कौन उस शख्स से ज़्यादा बेवकूफ़ होगा जो अपनी पूरी ज़िंदगी चारों तरफ़ सुस्ती हंसी, और ऐश-ओ आराम में गुज़ारे, जिस तरह से तुम करते हो। तुम्हारा मामला बिल्कुल उस कातिल की तरह हैं जो अपने आप मज़े करता है अगरचे वो जानता है के पुलिस उसके पीछे है और जब वो पकड़ा जाएगा तो फांसी पर लटका दिया जाएगा। क्या वहाँ पर इससे भी ज़्यादा कोई बेवकूफ़ शख्स होगा? ए मेरे नफ़्स! मौत का वक्त आ रहा है और या तो जन्नत या दोज़ख तेरा इंतेज़ार कर रही है। कौन जानता, शायद तुम आज ही अपनी मौत से मिल लो। अगर आज नहीं, तो एक दिन तो इसे पक्का आना है। अगर कुछ तुम्हारे पर हो जाता तो आज इसे कबूल करो! दरहकीकत, मौत किसी शख्स को एक खास वक्त नहीं देती, ना ही वो किसी से ये कहती के वो उनके साथ रात में या सुबह के वक्त, गरमी में या सर्दी में

उनके पास आऊँगी। ये तुम्हें अचानक दबोचेगी और ऐसे वक्त जब तुम सोच भी नहीं रहे होंगे, जैसे ये हर एक के साथ करती है। अगर तुम अपने आपको उस अनचाहे लम्हे के लिए तैयार नहीं करोगे, क्या इससे बड़ी बेवकूफ़ी की मिसाल सोची जा सकती है। फिर, ए मेरे नफ़्स, तुम पर लानत है। "तुम गुनाहों में डूब गए। अगर तुम सोचते हो के अल्लाह तआला तुम्हें नहीं देख रहा, फिर तुम काफिर हो! अगर तुम मानते हो के वो तुम्हें देख रहा हे, तब तुम बहुत गुस्ताख और बेशर्म हो के उसका देखना तुम्हारे लिए अहमियत नहीं रखता। फिर, ए मेरे नफ़्स, तुम पर लानत हो! "अगर तुम्हारे नौकर तुम्हारी नाफरमानी करें, तो तुम उनसे नाराज़ होगे! फिर, तुम किस तरह यकीन में हो के अल्लाह तआला तुम से नाराज़ नहीं होगा! अगर तुम उसके अज़ाब को हल्का समझते हो, अपनी उँगली आग पर रखो! या गरम सूरज के नीचे एक घँटा बैठो! या कुछ देर के लिए इतना लंबा एक गरम कमरे में (काडेरिअम) तुर्की हमाम में बैठो, और देखो कितने कमज़ोर और इस्तकलाल हो तुम! अगर हम मान लें, ताहम, के तुम सोचते हो के वो तुम्हें तुम्हारी गलतियों के लिए दुनिया में सज़ा नहीं देगा, फिर तुम सिर्फ़ कुरआन-अल-करीम से बलके सारे पैग़म्बरों अलैहिम-उस-सलावत-ओ-व-त-तसलीमात जिनकी तादाद शायद एक लाख चौबीस हज़ार से भी ज़्यादा हैं उन सबसे इंकार कर रहे हो और झूठा बता रहे हो। इसलिए अल्लाह तआला ने फरमाया, जैसे के सूरह निसा की **123**वीं आयत से वाज़ेह हैं **"...जो कोई बुरा काम करेगा, उनके मुताबिक बदला दिया जाएगा..."** गलती करने वाले को किसम में सलूक किया जाएगा। फिर, ए मेरे नफ़्स, तुझ पर लानत हो!

"जब तुम एक गुनाह करते हो; अगर तुम कहते हो, 'वो मुझे माफ़ कर देगा क्योंकि वो करीम और रहीम है (मेहरबान, रहमदिल) हैं, 'फिर उसने हज़ारों सैकड़ों लोग क्यो बनाए जो मुश्किले भूख और बीमारियाँ झेल रहे हैं दुनिया में, और क्यों नहीं उसने उन लोगों को फसल नहीं दे दी जो अपनी

ज़मीन काश्त नहीं कर सकते! जैसे के तुमने हर तरकीब लागू करली अपनी नफ़्स परस्ती को हासिल करने में, तुम ये नहीं कहते, 'अल्लाह तआला करीम और रहीम है; इसलिए उसने मुझे सारी इच्छाएँ बग़ैर मेरे कोई तकलीफ लिए मुझे दे दी।' फिर, ए मेरे नफ़्स, लानत हो तुम पर। "हो सकता है तुम कहो के मैं यकीन रखता हूँ लेकिन तुम्हारे अंदर इतनी ताकत नहीं है के इतनी सख्ती बरदाश्त कर सकूँ। इस मामले में तुम हकीकत नहीं जानते के किसी कमी के साथ लोगों में मुश्किले सहन करने की सलाहियत नहीं होती उन्हें मुश्किलों का सामना करने से बचना चाहिए कम से कम कोशिश करके और आगे रखकर ये दोज़ख के अज़ाब से बच सकते हैं इसके लिए फर्ज़ के कामों की अदाएगी की ज़रूरत है, जो दुनिया में उन्हें जिस्मानी तनाव दिला सकते हैं। अगर तुम दुनिया की मामूली कठिनाइयों को सहन नहीं कर सकते, तो तुम किस तरह दोज़ख के आने वाले अज़ाब से बचोगे, और किस तरह तुम्हारी ये मामूली सलाहियत इन सारी ज़िल्लत बेइज़्ज़ती, मलामत, और इखराज से बचाएगी जो तुम भुगतने वाले हो? फिर ए, मेरे नफ़्स, लानत हो तुझ पर!

"तुमने बहुत सारी कोशिश और ज़िल्लत भरे हालात बरदाश्त किए और एक यहूदी डॉकटर की सलाह पर इसे किया बगैर अपनी नफ़्स परस्ती के अपनी किसी बीमारी से छुटकारा पाने के लिए, और फिर भी तुम ये नहीं जानते के दोज़ख का अज़ाब कितना ज़्यादा शदीद होगा दुनिया में बीमारी और गरीबी से ज़्यादा। फिर, ए मेरी नफ़्स, लानत हो तुझ पर!

"तुम कहते हो बाद में तुम तौबा करेगे और अच्छे काम करोगे, लेकिन मौत पहले आ सकती है, और तुम अपनी कमबख्ती में अकेले छोड़े जा सकते हो। तुम ये सोचने में गलत हो के कल तौबा करना आसान होगा बनिस्बत आज इसे करने से। क्योंकि, बाद की गई तौबा, तुम्हारे लिए ये बहुत मुश्किल होगा, और जब तुम मौत को देखोगे ये तुम्हारे लिए ऐसे ही बेकार होगा जैसे के तुम अपने भूखें बंधे हुए जानवर को उसके पहाड़ी पर चढ़ने से

पहले खाना खिलाओ। जिस हालत में तुम हो वो इस तरह हैं के एक शार्गिद जो एक इम्तेहान के लिए पढ़ता ही नहीं है झूठी शैखी के साथ के वो इम्तेहान के दिन सारा इल्म सीख लेगा क्योंकि वो नहीं जानता के सीखने में वक्त लगेगा। इसी, तरह गंदे नफ़्स की सफ़ाई करने के लिए एक लंबे अरसे की जददोजहद चाहिए होगी। एक लंबे अरसे के लिए अपनी ज़िदगी ज़ाया करने के बाद, तुम किस तरह एक लम्हे में ये कर लोगे? तुम बूढ़े होने से पहले क्यों नहीं जवान उमर की कदर जानते बीमार पडने से पहले आराम की, और मरने से पहले ज़िंदगी की कदर क्यों नहीं समझते? फिर, ए मेरी नफ़्स, तुझ पर लानत हो!

"तुम गरमी मे ही क्यें बग़ैर किसी देरी के तैयारी कर लेते हो उन सब चीज़ों की जो तुम्हें सरदी में चाहिए होती हैं, बजाए इसके के अपने आप पर भरोसा करो अल्लाह तआला की रहमदिली और रहम हासिल करने के? ताहम, दोज़ख की सरदी इस सरदी की ठंड से कम शदीद नहीं होगी, और इसकी गरमी जुलाई के सूरज की तरह कम ताव वाली नहीं होगी। जबकि तुम इस (दुनियावी) तैयारी में कभी आलसी नहीं रहे, तो तुम आने वाली दुनिया के मामलात के बारे में क्यों ढीले पड़ गए। इस बेवकूफ़ीपने की क्या वजह हैं? ये इस वजह से है क्योंकि तुम आने वाली दुनिया और कयामत वाले दिन पर यकीन नहीं रखते और अपने दिल में इलहादियत को छुपा कर रखना? जिसके बदले में, तुम्हें अबदी अज़ाब झेलना होगा। फिर, ए मेरे नफ़्स, तुझ पर लानत हो!

"एक शख्स जो अपने आपको मारिफत के नूर की फिकर नहीं करता और फिर ये चाहे के अल्लाह तआला की मेहरबानी और रहम उसे दूसरी दुनिया के अज़ाब से बचा लेगा, जोकि असल में इस दुनिया में उसकी अपनी नफ़्स परस्ती नतीजा है। वो एक ऐसे शख्स की तरह हैं जो अल्लाह तआला से उम्मीद रखे के वो उसके साथ रहम करेगा उसे सरदी लगने से बचा लेगा और

वो सिर्फ मोटे कपड़े पहनकर बग़ैर कुछ करे अपने आपको बचा लेगा। बाद वाला ये नहीं जानता के जैसे के अल्लाह तआला ने सरदी तखलीक की जिससे इसी तरह की बहुत सारे फायदे मिलते हैं। वो इतना ज़्यादा रहम वाला और मेहरबान है काफ़ी कपड़े बनाने के लिए इस्तेमाल करने वाला सामान भी तखलीक किया और इंसानियत को समझ और दस्ताकाराना हुनर का तौहफा बख्शा उस सामान को कपड़े में तबदील करने के लिए दूसरे लफ़्ज़ों में, उसकी रहमदिली कपड़ों को बनाने के लिए अपनी मदद देता है। और ना की बग़ैर कपड़ों के सरदी के खिलाफ़ हिफ़ाज़त करने से। फिर, ए मेरी नफ़्स, तुझ पर लानत हो!

"ये मत मानो के तुम्हें अज़ाब सहना पड़ेगा क्योंकि तुम्हारे गुनाहों ने अल्लाह तआला को गुस्सा दिला दिया, और ये मत कहो, मिसाल के तौर पर, 'मेरे गुनाहों ने उसका क्या नुकसान किया जिसकी वजह से वो मेरे साथ गुस्सा करेगा?' जो अज़ाब तुम्हें दोज़ख में जलाएगा वो तुम्हारा अपना बनाया हुआ होगा, और इसका कच्चा माल तुम्हारी अपनी मस्ती हैं। इसी तरह, ज़हर खाने और शरीर के ज़रिए नुकसानदह जौहर मिलने के नतीजे में बीमारी होती हैं, बल्कि डॉक्टर की सलाह न मानने का इंतकाम है। फिर, ए मेरे नफ़्स तुझ पर लानत हो!

"ए मेरे नफ़्स! मैं देख रहा हूँ के तुम दुनिया के ज़रिए दिए गए मज़ों और बरकतों के आदी हो और उनके ज़रिए अपने आपको दूर घसीटवाएँ! चाहे तुम जन्नत और दोज़ख में यकीन न रखते हों, काफ़ी समझदार बन जाओ कम से कम मौत से इंकार ना करो! ये सारी बरकतें और मज़े तुमसे ले लिए जाएंगे, इसलिए उनसे अलग होना तुम्हारे लिए कढ़वा होगा! जितना तुम चाहते हो उतना ज़्यादा उनसे प्यार करो और जितनी मज़बूती से तुम उन्हें पकड़ सकते हो उतना पकड़ लो, और ताहम जितना तुम उससे ज़्यादा प्यार करोगे उतनी ज़्यादा जुदाई की आग नुकसान पहुँचाएगी। फिर, ए मेरे नफ़्स, तुझ पर लानत हो!

"तुम दुनिया को इतना मज़बूती से क्यों पकड़े हो? चाहे अगर पूरी दुनिया तुम्हारी हो और ज़मीन के सारे लोग अपने आपको तेरे आगे झुकाते हों, तवील अरसे पहले तुम और सारे वो लोग ज़मीन बन गए। तुम्हारे नाम भुला दिए गए और यादों में से गायब कर दिया। क्या किसी को पिछले बादशाह याद हैं? जो ज़मीनें तुम्हें दी गई है इसकी तुलना में कम हैं, और ये कम रकम बदतर के लिए बदल रही हैं। आप उनकी खातिर जन्नत की अबदी बरकात कुरबान कर रहें हैं। फिर, ए मेरे नफ़्स, तुझ पर लानत हो!

"मान लो कोई एक कीमती और दाएमी पाएदार गहना एक टूटे हुए गुलदान के बदले में दें; किस तरह मज़ाक में तुम उस पर हँसोंगे! ये दुनिया बदले में उस गुलदान की तरह हैं। सोचो के ये टूट गया है और तुम अबदी गहना खो चुके हो, और तुम्हारे लिए जो बच गया है वो महज़ नाउम्मीदी और अज़ाब हैं।"

इन राए और पसंद के साथ, हर किसी को अपने नफ़्स को डाँटना चाहिए, इसलिए खुद उनके अपने हक़ और उनकी अदाएगी के लिए और उनको अपने मश्वरें सुनने के लिए इबतेंदाई दूसरा शख्स होगा! अल्लाह तआला सही रास्ते के मुसाफिरों को हिफ़ाज़त और निजाअत से फैज़ पहुँचाएगा! आमीन।

कुछ भी इल्म के बग़ैर नहीं होता, सबका अहम तरीन चलाने वाला;
अंधेरी गलियों के साथ तुम्हारी कंपनी, और वफादार सबके साथ।
कोई दोस्त ज़्यादा वफादार नहीं, और कोई प्यार ज़्यादा सच्चा नहीं
सारी चीज़ें नुकसान वाली हो सकती हैं; ये, अकेली, गैर मामूली हैं
इल्म अहम की तरह हैं, बंधा हुआ ताहम खुद असीम।
आदमी सब से थक जाएगा, इल्म के साथ वो बग़ैर थका हुआ है।

वरना ये कैसे हो सकता है, क्योंकि अल्लाह ने इसकी तारीफ़ की?
देखते हैं क्या मुबारक नबी ने कहा इसके बारे में एक हदीस में:
"इल्म के लिए खोज, चाहे चीन के जितना ही दूर क्यों न हो।"
ये सबके लिए फ़र्ज़ है, कोई मोमिन इससे बाकी नहीं।
देखो अली-उल-मुर्तज़ा ने कहा, उसे सुननाः
"आगर मुझे कोई एक हरफ़ सीखाता, तो मैं उसका गुलाम होता।"
इल्म के आदमी इस्लाम को तबाही के खिलाफ़ बचाएंगे।
अहले इल्म अफराद ज़मीन पर इलाही वसफ़ का अक्स हैं।
उल्माए इकराम के ज़रिए इस्तेमाल की जाने वाली स्याही भी उसकी बनिस्बत ज़्यादा बा बरकत है जो खून फीसबीलिल्लाह शहीद आदमी के ज़रिए खोया गया।"
जिहाद-ए-अकबर के लिए, अकेले, इल्म के साथ इमकान है;
दोनो जहान में बचाव सिर्फ़ इल्म के अमाल करने के साथ हैं।
आलिम ज़ाहिद से ऊपर है; जुहद सीखने से नीचे। हशर में उल्माए इकारम नबियों के साथ होगे।

(जुहद का मतलब दुनियावी खुशियों को बहुत ज़्यादा नज़रअंदाज़ करना अनजाने में कुछ मशकूक करने के डर से। ज़ाहिद का मतलब वो शख्स जो जुहद पर अमल करता है।)

मत कहो शायद के दुनिया में अब कोई उल्माए इकारम नहीं रहें;
अपनी आँखे खुली रखो, और अपने दिल को अंधेरे से छुटकारा दिलाओ!
इस्लामी आलिमों की हदीस में तारीफ हो रहीं थी;
वो इज़रायली के नबियों की तरह हैं।
आलिमों के ज़रिए दिया गया एक बयान कई सालों तक ज़िंदा रहता है,
तुम्हें सबसे नीचली खाइयों से निकाला गया और आसमानो तक ऊँचा ले जाया गया।

अब ये मुश्किल है एक आलिम को ढूँढना, हम क्या करें, फिर?
चलो आलिम आदमियों के ज़रिए लिखी गई कीमती किताबों को पढ़ते हैं।
एक किताब सोने के पिंजरे की तरह है, और उसके अंदर इल्म एक चिड़िया;
वो जो इस पिंजरे को खरीदता है वो चिड़िया का भी मालिक होता है।
किताबों पर तेज़ी से अमल हो, और नूर के साथ अपने दिल में बसने दो;
और कुरआन-अल-करीम तुम्हारी सबसे पहली किताब होनी चाहिए जो तुम पढ़ो!
अगला कीमती काम मुस्लिम,बुखारी के बाद पढ़ाना होगा इनके बाद,
इमाम रब्बानी के ज़रिए मकतूबात आते हैं।
उस तीसरे वाले में तसव्वुफ़ और फिकह एक साथ लाई जाती हैं;
हदीस में इसके कीमती लेखक की तारीफ़ की गई।
अज़ूबों का एक आंबशार, लफ़्ज़ों का एक ज़रिया जिसे कभी नहीं सुना गया,
गहरे मामलात जिसके हल सदियों पहले वाजेह किए गए।
सब मकतूबात में हैं और उसके तर्जुमें में भी हैं;
इसके बग़ैर इल्म पीछे हैं, और निजाअत मुश्किल हैं।
मुबारक सहाबा दूसरी किताब हैं जो तुम देखोगे।
मकतूबात का तर्जुमा न खत्म होने वाली आला खुशी हैं;
किस्मत से, तीन किताबों में, ये आसानी से मिल जाएगी।
देखिए इबनि आबिदीन एक लामहदूद महासागर हन्फ़ी मसलक में फिकह की एक बड़ी किताब।
इहया उलूम और किमया-ए-साअदत किताबें देखिए;
इसलिए इमाम ग़ज़ाली आपको कभी भुलाया नहीं जाएगा।
जब तुम रियाद-उन-नासिबीन पढोगे तुम समझ जाओगे;
और कहो, "मुहम्मद रबहामी एक आलिम हैं बहुत बड़े।"
शैख-उल-अकबर, गिलानी, बहा-उद-दीन के बारे में सीखों;

और दूसरे बहुत से, जो इस्लाम को तबाही से बचाते हैं।
'मवाहिब' एक किताब है दूसरी बहुत सारी में बताई गई;
और खास तौर से मुबारक नबी के बारे में बताया जाएगा।
जिहाद-ए-यार-ए-ग़ज़ीन एक दूसरा फन का काम है,
जिसकी हमें यकीनन ज़रूरत है क्योंकि हमारे दिलों में अंधेरा है।
देखिए 'मारिफतनामा' तुम इब्राहिम हक्की को जानते हो।
'बिरगिवी' को ज़्यादा पढ़ो, ऐसी ज़रूरत में कमी मत करो।
ओलिया की सवानेह उमरी जो ज़्यादा जानी जाती हैं।
रेशेहात और नेफ़ेहात में पूरी मौजूद हैं।
'बरकात अहमदी' और 'मोजिज़ात-उल-अंबिया';
और किस तरह अच्छे से लिखी हैं 'हदीकात-उल-ओलिया'।
देखिए 'दुर्र-ए-यकता' और 'उमकात-उल-इस्लाम; इन दोनो के साथ,और
'मिफताह-उल-जन्नत', और अय्युह-अल-वलद', भी।
'राबिता' नाम का किताब तसव्वुफ सीखाती है;
'सय्यद वली' अबद-उल हकीम, तसव्वुफ के आदमी के ज़रिए।
दूसरी बहुत सी किताब समुंद्र में हर एक एक मोती हैं;
अल्लाह की रहमदिली में उनके लेखक हो सकते हैं।
या रब्बी बराए करम हमारे सलाम को उन तक पहुँचा दे।
और उन लोगों का भला करे जो उनकी हिफ़ाज़त और निजाअत की पैरवी करें।

अदब और सलाम

(मुसलमानों के बीच)

जब दो मुसलमान मिलते हैं, एक दूसरे को **"अस्सलाम अलैकुम"** कहना, ये एक सुन्नत का काम है (एक दूसरे से हाथ मिलाना, यानी) हाथों के साथ मुसाफाह करना। जैसे के वो मुसाफ़ाह करते हैं उनके गुनाह झड़ जाते हैं।

मंदरजाज़ेल आठ लोगों को ("अस्सलाम अलैकुम" कहने के ज़रिए) सलाम करना, ये एक हराम का काम हैं, जोकि गुनाह से भरे हैं।

1- ना-महरम लड़कियों और जवान औरतों को सलाम नहीं करना चाहिए। बराए मेहरबानी **साआदत-ए-अबदिया** के चौथे हिस्से के आठवें बाब को ना-महरम के लिए देखिए।)

2- लोग जो चैस खेलते हैं या कोई दूसरा खेल खिलते हैं उन्हें सलाम नहीं करना चाहिए।

3- लोग जो जुआ खेलते हैं उन्हें सलाम नहीं करना चाहिए।

4- लोग जो शराब पीते हैं उन्हें सलाम नहीं करना चाहिए।

5- लोग जो दूसरो की चुग़ली करते हैं उन्हें सलाम नहीं करना चाहिए।

6- गाने वाले (**गुलोकार**) को सलाम नहीं करना चाहिए।

7- लोग जो खुले तौर पर और अवाम में गुनाह करते हैं उन्हें सलाम नहीं करना चाहिए।

8- आदमी जो (ना-महरम) औरतों और लड़कियों को देखते हैं उन्हें सलाम नहीं करना चाहिए।

लोग जो मंदरजाज़ेल चीज़ों को करते हुए दिखाई दें जब तक वो उस हालत में रहें उन्हें सलाम नहीं करना चाहिएः

1- एक शख्स जो नमाज़ अदा कर रहा हो उसे सलाम नहीं करना चाहिए।

2- एक खतीब जबकि वो खुतबा अदा कर रहा हो उसे सलाम नहीं करना चाहिए।

3- एक शख्स कुरआन-अल-करीम को पढ़ (या किरअत) रहा हो सलाम नहीं करना चाहिए।

4- एक शख्स ज़िकर करने वाला या तबलीग़ करते हुए को सलाम नहीं करना चाहिए।

5- एक शख्स हदीस-ए-शरीफ़ पढ़ने (या किरअत) को सलाम नहीं करना चाहिए।

6- एक शख्स जो ऊपर बताए गए अमाल को सुन रहा होता है उसे सलाम नहीं करना चाहिए।

7- फिकह की तालीमात को पढ़ने वाले शख्स को सलाम नहीं करना चाहिए।

8- कानूनी अदालतों के जजों को सलाम नहीं करना चाहिए।

9- मज़हबी तालीमात पर बातचीत करते हुए लोगों को सलाम नहीं करना चाहिए।

10- एक मअज़िन (या मोअज़्ज़िन) को जैसे के वो अज़ान अदा (पुकार) कर रहे हों सलाम नहीं करना चाहिए।

11- जब एक मुअज़िन इकामत कह रहा हो तो उसे सलाम नहीं करना चाहिए। (बराए मेहरबानी **सआदत-ए-अबदिया** के चौथे हिस्से के **11**वें बाब को देखिए।)

12- एक मज़हबी उस्ताद जब मज़हबी कलास में पढ़ा रहा हो सलाम नहीं करना चाहिए ।

13- अपनी बीवी के साथ मसरूफ़ शौहर को सलाम नहीं करना चाहिए।

14- खुले हुए अवरत हिस्सों के साथ शख्स को सलाम नहीं करना चाहिए।

15- पैशाब (या पाखाना) करने वाले शख्स को सलाम नहीं करना चाहिए।

16- खाना खाते हुए शख्स को सलाम नहीं करना चाहिए।

एक आदमी ज़रूरत के वक्त, बूढ़ी औरतों को सलाम कर सकता है चाहे अगर वो उसकी महरम रिश्तेहार ना हो। और उसे पुरा यकीन हो के उसे मस्ती नहीं महसूस होगी, तो वो उनके साथ मुसाफ़हा यानी उनसे हाथ मिला सकता है। गुनाहगारों को सलाम किया जा सकता है अगर उन्होने अपने गुनाहों

से तौबा करली हो। उन्हें इस तरह सलाम करना चाहिए इस इरादे के साथ जैसे के वो गुनाह कर रहे हों और उनसे बचाया जाए।

काफिरों को तब ही सलाम किया जाए जब उनके साथ कुछ करना हो। एक मुसलमान जो एक काफिर को इज़्ज़त के साथ सलाम करके अज़मत बढ़ाए वो एक काफ़िर बन जाता है। एक शख्स जो एक काफ़िर को इन ज़ुल्मों के साथ जैसे के 'मेरे आका' वगैरह के साथ इज़्ज़त बख्शे तो वो भी एक काफ़िर बन जाएगा [**इबनि आबिदीन** जिल्द.5, सफ़ह.267]। एक भूखा शख्स (जो ऐसी जगह आए जहाँ मुसलमान खा रहे हो) उन्हें सलाम कर सकता है (ये कहते हुए, "अस्सलाम अलैकुम") अगर उसे पता हो के वो मेज़ पर बुला लिया जाएगा। शार्गिद अपने उस्ताद को सलाम कर सकते हैं।

जब कोइ मुसलमान तीन बार छींके और फिर कहे "अल-हमद -ओ-लिल्लाह," तो (उनमें से एक पर) ये फर्ज़-ए-किफाया हो जाता है के उसको जवाब दे, इसी तरह सलाम करने पर या "अल-हमद-ओ-लिल्लाह, सुन्ने पर तुरंत जवाब देना फर्ज़-ए-किफाया हो जाता है। (एक शख्स के छीकने और "अल-हमद-ओ-लिल्लाह" कहने के बाद, "यरहामुकल्लाह, कहना चाहिए।) उन लोगों के लिए हराम है जो उसे सुने और जवाब देने में देरी करें। अगर उन्होने ऐसा किया तो उन्हें तौबा करनी चाहिए। सलाम का जवाब देना फर्ज़ है, **"व अलैकुम सलाम,"** कहकर एक खत के तरीके के ज़रिए सलाम मिलना/पाना जवाब लिखना और इसे भेजना मुसतहब हैं। जब एक शख्स सलाम का (मुंह ज़बानी) संदेश लेने और देने का ज़िम्मा उठाता है, तो ये उस पर फर्ज़ हो जाता है के (पाने वाले तक) लफ़्ज़ ले जाकर उसे फराहम करे। क्योंकि ये उसके लिए अमानत बन जाता है, (यानी जो उसे सौंपा गया।) अगर वो सलाम के लफ़्ज़ ले जाना कुबूल नहीं करता, फिर ये एक **वेदीअ हे** ये वाजिब नहीं है के वेदीअ ले जाया जाए।

ऊपर लिखी गई बाद के ग्रुप की हालतों में पहली दो सूरतों में शामिल लोग उनकी तरफ बढ़े हुए सलाम का जवाब नहीं देते। नंबर बारह तक की दूसरी हालतों में, लोग जिन्हें सलाम किया जाए उन्हें बहतर जवाब देना होगा। ये ज़रूरी नहीं के एक फकीर के सलाम का जवाब दिया जाए। ये फर्ज़ का काम नहीं है, (यानी ज़रूरी,) के सलाम का जवाब दिया जाए जबके तुम खा रहे हो या पी रहे हो या जब तुम पाखाने में हो या एक बच्चे या एक शराबी या एक फासिक शख्स के ज़रिए सलाम किया जाए (**इबनि आबिदीन**, हज़म **5**, सफ़ह **267**)।

सलाम **"सलामुन अलैकुम", या अससलाम अलैकुम** कहकर किया जाता है। ये फर्ज़ का काम नही के जवाब में "सलाम अलैकुम", या दूसरे कोइ और लफ़्ज़ों का कहना ।

रियाद-उन-नासिखीन नाम की किताब में (और मुहम्मद खहामी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के ज़रिए लिखी गई,) ये **फतवा- ए-सिराजिया** नाम की किताब में बयान है, (अली अशी बिन उसमान फरग़ानवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि, डी.**575** [**1180** ए.डी.] के ज़रिए लिखी गईः)। "जैसे के तुम किसी को सलाम करते हो, तो तुम्हें उसे जमा की शक्ल यानी, तुम इस तरह सलाम करो जैसे के तुम कई लोगों को सलाम कर रहे हो। क्योंकि, एक मोमिन कभी अकेला नहीं होता। हिफ़ाज़ती (मुहाफ़ज़ा) फरिश्ते और दो फरिश्तें **किरामन कातिबीन** उन्हें कंपनी देते हैं।" हदीस-ए-शरीफ़ से बयान हैं के लफ़्ज़ जो सलाम को ज़ाहिर करे वो जमा की शक्ल में इस्तेमाल किया जाता है वो **रियाद-उस-सालिहीन** नाम की किताब में लिखा हुआ हे (और याहया बिन शरफ़ नवाबी [या नववी] रहमतुल्लाहि तआला अलैहि, **631** [**1233** ए.डी.]-**676** [**1277**], दमिक्श।)

"अस्सलाम अलैकुम" का मतलब "मैं एक मुसलमान हूँ। मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। तुम हिफ़ाज़त में हो।" एक हदीस-ए-शरीफ का हुकूम हैः **"मुसलमानों को सलाम करो** (अस्सलाम अलैकुम कहने के ज़रिए,) **उनको जो तुम्हें जानते हैं और जिन्हें तुम बराबर नहीं भी जानते!"** काफिरों को सलाम नहीं करना चाहिए, ("अस्सलाम अलैकुम" कहकर।) तुम्हें सिर्फ़ उन्हें "वा' अलैकुम," कहना चाहिए जब वो तुम्हें सलाम करें। एक मुसलमान आदमी के लिए इसकी इजाज़त है अठारह औरतों में से किसी को सलाम कर सकता है जो उसके लिए शादी करने के लिए निकह के लिए अबदी हराम हैं। ये फर्ज़-ए-किफ़ाया का काम है उनके सलाम का जवाब देना। सात औरतों के मुतअल्लिक़ जिनके साथ शादी आरज़ी तौर पर हराम है इस्लाम के ज़रिए बताई गई सूरतों के मुताबिक, और जब ये हालत/सूरतें बाकी न रहें तो शादी वाले आदमी के लिए जिसके लिए हलाल है, तो ये जाईज़ नहीं के उन्हें सलाम किया जाए और ना ये फर्ज़ है के उनके सलाम का जवाब दिया जाए। (वो ये के, इस्लाम इसकी इजाज़त नहीं देता,)

ये जाईज़ नहीं के (सिर्फ़) एक अमीर शख्स को सलाम किया जाए क्योंकि वो अमीर है अगर अमीर शख्स तुम्हें पहले सलाम करे, तो ये फर्ज़ का काम हो जाता है के सलाम का जवाब दिया जाए। बड़ों के लिए जाईज़ है के वो बच्चों को सलाम करें।

तरतीब में मुकद्दम जो के सुन्नत हैं मंदरजाज़ेल हैंः बूढ़े लोग जवानों को सलाम करें; शहरी गाँव वालों को सलाम करे; एक ऊँट सवार शख्स घुड़सवार को सलाम करता है; एक गधा सवार शख्स एक पैदल सवार को सलाम करता है; एक खड़ा हुआ शख्स एक बैठे हुए शख्स को सलाम करता है; एक लोगों का ग्रुप दूसरे बड़े ग्रुप को सलाम करता है; एक मालिक अपने नौकर को सलाम करता है; बाप बेटे को सलाम करता है; माँ पहले बेटी को सलाम कर सकती है। ऊँचे मरतबे का शख्स और समाजी हेसियत वाला सलाम

में मुकद्दम हो सकता है। ये सच बात है, के मिराज की रात अल्लाह तआला को पहला सलाम किया गया। अगर दो मुसलमान एक साथ एक दूसरे को सलाम करें, तो ये उन दोनो पर फ़र्ज़ हो जाता है के एक दूसरे के सलाम का जवाब दें। अगर वो एक दूसरे को सलाम करें तो (फ़ौरन) एक को दूसरे के बाद सलाम का जवाब चाहता है। जब एक से ज़्यादा लोगों को सलाम किया जाए, तो उन लोगों में से सिर्फ़ एक शख्स पर जवाब का एतराफ़ होता है, चाहे वो एक बच्चा ही हो, काफ़ी है, और ग्रुप में दूसरे लोगों को सलाम का जवाब ज़रूरी नहीं है।

आदम-अलैहिस-सलाम से इब्राहीम अलैहिस-सलाम तक सलाम दोनों लौगो की तरफ के से किया गया, एक दूसरे की तरफ़ झुकते हुए। उसके बाद एक दूसरे को गले लगाने में तबदील हो गए।

मुहम्मद अलैहिस्सलाम के दौरान मे हाथ का मुसाफहा करना सुन्नत हो गया।

[शिया किस्म में सलाम का जवाब देते हैं। वो "अस्सलाम अलैकुम" कहकर जवाब देते हैं। वो, "वालेकुम सलाम", नहीं कहते।]

अबदुल्लाह बिन सलाम रज़ी-अल्लाहु अन्ह से रिवायत हैः जब रसूल-ए-अकरम 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने अपनी मदीना की मुबारक हिजरत की, तो पहली हदीस-ए-शरीफ़ जो मैने आपके मुबारक मुंह से सुनी वो ये थीः **"एक दूसरे को सलाम करो! एक दूसरे को खाना दो! अपने रिश्तेदारों के हुकूक ध्यान रखो! जब दूसरे सो रहें हों तो आधी रात में नमाज़ अदा करो! ये चींज़े करके, हिफ़ाज़त से जन्नत में दाखिल होगे!"** यहाँ हम अपने **रियाद-उन-नासिखीन** से लिए गए हवाले का खात्मा करते हैं।

(अहमद बिन मुहम्मद बिन इसमाईल) तहतवी 'रहमतुल्लाहि' तआला अलैह (डी.**1231** [**1815** ए.डी.]) ने **मिराक-इल-फलाह** नाम की किताब की तशरीह की **174**वें सफहे पर तबसरा किया जो मंदरजाज़ेल हैः मुसलमानों के लिए ये सुन्नत का काम है जब एक दूसरे से मिलें तो मुसाफहा करें। असल में, अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ी अल्लाहु अनह (डी.**32** [**652** ए.डी.] रबज़ा मदीना के आस पास के इलाके में) एक हदीस-ए-शरीफ़ में मंदरजाज़ेल बयान जो अबू दाऊद सिजितानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह (**202** [**817** ए.डी.]-**275** [**888**], बसरा) ने हवाला दियाः "हर वक्त मैं रसूलुल्लाह 'सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' से मिलता, तो आप मुझ से मुसाफहा करते थे। **मुसाफहा** दो लोगों का अपने सीधे हाथों की हथेलियों को एक दूसरे से मिलाना होता है, इस तरीके के उनके अँगूठे साईड से एक दूसरे से राबते में आए। हाथ मिलाना जिसमें दूसरे शख्स की उँगलियों को अपनी हथेलियों से पकड़ते हैं, और जो आजकल फैशन में हैं, वो शिया तरीके से हाथ मिलाना है। सुन्नत फैशन ये है, ताहम, ये के जब तुम दोनों सलाम के अलफ़ाज़ बोलो, अपने खुले सीधे हाथ की चारों उँगलियों के अंदरूनी हिस्सों उससे मिलाओ [बगैर दस्ताने पहने हुए या दूसरे किस्म के रपेर] अपने सीधे हाथ के बाहरी हिस्से, को अँगूठे की तरफ़ मिलाते हुए। नस से अँगूठे के ऊपर प्यार के साथ फैलाते हैं। जबकि मुसलमान मुसाफहा करते हैं, वो भाई का प्यार तबादला करते हैं। ये एक दूसरी मिसाल है दिखाने के लिए के ये लोग एक दूसरे को सलाम करें और अलैदगी को नज़र अंदाज़ करें।

इबनि आबिदीन ने इसतिबरा के बारे मे पाँचवे हजम में फरमाया "मुसलमानो के लिए ये एक बिदअत का काम है के हर नमाज़ के बाद मस्जिद छोड़ने से पहले एक दूसरे के साथ मुसाफ़हा करे। ऐसा करना शिया का रिवाज है। [ये जाइज़ (इजाज़त) है, के ईद के दिनों में, ईद का जश्न मनाने के लिए मस्जिद में या दूसरे वाक्यात मुसाफहा करना दफतन वफ़कतन बग़ैर इसे एक

आदत बनाए।] ये जाईज़ है के एक ज़िम्मी को सलाम किया जाए या उसके साथ मुसाफहा करे जब इसकी ज़रूरत हो।इज़्ज़त के लिए ऐसा करना जाईज़ नहीं।एक काफ़िर को इज़्ज़त देने से कुफ्र का सबब बन सकता है।

बेटों और बेटियों को एक दूसरे से अलग बैडरूम देना चाहिए और उनके वालदेन से भी अलग। (तुम एक इस्लामी आलिम या अपने वालदेन के हाथ पर बौसा (चूमना) दे सकते हो।तुम दूसरों के हाथों को बौसा नहीं दे सकते।जब तुम अपने एक दोस्त से मिले, तो उनके हाथ पर बौसा देना हराम है।

जब तुम्हारे बड़े दाखिल हों, तो ये मुसतहब का काम है के उनसे खड़े होकर मिलें।जब तुम दाखिल हों दूसरो को खड़े हुए देखकर खुश होना मकरूह है।कुरआन-अल-करीम या रोटी चूमने की इजाज़त है।

बरीका नाम की किताब की **1334**वें सफ़हें में बयान हैः ये गुनाह का काम है के एक सलाम के जवाब में या सलाम करते वक्त सिर झुकाना।ये मंदरजाज़ेल हदीस-ए-शरीफ़ में बताया गया हैः **"एक दूसरे के आगे मत झुको या एक दूसरे से जब तुम मिले तो गले लगो!"** रूकू करना हराम है, (यानी झुकना, या झुकने वाली हालत बनाना जैसे के तुम नमाज़ में करते हो।) या सज्दा करना बजाए अल्लाह तआला के दूसरे किसी के आगे।इबनि नुजयम जैन-अद-दीन मिसरी रहमतुल्लाह अलाला अन्ह ने अपनी किताब **सगाहीर व कबाहीर** मे बयान किया है के हाथ के साथ सलाम करना गुनाह है।इस्माईल सिवासी ने अपने बयान को मंदरजज़ेल वाज़ेह किया "क्योंकि, ये काफ़िरों में रिवाएती है के हाथ से सलाम किया जाए।"

इमाम रब्बानी रहमतुल्लाह अलैह ने अपने **265**वें खत में बयान किया "ये ज़रूरी है के मुसलमानों के हुकूक का ध्यान रखा जाए।ये एक

हदीस-ए-शरीफ़ से रिवायत हैः 'एक मुसलमान के पाँच हुकूक हैं जो दूसरे मुसलमान पर लाज़िम हैंः **उसके सलाम का जवाब देना** और अगर उसके घर मे कोइ शख्स बिमार हे तो उसके हाल चाल जानना **बिमार की ज़ियारत करना**; **उसके (जनाज़े) मय्यत में शिरकत करना**; उसकी **दावत में शामिल होना;** और जब वो छींकें और फिर कहे, "अल-हमद-ओ-लिल्लाह" उसको **"यर-हमुकल्लाह" जवाब देना**। ताहम बुलावे में जाना खास ज़रूरयात पर मुनहसिर है। **इहया-उल-उलूम** नाम की किताब मंदरजाज़ेल ज़रूरयात की वज़ाहत करता हैः 'अगर दावत का खाना मशकूक हो या अगर मेज़ पर रेश्मी टीशू या सोने चांदी के बर्तन हों या छत पर औरत या दीवारों पर जानदार चीज़ों (आदमियों और जानवरों) की तस्वीरें लगी हों या मौसिकी के साज़ या हराम खेल उस दावत वाली जगह पर खेले जा रहें हों, तो तुम्हें वहाँ नहीं जाना चाहिए। एक ज़ालिम या एक बिदअती के ज़रिए या एक आदी गुनाहगार (फासिका) के ज़रिए या बुरे शख्स के ज़रिए या जिसके लिए दिखावे के मकसद के लिए बहुत ज़्यादा पैसा खर्च किया जाए ऐसी दावत में नहीं जाना चाहिए। ये **शिरात-उल-इस्लाम** नाम की किताब में बयान हैः शैखी मारने के लिए या दिखावे के लिए दावत में शिरकत नहीं करनी चाहिए। **मुहीत-ए-बुरहानी** नाम की किताब (और बुरहान-अद-दीन महमूद बिन ताज-उद-दीन अहमद बिन 'अब-दुल-अज़ीज़ बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि **551** [**1156** ए.डी.]-**616** [**1219**] में शहीद किए गए, उसमें बयान हैः 'दावतें जहाँ लोग हराम खेल खेल रहे हों या संगीत बज रहा हो या चुग़लखौर मुसलमान हों या नशीली शरवतें पी जा रही हों तो इसमें शिरकत नहीं करनी चाहिए। ऐसा ही **मतालिब-उल-मुसलिमीन** नाम की किताब में लिखा है। दावतें जहाँ ऐसी चीज़े न हों तो उसमें ज़रूर शमूलियत करनी चाहिए। हालाँकी ऐसी दावतें आजकल कम होती हैं। एक विस्तर-ए-मर्ग पर पड़े हुए शख्स से मिलने जाना एक सुन्नत का काम हैं। ये **मिशकात** की तश्रीह में लिखा है के उसे मिलने के लिए जाना वाजिब है अगर उसके साथ कोई ना हो। हमें मुसलमान के नमाज़ ए जनाज़ा में

शामिल होना चाहिए और उस जनाज़े के पीछे कम से कम कुछ कदम चलना जो कब्रिस्तान की तरफ़ ले जाया जा रहा हो।" यहाँ हम **265**वें खत के तर्जुमें का खात्मा करते हैं। इबनि आबिदीन ने 'हज़र व इबाहा' की सैक्शन सुर्खी में बयान किया हैः "अगर चीज़ें जो हराम हैं वो कमरे में मौजूद **हैं**, तो तुम वहाँ जा सकते हो अगर वो खाने की मेज़ पर हैं, तो तुम वहाँ मत जाओ। अगर तुम वहाँ हो क्योंकि तुम्हें पता नहीं था (के वो चीज़ें वहाँ मौजूद हैं), फिर तुम वहाँ अपने दिल में नाखुशी लिए हुए वहाँ बैठना होगा, या कोई बहाना करके वहाँ से उठना होगा। क्योंकि, सुन्नत का काम ऐसा ना हो के ज़ब्त कर लिया जाए ऐसा काम करने की वजह से जो हराम है। चुग़लखौरी या ऐसे लोगों को सुनना जो दूसरो की चुग़लखौरी कर रहें हों वो मौसिकी के साज़ों और हराम खेलों से ज़्यादा गुनाह का काम है। अगर तुम एक अधिकारी या एक मरतबे वाले आदमी हो, फिर तुम मेज़ पर हराम हालत से बच सकते हो या उस जगहा को छोड़ सकते हो।"

ये **मा-ला-बददअ** (और मुहम्मद सनाउल्लाह पानी**पती** रहमतुल्लाहि तआला अलैहि, **1143** [**1730** ए.डी.] पानीपत-इंडिया-**1225**[**1810**], पानीपत के ज़रिए लिखी गई) नाम की किताब के आखिरी बाब में जो ज़कात के बारे में हैं उसमें बयान हैंः "ये एक मोअक्कद सुन्नत का काम है के अपने मेहमान को तीन दिनों तक तफरीह कराओ। उस हद को पार करने के बाद ये मुसतहब बन जाता है।

हदीका में सज़ाओं से निपटने वाले बाब के आखिरी में तकदीर के ज़रिए बताया गया हैः "जब तुम किसी के घर में, कमरे, या बाग़ में दाखिल हो रहे हो तो इजाज़त के लिए पूछना वाजिब है। तुम इजाज़त लिए बग़ैर दरवाज़े पर खटखटाने के ज़रिए, दरवाज़े की घंटी बजाने के ज़रिए, या पुकारने के ज़रिए यानी सलाम के ज़रिए दाखिल नहीं हो सकते। अपने बच्चों के कमरे में

दाखिल होने के लिए वालदेन को इजाज़त लेनी चाहिए और बच्चों को अपने वालदेन के कमरे में दाखिल होने के लिए इजाज़त लेनी चाहिए। तीन बार इजाज़त के लिए पूछना चाहिए। अगर पहली बार पूछने पर इजाज़त न मिले, तो एक मिनट के लिए इंतज़ार करने के बाद दूसरी बार पूछना चाहिए। अगर इसे अभी तक न दिया मिले, तो तीसरी बार पूछना चाहिए। अगर इस बार भी तुम्हें इजाज़त न मिले तो, [अगर तुम इतना लंबा इंतज़ार कर सकते हो चार रकआत की नमाज़ अदा करने जितनी,] तो तुम्हें दाखिल नहीं होना चाहिए, और चले जाना चाहिए। अगर दरवाज़ा हल्का सा खुला हो, तो तुम्हें जिस शख्स को पूछना है उसके बारे में पूछने से पहले उससे पूछो के तुम कौन हो। [इसी तरह, जब तुम किसी को फोन करो, पहले तुम कहो तुम कौन हो।] अगर जो शख्स अंदर हैं उसे तुम जानते हो के तुम्हें अंदर आने देगा, तो तुम बग़ैर इजाज़त के अंदर जा सकते हो।"

एक किताब जिसका नंबर (**3653**) 'लालेलि' सेक्शन के इस्तानबुल की सुलेमानिया लाएब्रेरी में अहमद इबनि कमाल एफ़ंदी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि नवें तुर्क शैख-उल-इस्लाम, (डी.**940**[**1534** ए.डी.] दर्ज किया गया, जैसा उनकी किताब में कहा गया जिसका नाम **किताब-उल-फराइद** में कहा गया हैः "ये एक उमाम सादी बिन अजलान-ए-बाहाली रज़ी-अल्लाहु अनह (डी **.81** [**700** ए.डी.] आज के तौर पर सीरिया में होम्स की हाकमियत पर बयान किया गया हैः **"लोग जो दूसरों से मिलते हुए हों वो हमारी कौम में से नहीं हैं। यहूदी या ईसाइयों से मत मिलो! यहूदी एक दूसरे को अपनी उँगलियों से निशान बनाकर सलाम करते हैं, ईसाइ उँगलियों या हाथों से निशान से और मजूस झुकने के तरीके से।"** ये **किताब-उस-सुन्नत-ए-वल-जमाअत** नाम की किताब में बयान हैं (और रूकन-उल-इस्लाम इब्राहीम के ज़रिए लिखा गया) दूसरी तरफ, **किताब-उस-सुन्नत** नाम की किताब ज़ाहिद-ए-सफ़्फ़ार **के** ज़रिए लिखी गई। दूसरों के सलाम का जवाब दो। ये यहूदी और ईसाईयों का सलाम

करने का रिवाज़ हैं के उँगलियों या हाथों से निशान बनाना। और ये मजूस का रिवाज़ है के अपने खुद के हाथ को बौसा दें जब वो किसी को देखे या उसके हाथ को बौसा दें या अपने हाथ को अपने सीने पर रखे या झुके या अपने आपको रूकू में करें। ये **फतावा-ए-कारि-उल-हिदाया** नाम की किताब में बयान है (उमर बिन इस-हाक़ के ज़रिए लिखी गई) और **शिरात-उल-इस्लाम** नाम की किताब में (मुहम्मद बिन अबू बकर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (डी.**573** [**1178** ए.डी.] के ज़रिए लिखी गई) "उँगलियों के ज़रिए निशान बनाकर सलाम करना एक यहूदी का रिवाज़ है। और हाथ के साथ निशान बनाकर सलाम करना एक ईसाई का रिवाज़ है। एक मुसलमान को ऐसे सलाम की नकल नहीं करनी चाहिए।" मज़हर-ए-जान-ए-जानान कुददीसा सिरोह (**1111** [**1699** ए.डी.] इंडिया-**1195** [**1781**] में शहीद हुए उन्होने सिर पर हाथ रखकर या झुका कर सलाम करने के तरीके से मना किया है।

नववी-शेख अली महफ़ूज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि, जो अज़ीम आलिमों में से एक थे जमिउल अज़हर और **1361** [**1942** ए.डी.] में इंतेकाल कर गए थे उन्होने मंदरजाज़ेल अपनी किताब **अल-इबदा** में **362** वे सफहे पर बयान दिया ः "इस्लाम की तरफ़ से मुर्करर सलाम दिल में डाल दिया गया है। ये एक इंतेहाई घिनौना आम रूजहान हैं। ये एक बेमतलब तरज़े अमल है ये कहना, "सुबह बख़ैर, या हाथों के ज़रिए निशान बनाकर या सिर हिलाकर या एक मुसलमान को सलाम ना करना क्योंकि तुम उसे नहीं जानते या जब तुम घर आओ तो अपने घर वालों को सलाम ना करना मतलब सुन्नत के काम को नज़रअंदाज़ करना।" **अल-इबदा** किताब तारीफी ज़मीमें पर मुश्तमिल है शेख अबदुल्लाह दस्सूकी और शेख यूसफ दजवी दोनो जामिया-उल-अज़हर के प्रोफ़ेसर के ज़रिए लिखी गई है।

जब सरदी के दिन चले गए और मौसम-ए-बहार आता है, पहाड़ो की आँखें खुली उनके ठंडे बस्ते से।
उनके साथ गुलाब की कलियों के साथ सब कुछ कपड़े पहने हुए,
बुलबुल को अब सबर में इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा।
दिन और रात पहाड़ों का काम है तसबीह करना, ("सुबहान-अल्लाह कहना", जिसका मतलब है, "मैं अल्लाह तआला को जानता हूँ जो हर किस्म के नुक्स से परे हे।)
उनके ऊपर चिड़िया हमेशा "अल्लाह अल्लाह" कहती है।
फ़िज़ा तक बुलंद सिरों को ऊपर उठाए,
नमाज़ का किबला सारा पहाड़ों जैसा चेहरा।
इकतेदार की पैशाक इन सब के लिए काट रहा है
हक़ की हमदर्दी की बारिश उन पर गिरे।
फूलों की हर किस्म उन पर खिले,
पहाड़ गरमी के चेहरे के साथ बाग़ में तबदील हो जाएं।
उनको देखते रहो, और तुम्हें कभी तृप्ति नहीं मिलेगी,
हक़ तआला से तुम्हें तकवे की रोशनी मिलेगी।
उनकी हवा परेशानी दूर ले जाएगी,
उसकी मिट्टी मुश्क और अंबर की तरह महके।
एक पर कंवल, दूसरी पर तुलिप
उनके नाले सारे ज़िंदगी देने वाले पानी को ले जाने वाले।
मआनी में 'सब्ब हा', खुद बोलना शुरू हो जाता है।
ये पहाड़ों का कारोबार है हक़्क का हमेशा शुक्रिया अदा करना।